لا تَسُبّوا قُرَيْشاً فَإنَّ عَالِمَهَا يَمْلأُ الْاَرْضَ عِلْماً

सीरते इमाम शाफई

इमामुल अनाम निज़ामुल इस्लाम मुत्तलबी नसब आली मक़ाम

मुहम्मद बिन इदरीस अश्शाफई रहमतुल्लाह अलैह

तालीफ

हज़रतज क़िदवतुल उलमा मौलाना मुफ़्ती
अश्शैख़ सालेह बिन सालिम बाहत्ताब रहमतुल्लाह अलैहुमा

बऐहतिमाम

इमाम शाफई फाउन्डेशन मुम्बई

सिलसिलए इशाअत १३

किताब का नाम	:	**सीरते इमाम शाफई**
तालीफ	:	मुफ्ती अश्शैख़ सालेह बिन सालिम बाहत्ताब रहमतुल्लाह अलैहुमा
तक़दीम	:	मुफ्ती मुहम्मद अशरफ रज़ा सिद्दक़ी हनफी, रज़वी, क़ादरी
हिन्दी तर्जमा	:	वाजिद अली अलीमी9224185819
इशाअत अव्वल	:	१४२१ हि.
इशाअते दोम	:	१४२८ हि. २००७ ई.
हिन्दी इशाअते अव्वल	:	१४२९ हि. २००८ ई.
सफहात	:	दो सौ पचीस (२२५)
तादाद	:	एक हज़ार (१०००)
बऐहतिमाम	:	इमाम शाफई फाउन्डेशन मुम्बई

किताब मिलने के पते

☆ दफ्तर इमाम शाफई फाउन्डेशन,४/७ अमीर बाग न० २, चेम्बूर, मुम्बई-८९, ०२२.२५२९४८२७

☆ इक़रा बुक डीपो , मोहम्मद अली रोड, मुम्बई-३

☆ नाज़ बुक डीपो, दूकान न०.१, मुहम्मद अली रोड मुहम्मद अली बिल्डिंग, मुम्बई.३

☆ न्यू सिल्वर बुक ऐजेन्सी मुहम्मद अली रोड, मुहम्मद अली बिल्डिंग, मुम्बई.३

फेहरिस्ते मज़ामीन

अर्ज़े नाशिर

शाफई मसलक की तरवीज व इशाअत के लिए "इमाम शाफई फाउन्डेशन" मुम्बई का क़याम अमल में आया। अल्लाह के फज़्ल व करम से अब तक कुतुबे कोकन मख़्दूम अली माहिमी रहमतुल्लाह अलैह की शोहरये आफाक़ तफ्सीरुल कुरआन (तफ्सीरे रहमानी) के सूरये बक़रह का, उर्दू तर्जमा अहकामे शाफई (सफीनतुन्नुजा), उर्दू में और हिंदी में फैज़े शाफई (मुख़्तसर बा फज़्ल) सीरते इमाम शाफई उर्दू, ग्यारहवीं शरीफ मअ तर्जुमा को शाये कर के दादे तहसीन हासिल की है। अब इमाम शाफई जो अहले सुन्नत के उन चार अज़ीम व जलील इमामों में से एक हैं। जिन का इल्म व इजतेहाद फज़्ल व कमाल और ज़ोहद व वरअ पर इस उम्मत का इत्तेफाक़ है। उम्मते इस्लामिया का एक बहुत बड़ा तब्क़ा आप का मुक़ल्लिद है। आप ही की तरफ निस्बत करते हुये ख़ुद को शाफई कहते हैं। इमाम शाफई के फज़्ल व कमाल का अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया:

عالم قريش يملأ الارض علماً

"कुरैश का एक आलिम दुनिया को इल्म से भर देगा" असहाबे शवाफे के अलावा दिगर उलमाये किराम ने भी यही फरमाया है कि इस हदीस पाक में इमाम शाफई की तरफ इशारा है। इमाम अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाह अलैह फरमाते है। जिस शख़्स ने भी क़लम और दवात का इस्तेमाम किया है उसकी गर्दन पर इमाम शाफई का ऐहसान है। आप दूसरी सदी के मुजद्दिद हैं।

हमें मुनकिरीने आइम्मा से कलाम नहीं हमारा मक़सद तो उन हज़रात को हक़ीक़त से आशना कराना है। जो इन आइम्मा

की तक़लीद का दम भरते हैं। और अपने आप को शाफई, हनफी, मालिकी और हंबली कहते हैं। मगर अपने इमाम का नाम तक नहीं जानते गौर से देखा जाये तो हम लोग उन आइम्मये किराम पर ज़ुल्म ढा रहे हैं। उनके ऐहसान को फरामूश कर चुके हैं। यह तमाम हज़रात आबिद, ज़ाहिद, मुत्तक़ी, परहेज़गार उलूमे आख़िरत के माहिर ख़ल्के ख़ुदा की बेहतरी को समझने वाले और फिक़्ह की तरवीज में रज़ाये इलाही के तालिब थे। मगर हम ऐसे पेशवाओं के हालाते ज़िंदगी से नावाक़िफ हैं। हम ने काफी जद्द व जहद के बाद इमाम शाफई की सीरत पर लिखी हुई एक नायाब किताब जिस के मुसन्निफ हज़रत क़िदवतुल उलमा मौलाना मुफ्ती अश्शैख़ सालेह बिन सालिम बाहत्ताब रहिमहुमुल्लाह (शैख़ुल माक़ूलात जामिया निज़ामिया हैदराबाद) हैं वह हसिल की अब हम हिन्दी में आप के हाथों में है। हम ने हालाते हाज़ेरा को देखते हुए तीनों आइम्मये केराम रहहुमुल्लाह की भी मुख़्तसर तारीख़ और तक़लीद की अहमियत पर एक बेहतरीन मज़मून भी ज़मीमा के तौर पर शामिल किया है।

हम उन तामाम उलमाये किराम का शुक्र अदा करते हैं जिन्हों ने इस किताब को मंज़रे आम पर लाने में हमारी रहनुमाई फरमाई। ख़ास कर आली जनाब **अब्दुल माजिद** और उनके रूफक़ा और आली जनाब **निज़ामुद्दीन गुलाम हुसैन कोकनी** भाई नगर सेवक (नासिक) का भी शुक्रिया अदा करते हैं जिन के तआउन की बदौलत यह किताब आप तक पहुंची। मज़ीद ख़ुदा वंदे करीम से दुआ है कि वह हमारी इस नाचीज़ मेहनत को क़ुबूल फरमाये। और इस से मुसलमान भाईयों को फायदा पहुंचाये और आइंदा के कामों में मदद व नुसरत फरमाये हर मुश्किल को आसान करे।

अराकीन

इमाम शाफई फाउन्डेशन मुम्बई

नाम नेक रफ्तगाँ ज़ाय मकुन

हज़रात उलमा व औलिया की सोहबत और उन की किताबें और सैर व अहवाल हत्ताकि उन के मज़ारात भी हुसूले फैज़ व बरकात का मंबा व असबाब हैं। जो अपने बड़ों की तालीमात व इर्शादात की नश्र व इशाअत में लगा रहता है उसी क़द्र नवाज़ा जाता है और यही उन से मुहब्बत की सही दलील भी है। मुम्बई, थाने, कोकन, दक्कन, दमन , जुनूबी हिन्द के साहिली इलाक़े में लाखों की तादाद में हज़रात शवाफे अहले सुन्नत वल जमात मौजूद हैं लेकिन बड़े अफसोस से कहना पड़ता है कि लाखों इंसानों का अज़ीम मुक़तदा, मज़हबी रहनुमा, इमामुल अइम्मा सय्यदना इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के सेर व अहवाल पर किताबें आम दस्तर्स से बाहर हैं। अवाम उन्हें जानने के लिए बेक़रार है मगर किताब मौजूद नहीं है। वहाबिया गैर मुक़ल्लेदीन हमारे शाफई भाईयों को अपने दाम तज़वीर में फांसने की अनथक कोशिश कर रहे हैं। सऊदिया अरबिया, कोयत, क़तर वग़ैरह ममालिक में मुलाज़िमत के लिए जाने वाले वहाँ के नजदी मुक़ल्लेदीन से मुताअस्सिर हो कर अपने आबा व अजदाद के तरीक़ये मर्ज़िया से ना ख़ुश हैं उन पर बिदअत का बुलडोज़र चला रहे हैं। ऐसे हालात में ज़रुरत है कि सय्यदना इमाम शाफई क़ुद्दिसा सिर्रहू व उन के मुत्तबेईन उलमा औलिया के अफ्कार व नज़रियात और अहवाल व मुक़ामात को आम तर किया जाए। ख़ुदा भला करे अर्कान "इमाम शाफई फउन्डेशन" मुम्बई का कि वह "सीरते इमाम शाफई" नामी किताब शाये कर रहे हैं। अल्लाह पाक अपने महबूब बंदे इमामुल अइम्मा, सय्यदना इमामे आज़म अबू हनीफा व इमामे मालिक व इमाम शाफई व इमामे अहमद की रूहानियत के सदक़े इन की ख़िदमात को कुबूल फरमाये। अज़ाइम में बलंदी अता फरमाये।

उबैदुल मुस्तफा मुहम्मद अशरफ रज़ा सिद्दीक़ी हनफी क़ादरी, रज़वी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नसब और विलादत बा सआदत:

आप की कुन्नियत : अबू अब्दुल्लाह

इस्मे गेरामी: मुहम्मद बिन इदरीस बिन अब्बास बिन उसमान बिन शाफेअ बिन अस्साइब बिन उबैद बिन अब्दे यज़ीद बिन हाशिम बिन मुत्तलिब बिन अब्दे मुनाफ।

आप कुरैशी मुत्तलबी हैं आप के अजदाद में हज़रत शाफे रज़ि अल्लाहु अन्हू ने जब कि वह नौजवान थे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुलाक़ात का शर्फ पाया है। और उन के वालिद हज़रत साइब रज़ि अल्लाहु अन्हू ने जंगे बदर के मौक़े पर इस्लाम कुबूल फरमाया।

विलादत बा सआदत:

मोअर्रेख़ीन और उलमाये सीरत ने फरमाया है कि इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह की विलादत बा सआदत १५० हिजरी गज़ा में हुई (गज़ा फिलिस्तीन का एक शहर है) आप जब दो साल के थे तो मक्का मुकर्रमा लाये गये और यह भी कहा गया कि आप की विलादत शहर अस्क़ान में हुई और बाज़ के नज़दीक शहर यमन में हुई और उस सन में हुई जिस में इमाम अबू हनीफा रहमतुल्लाह अलैह ने इंतिक़ाल फरमाया। और बाज़ ने फरमाया कि आप की विलादत इस दिन हुई जिस दिन इमाम अबू हनीफा रहमतुल्लाह अलैह का इंतिक़ाल हुआ। आप दो साल के थे कि वालिदे मुहतरम का इन्तिक़ाल हो गया।

मुहम्मद बिन हकीम ने कहा कि इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह की वालिदये मुहतरमा को जब हमल क़रार पाया तो उन्होंने एक ख़्वाब देखा कि गोया सितारये मुश्तरी आप के बतन से निकला और पारा पारा हुआ और उसका एक एक टुकड़ा एक एक शहर में

गिरा मुअब्बि(ख्वाब की ताबीर बताने वाला)ने ताबीर दी कि आप के बतने मुबारक से एक अज़ीम आलिम पैदा होगा जिस का इल्म दुनिया के किनारों तक फैल जायेगा।

आप के बचपन के सच्चे ख़्वाब, जिस से आप की उलुवे शान ज़ाहिर होती है:

१. इमामे शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया कि मैंने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़्वाब में देखा। आप ने मुझ से फरमाया कि तुम मुझ से क़रीब हो जाओ और मैं आप से क़रीब हो गया तो आप ने अपना लोआब मुबारक लिया और मैंने अपना मुंह खोला आप ने उस को मेरी ज़बान और मेरे मुंह और मेरे होंटों पर फेर दिया और फरमाया जाओ अल्लाह तुम को बरकत दे।

२. आप ने फरमाया कि मैंने अपने बचपन में एक मर्तबा नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अज़मत व जलाल की हालत में मक्का मुकर्रमा में देखा कि आप मस्जिदे हराम में इमामत फरमा रहे हैं आप नमाज़ से फारिग हो कर लोगों को तालीम देने लगे तो मैं आप से क़रीब हो गया और अर्ज़ किया मुझे भी आप तालीम फरमायें तो आप ने अपनी आस्तीन से एक मीज़ान (तराज़ू) निकाल कर मुझे अता फरमाया और फरमाया कि यह तुम्हारे लिए अतिया है। इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया कि मैंने वहाँ एक मोअब्बिर को अपना ख़्वाब सुनाया तो उसने कहा तुम इल्म में इमाम बनोगे और सुन्नत पर क़ायम रहोगे मस्जिदे हराम के इमाम तमाम अइम्मा से अफज़ल है और मीज़ान का मतलब यह है कि तुम हर चीज़ की हक़ीक़त से बा ख़बर हो जाओगे।

हुसेले इल्म:

ज़िक्र किये हैं कि आप इब्तिदा में तंगदस्त थे जब आप को

उस्ताज़ के हवाले किये तो उस्ताज़ के लिए फीस भी उन के पास नहीं थी। मुअल्लिम ने आप की तालीम की तरफ तवज्जुह नहीं फरमाई तो आप यह करते कि उस्ताज़ जब कभी किसी बच्चे को कोई चीज़ सीखाते तो आप उस बात को अपने से सीख लेते थे। और उस्ताज़ जब अपनी जगह से उठ जाते तो आप वह तमाम चीज़ें उन बच्चों को सिखाते थे मुअल्लिम ने गौर किया और देखा कि इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह उस के लिए बच्चों के मुआमला में उस उजरत से बढ़ कर मुफीद हैं जिस की उस ने आप से उम्मीद रखी थी। फिर मुअल्लिम ने उजरत का मुतालबा तर्क कर दिया। इमामे शाफई रहमतुल्ला अलैह का मआमला इसी तरह चलता रहा। यहाँ तक कि ९ साल की उम्र में कुरआन मजीद सीख लिया आप फरमाते हैं कि मैं मस्जिद में दाख़िल हो कर उलमा के पास बैठने और हदीस शरीफ और मसाइल याद करने लगा। और हमारा मकान शअब ख़ैफ (काबतुल्लाह से क़रीब) में था और मैं इस क़द्र तंगदस्त था कि कागज़ ख़रीद नहीं सकता था। हड्डी ले कर उस पर लिख लिया करता था। इब्तिदा में मुस्लिम बिन ख़ालिद रहमतुल्लाह अलैह के पास फिक़्ह हासिल किया और इसी असना में आप को ख़बर मिली कि मालिक बिन अनस रहमतुल्लाह अलैह इमामुल मुस्लेमीन और उसके आक़ा हैं तो आप फरमाते हैं कि मेरे दिल में यह बात आई कि उन के पास पहुंचूँ किताब मुअत्ता शरीफ को मक्का मुकर्रमा में एक आदमी से मुस्तआर हासिल कर के उसको याद कर लिया फिर वालिये मक्का मुकर्रमा के पास जा कर मदीना मनव्वरा के वाली के नाम एक (सिफार्शी) ख़त हासिल किया और उसको वालिये मदीना मुनव्वरा के पास पहुंचाया तो उसने कहा ऐ नौजवान अगर तुम मुझ को मदीना मुनव्वरा के दरमियान से मक्का मुकर्रमा के दरमियान तक पैदल नंगे पांव चलने की

तकलीफ दो तो यह मुझ पर आसान है उसके मुक़ाबले में कि इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह के दरवाज़े तक चलूँ। तो आप ने फरमाया अगर आप चाहें तो उनको ही तशरीफ लाने के लिए फरमायें तो वालिये मदीना ने फरमाया यह तो हो नहीं सकेगा काश इतना ही हो जायें कि जब मैं सवार हो कर आप के पास पहुंचूं और दरवाज़े पर देर तक खड़ा रहूँ तो दरवाज़ा खोला जाये फिर वह सवार हो गये। और हम उन के साथ इमामे मालिक रहमतुल्लाह अलैह के पास पहुंचे। खादिम आगे बढ़ कर दरवाज़ा खटखटाया तो एक सयाह फाम बांदी आई। तो उस से अमीर ने कहा आपने मालिक से कहना कि मैं दरवाज़ा पर खड़ा हूँ। बांदी अंदर गई और देर कर के आई और कही कि आक़ा का कहना है कि अगर कोई मसअला हो तो एक कागज़ पर लिख कर दे दो तुम को जवाब मिल जायेगा और अगर आने की कोई दूसरी गर्ज़ है तो तुम को मालूम है कि उसके लिए जुमेरात का दिन है लिहाज़ा चले जाओ तो अमीर ने कहा मेरे साथ वालिये मक्का मुकर्रमा का एक अहम मामले में ख़त है। तो वह बांदी अंदर गई और अपने हाथ से एक कुर्सी लाई और रख दी पस इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह अज़मत व जलाल के साथ तशरीफ लाये और आप दराज़ क़ामत थे और शाया ज़ेब तन किये हुये थे। फिर वालिये मदीना मुनव्वरा ने वह ख़त आप के हवाले फरमाया आप उसको पढ़ते हुये जब इस इबारत पर पहुंचे:

ان محمد بن ادریس رجل من امره كذا و كذا

"इन्ना मुहम्मद बिन इदरीस रजलुन मिन अमरिही कज़ा व कज़ा'' कि मुहम्मद बिन इदरीस से मुतअल्लिक़ यह मामला है(यह दरख़्वास्त है) तो आप ने इस ख़त को फेंक दिया और फरमाया सुबहानल्लाह! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इल्म का

मामला यहाँ तक पहुंच गया कि ख़तूत के ज़रिये दरख़्वास्त की जाती है। इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं मैं ख़ुद आप के सामने आया और अर्ज़ किया 'अस्लहकल्लाह' मैं मुत्तलबी ख़ानदान से हूँ और यह मेरे हालात हैं। आप ने जब मेरी गुफ्तगू समाअत फरमाई तो मुझ पर कुछ देर के लिए नज़र डाली। हज़रत इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह को बड़ी फेरासत हासिल थी आप ने मुझ से फरमाया तुम्हारा नाम क्या है मैंने अर्ज़ किया मेरा नाम मुहम्मद है तो आप ने फरमाया ऐ मुहम्मद तुम मआसी से बचो तुम्हारी बड़ी शान होगी तो मैंने अर्ज़ किया अल्लाह का फज़्ल व ऐहसान है।

और आप ने फरमाया अल्लाह पाक ने तुम्हारे क़ल्ब पर नूर का इल्क़ा फरमाया है तुम उसको मासीयत के ज़रिये मत बुझाओ और तुम कल ऐसे आदमी को लेकर आओ जो तुम्हारे लिए मोअत्ता पढ़ कर सुनाये तो मैंने अर्ज़ किया मैं उसको ज़बानी (हिफ्ज़) पढ़ सकता हूँ। दूसरे दिन आप के पास पहुंच कर पढ़ना शुरू कर दिया और आप को उकताहट के ख़ौफ से मैंने जब भी पढ़ना बंद करना चाहा तो आप को मेरा पढ़ना तअज्जुब में डालता आप फरमाते ऐ नौजवान और पढ़ो यहाँ तक कि मैंने थोड़े ही दिन में उसको ख़त्म कर लिया।

इमामे शाफई रहमतुल्लाह अलैह जब भी इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह के किसी क़ौल को बयान फरमाते तो यूँ फरमाते क़ौलो उसताज़ना मालिकिन (हामरे उसताज़ इमाम मालिक का इर्शाद है)।

अब्दुल्लाह बिन अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाह अलैहोमा ने कहा मैंने अपने वालिद से अर्ज़ किया शाफई रहमतुल्लाह अलैह कौन हैं आप कसरत से उनके लिए दुआ फरमाते हैं। तो आप फरमाया ऐ प्यारे बेटे शाफई रहमतुल्लाह अलैह दिन के लिए सूरज

और लोगों के लिए आफियत की तरह हैं। बताओ क्या इन दो चीज़ों का कोई जानेशीन या बदल हो सकता है।

अब्दुल्लाह के भाई सालेह बिन अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया कि मेरे वालिद बीमार थे एक दिन हज़रत इमामे शाफई रहमतुल्लाह अलैह मेरे वालिद की अआदत के लिए तशरीफ लाये तो मेरे वालिद ने आप की तरफ झपट कर आप के दोनों आँखों के दरमियान (पेशानी) का बोसा लिया फिर आप को अपनी जगह बैठाया और खुद आप के सामने बैठ गये और कुछ देर तक गुफ्तगू फरमाते रहे जब इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह उठे और सवार हुये तो मेरे वालिद आप का रेकाब थामे हुये साथ चले जब यहिया बिन मोईन को यह बात मालूम हुई तो तअज्जुब से (सुबहानल्लाह) फरमाया कि आप ने इस तरह क्यों किया तो वालिद ने फरमाया ऐ अबू ज़करिया (कुन्नियत इब्ने मोइन) अगर तुम दूसरी तरफ से चलते तो तुम भी उन से फायदा उठा लेते जो कोई फिक़्ह का तालिब है उसको चाहिये कि उस खच्चर की दुम को सूंघे जिस पर आप सवारी किये हैं।

इमाम अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया कि इमामे शाफई रहमतुल्लाह अलैह के दौर में आप से बढ़ कर इस्लाम पर किसी का ऐहसान हो मैंने किसी को नहीं पाया। और मैं नमाज़ों के बाद आप के लिए दुआ करता हूँ।

اللهم اغفر لی ولوالدی و لمحمد بن ادریس الشافعی

हज़रत इमामे शाफई रहमतुल्लाह अलैह के भांजे अबू मुहम्मद अपनी वालिदा से रिवायत करते हैं। मेरी वालिदा (इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह की बहन) ने बयान किया है कि बाज़ मर्तबा हम ने एक रात में तीस मर्तबा या उससे कम ज़्यादा इमामे शाफई रहमतुल्लाह अलैह के सामने चराग पेश किया आप लेटे हुये गौर व

फिक्र करते रहते थे। फिर आवाज़ देते :

يا جاريه هلمى المصباح

"या जारियह हलुम्मल मिस्बाह" ऐ बंदी चराग ले कर आ। पस वह चराग पेश करती थीं और आप जो लिखना होता लिख देते। फिर फरमाते अरफअहू चराग उठा लो। अबू मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैह से दरयाफ्त किया गया कि आप चराग क्यों हटा देते थे तो फरमाया तारीकी क़ल्ब को जिला बख़्शती है।

इमामे शाफई रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं गुफ्तगू के लिए ख़ामूशी के ज़रिये और मसाइल के इस्तिंबात के ज़रिये मदद लो और फरमाते कि जिस ने अपने भाई को पोशीदा तौर पर नसीहत की तो वह उसकी ख़ैर ख़्वाही किया और जो ऐलानिया नसीहत किया तो उसको रुसवा किया और उसके साथ खेयानत किया।

हमीदी ने फरमाया है कि इमामे शाफई रहमतुल्लाह अलैह मुक़ामे 'सनआ' से मक्का मुकर्रमा को रूमाल में दस हज़ार (सिक्के) ले कर तशरीफ लाये और मक्का मुकर्रमा से बाहर अपना डेरा लगाया लोग आते गये (और लेते गये) थोड़ी ही देर में तमाम सिक्के ख़त्म हो गया। फिर मक्का मुकर्रमा में दाख़िल हुये।

मज़नी फरमाते हैं कि मैं ने इमामे शाफई रहमतुल्लाह अलैह से ज़्यादा सख़ी नहीं देखा। ईद की शब आप के साथ एक मसअले में गुफ्तगू करते हुये मस्जिद से निकला यहाँ तक कि आप के दरवाज़े पर पहुंचा तो एक गुलाम एक थैली ले कर आया और अर्ज़ किया कि मेरे आक़ा ने आप को सलाम अर्ज़ किया है और कहा कि आप यह थैली ले लें आप ने उससे थैली को ले लिया उसी वक़्त आप के पास एक आदमी आया और अर्ज़ किया ऐ अबू अब्दुल्लाह (आप की कुन्नियत है) मेरी बीवी की इस वक़्त ज़चगी हुई है और मेरे पास कुछ नहीं है तो आप ने वह थैली उसको दे दी और घर

में इस हाल में चढ़े कि आप के साथ कुछ नहीं था।

इमामे शाफई रहमतुल्लाह अलैह का तलबे इल्म के लिए सफर:

साहबे तर्जुमानुल अदब ने किताबुल मुस्तरब के हाशिया पर मोतबर शख़्स से नक़ल किया है कि रबीअ बिन सुलेमान ने कहा है कि मैं इमामे शाफई रहमतुल्लाह अलैह को फरमाते हुये सुना हूँ कि मैं ने मक्का को १४ साल की उम्र में छोड़ा जबकि मेरे चेहरे पर मुंछ भी नहीं आई थी मुक़ामे अबतह से ज़ितवा के लिए निकला मेरे जिस्म पर दो यमनी चादरें थीं। मैंने जिस क़ाफिले को भी देखा उनको सलाम किया। पस वह मुझे सलाम का जवाब देते उन में का एक बड़ा बूढ़ा मेरी तरफ झपट कर आया और कहा मैं तुझ से अल्लाह का वास्ता दे कर यह सवाल करता हूँ कि क्या आप हमारे खाने में शिरकत नहीं फरमायेंगे आप फरमाते हैं कि मैं यह मालूम किये बगैर कि वह खाना लाये हैं बिला तकल्लुफ फौरन उसको कुबूल किया। मैंने लोगों को देखा कि पाँच उंगलियों से खाना लेते हैं और हथेली से ढकेलते हैं मैंने भी उनकी तरह लिया ताकि मेरा खाना उनको बुरा न लगे। बूढ़ा मुझे देख रहा था। फिर मैंने मशकीज़ा ले कर पिया और अल्लाह की हमद व सना किया। उस बूढ़े ने मेरी तरफ मतवज्जह हो कर कहा क्या तुम मक्की हो मैंने जवाब दिया हाँ मक्की हूँ फिर उस बूढ़े ने कहा क्या तुम क़ुरेशी हो मैंने अर्ज़ किया हाँ मैं क़ुरेशी हूँ। फिर मैंने उस से मुतवज्जह हो कर दरयाफ्त किया ऐ चचा तुम ने यह किस तरह पहचाना। तो उसने कहा शान व शौकत तो लिबास के ज़रिये और नसब को खाने का तरीक़ा देख कर। इस लिए कि जो शख़्स चाहता है कि लोगों का खाना खाये तो वह यह भी चाहेगा कि लोग उसका खाना खायें और ख़ास तौर पर यह सिफ्त क़ुरेश में पाई जाती है। आप

फरमाते हैं कि मैंने शैख़ से अर्ज़ किया कि तुम कहाँ के रहने वाले हो तो उस ने जवाब दिया मैं मदीनतुर्रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हूँ उस से दरयाफ्त किया कि मदीना मुनव्वरा में आलिम कौन हैं अल्लाह की किताब के नुसूस से वाक़िफ (मुफस्सिर) और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अहादीस से फतवा देने वाले कौन हैं तो उस ने जवाब दिया मालिक बिन अनस रज़ि अल्लाहु अन्हू हैं। इमामे शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने कहा मैंने इमामे मालिक रहमतुल्लाह अलैह की तरफ अपने शौक़ को ज़ाहिर किया :

واشوقاه الى مالك

व अशूक़ाहू इला मालिक फिर वह मुझ से कहने लगा अल्लाह तआला तुम्हारे शौक़ में इज़ाफा करे और आप इस ख़ाकिस्तरी ऊँट को देखें यह हमारे तमाम ऊँटों में बेहतर है। और हम अब चल रहे हैं और तुम्हारे लिये अच्छी सेहत भी रहेगी यहाँ तक कि तुम इमामे मालिक रहमतुल्लाह अलैह के पास पहुंच जाओ। पस थोड़ी ही देर में वह ऊँटों को एक दूसरे के पीछे कराये और मुझे ख़ाकिस्तरी ऊँट पर सवार किये और सब लोग सफर शुरू किये और मैं सबक़ शुरू किया मक्का मुकर्रमा से मदीना मुनव्वरा पहुंचने तक सोलह दौर ख़त्म किया दिन में एक दौर और रात में एक दौर और आठवें दीन बाद नमाज़े अस्र मदीना मुनव्वरा में दाख़िल हुआ। मस्जिदे नबवी में पहुंच कर नमाज़े अस्र अदा किया और क़ब्र शरीफ से क़रीब हो कर नबीये अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सलाम अर्ज़ की और आप की क़ब्र शरीफ से चिमट गया। फिर मैंने हज़रत इमामे मालिक रहमतुल्लाह अलैह को देखा वह एक चादर तहबंद बाँधे हुये और एक चादर ओढ़े हुये थे और फरमा रहे थे

حدثنى نافع عن ابن عمر عن صاحب هذا القبر

और अपने दस्ते मुबारक से सरकार दोआलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र शरीफ की तरफ इशारा फरमाते थे। मैंने इस कैफियत को देखा तो बहुत हैबत ज़दा हुआ और मजलिस के आख़िर में जहाँ जगह मिली बैठ गया और ज़मीन से एक लकड़ी की काड़ी ले लिया और इमामे मालिक रहमतुल्लाह अलैह जब कभी कोई हदीस लिखाते तो मैं अपने थूक से हाथ पर लिखता जाता था। इमामे मालिक रहमतुल्लाह अलैह मुझे इस तरह से देखा रहे थे कि मुझे मालूम न हो सके। यहाँ तक कि मजलिस बरखास्त हो गई और आप मेरे चले जाने का इन्तेज़ार करते रहे जब देखते रहे कि मैं जा नहीं रहा हूँ तो मेरी तरफ इशारा फरमाया और मैं आप के क़रीब पहुंचा आप मुझे कुछ देर तक देखे फिर फरमाया क्या तुम हरम शरीफ के रहने वाले हो मैंने अर्ज़ किया हाँ मैं हरमी हूँ फिर फरमाया क्या मक्का मुकर्रमा के हो मैंने जवाब दिया हाँ मैं मक्की हूँ फिर फरमाया क्या कुरेशी हो मैंने अर्ज़ किया हाँ मैं कुरेशी हूँ। तो आप ने फरमाया कि तुम्हारे सारे औसाफ अच्छे हैं मगर यह कि तुम में कुछ बे अदबी मालूम होती है क्योंकि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अहादीसे शरीफा लिखा रहा था और तुम को देखा कि तुम थूक अपने हाथ पर लगा कर खेल रहे थे। तो मैंने अर्ज़ किया मेरे पास कागज़ नहीं था आप जो कुछ फरमा रहे थे मैं उसको लिख रहा था। आप ने मेरे हाथ को खींचा और फरमाया इस में तो कोई चीज़ नहीं है। तो मैंने अर्ज़ किया थूक हाथ पर क़ायम नहीं रहता लेकिन आप तशरीफ फरमाने के बाद से जो कुछ बयान फरमाया उसको मैं समझा और अब तक की तमाम बातें याद कर लिया हूँ। इमामे मालिक रहमतुल्लाह अलैह को इस से ताअज्जुब हुआ और फरमाया अच्छा एक ही हदीस सही मुझे सुनाओ तो इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह फरमाया मैं सुनाने

लगा:

حدثنا مالك عن نافع عن ابن عمر عن صاحب هذا القبر

और अपने हाथ से उसी तरह इशारा किया जैसा कि आप ने इशारा फरमाया था यहाँ तक कि २५ अहादीस शरीफा जो आप ने मजलिस शुरू होने से ख़त्म होने तक बयान फरमाई थी सब सुना दिया और सूरज डूब गया। पस आप ने मग्रिब की नमाज़ पढ़ी।

और अपने गुलाम की तरफ मुतवज्जह हो कर फरमाया:

خذبيد سيدك اليك

"खुज़ बियदि सय्यदिका इलैका" अपने आक़ा का हाथ पकड़ कर चलो और मुझ से अपने साथ चलने के लिए फरमाया इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि मैं आप की बुज़ुर्गी की वजह से इनकार किये बग़ैर आप की दावत कुबूल कर के उठा और जब मैं आप के घर पर पहुंचा तो आप का गुलाम मुझे घर के एक हिस्से में पहुंचाया और बताया कि क़िब्ला इस तरफ है और यह पानी का बर्तन है और यह बैतुलखला है आप फरमाते हैं कि थोड़ी देर में इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह तशरीफ लाये और गुलाम तबक़ उठाया हुआ था और उसको नीचे रखा और इमामे मालिक रहमतुल्लाह अलैह ने मुझे सलाम किया और गुलाम से फरमाया कि हमें हाथ धुलाये गुलाम फौरन बर्तन ले कर मेरा हाथ धुलाना चाहा तो आप ने आवाज़ दी खाने से पेशतर घर वाला अपना हाथ पहले धोये और खाने के आख़िर में मेहमान पहले धोयेगा इमामे शाफई रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि आप की यह बात मुझे अच्छी मालूम हुई और उसकी वज़ाहत के लिए दरख़्वास्त की तो आप ने फरमाया कि जब कोई लोगों को अपना मेहमान बनाता है तो चाहिये कि वह पहले अपना हाथ धोये। और खाने के आख़िर में दीगर आने वालों के लिए इन्तेज़ार करे ताकि उन के साथ भी खाये

आप फरमाते हैं कि इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह ने तबक खोला तो उस में दो बर्तन थे एक में दूध और एक में खजूर आप ने अल्लाह का नाम लिया और मैंने भी अल्लाह का नाम लिया हम दोनों पूरा खाना खा लिये।

इमामे मालिक रहमतुल्लाह अलैह ने यह महसूस किया कि हम पेट भर खाना नहीं खाये आप ने फरमाया ऐ अबू अब्दुल्लाह यह एक तंग दस्त की तरफ से एक तंग दस्त के लिए हक़ीर ख़िदमत है तो मैं ने अर्ज़ किया ऐहसान करने वाले के लिए उज़्र नहीं होता। उज़्र तो उस आदमी के लिए है जो बुराई करता है आप फरमाते हैं कि इमामे मालिक रहमतुल्लाह अलैह मुझ से अहले मक्का मुकर्रमा के बारे में दरयाफ्त करने लगे यहाँ तक कि इशा का वक़्त क़रीब हो गया। फिर आप उठ गये और फरमाया कि मुसाफिर के लिए हुक्म है कि वह लेट जाये और अपनी थकन दूर करे और मैं रात में लेट गया और जब रात का आख़िरी तिहाई हिस्सा आया तो आप ने मेरा दरवाज़ा खटखटाया और फरमाया :

الصلاة يرحمك الله

'अस्सलातु यरहमुकल्लाह' मैंने आप को देखा कि पानी का लोटा उठाये हुये हैं। आप का पानी उठा कर लाना मेरे लिए तकलीफ देह था आप ने फरमाया तुम जो कुछ भी देखे हो उससे मुतफक्किर न हो मेहमान की ख़िदमत तो मज़दूरी है इमामे शाफई रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि मैं ने नमाज की तैयारी किया और इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद में फज्र की नमाज़ अदा किया जबकि लोग तारीकी की वजह से एक दूसरे को पहचान नहीं सकते थे और हम में हर एक तस्बीह पढ़ते हुये अपनी जगह बैठा यहाँ तक कि पहाड़ियों की चोटीयों पर सूरज तुलू हुआ। इमामे

मालिक रहमतुल्लाह अलैह अपनी कल की जगह तशरीफ फरमा हुये और मुझे किताब "मुअत्ता" दिये कि मैं उसको पढ़ कर सुनाऊँ और लोग उसको लिखते जायें। आप रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि मैंने उसको अव्वल से आख़िर तक याद कर लिया था आप के पास मैं आठ महीने मेहमान रहा और हमारा आपस में सुलूक इस तरह रहा कि कोई भी वाक़िफ नहीं हो सका कि हम में कौन मेहमान हैं।

फिर चंद मिस्री लोग इमामे मालिक रहमतुल्लाह अलैह के पास हज से फारिग हो कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ेयारत और किताब "मुअत्ता शरीफ" सुनने की गर्ज़ से हाज़िर हुये इमामे शाफई रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं मैंने उनको मुअत्ता ज़बानी लिखा दिया इस मिस्री वफद में अब्दुल्लाह बिन हेकम रहमतुल्लाह अलैह और इब्ने क़ासिम रहमतुल्लाह अलैह भी थे रबी रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि मेरा ख़्याल है कि आप ने लैस बिन साद का भी ज़िक्र फरमाया फिर उसके बाद इराक़ी लोग भी नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़्यारत के लिए हाज़िर हुये। आप फरमाते हैं कि मैंने क़ब्र शरीफ और मस्जिद मुबारक के दरमियान एक ख़ूबसूरत साफ सुथरे कपड़े पहने हुये और नमाज़ अच्छी तरह अदा करते हुये एक नौजवान को देखा और उस में ख़ैर की निशानी महसूस की और उसका नाम दरयाफ्त किया तो उस ने मुझे नाम बताया और शहर पूछा तो उस ने कहा इराक है फिर मैंने उस से कहा इराक़ का कौनसा हिस्सा है तो कहा कूफा तो मैंने उस से दरयाफ्त किया कि कूफा में आलिम कौन है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अहादीस शरीफ से फतवा देने वाले और अल्लाह की किताब के मुफस्सिर कौन हैं तो उस ने बताया कि अबू यूसुफ रहमतुल्लाह अलैह और मुहम्मद बिन

हसन रहमतुल्लाह अलैह हैं जो इमामे अबू हनीफा रहमतुल्लाह अलैह के दो शागिर्द हैं तो फिर उस से दरयाफ्त किया कि तुम्हारा सफर का इरादा कब है तो उसने कहा कल सुबह फज्र के वक़्त तो मैं इमामे मालिक रहमतुल्लाह अलैह के पास गया और आप से कहा मैं मक्का मुकर्रमा से बूढ़ी से इजाज़त लिए बगैर तलबे इल्म में निकल आया था क्या मैं उनके पास वापस जाऊँ या तलबे इल्म में सफर करूँ तो आप ने फरमाया इल्म एक ऐसा फायदा है जिस से कई फायदे हासिल होते हैं क्या तुम्हें मालूम नहीं कि फरिश्ते तालिबे इल्म के लिए उस से खुश हो कर अपने पर बिछाते हैं इमामे शाफई रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं पस मैंने सफर का इरादा किया इमामे मालिक रहमतुल्लाह अलैह मेरे लिए तोशा तैयार किये और सहर का वक़्त हुआ तो मेरे साथ बक़ीअ तक चलते रहे फिर बलंद आवाज़ में फरमाया कूफा जाने के लिए अपनी सवारी किराया से देने वाला कौन है। मैंने आप की तरफ मुतवज्जह हो कर अर्ज़ किया हम किराया किस तरह देंगे कोई चीज़ आप के पास है न मेरे पास तो आप ने फरमाया रात को इशा की नमाज़ पढ़ कर में लौटा तो किसी ने दरवाज़ा खटखटाया में जब बाहर निकला तो इब्ने क़ासिम को पाया और उस ने मुझ से अपना हदिया कुबूल करने की दरख्वास्त की और एक थैली पेश की मैंने उसको कुबूल कर लिया जिस में एक सौ दीनार थे मैं उस में से आधे आपने घर वालों के लिए रख कर आधा तुम्हारे लिए लाया हूँ। फिर आप ने चार दीनार में मेरे लिए सवारी किराये से ली और बाक़ी दीनार मेरे हवाले किये और मुझे रुख्सत कर के तशरीफ ले गये और मैं हाजियों के क़ाफिले में चलता रहा यहाँ तक कि मदीना मुनव्वरा से निकलने के चौबिसवें दिन कूफा को पहुंचा अस्र की नमाज़ के बाद मस्जिद में दाख़िल हुआ इस असना में एक लड़के को देखा जिस ने

मस्जिद में आ कर अस्र की नमाज़ अदा की मगर वह नमाज़ को ठीक नहीं पढ़ा तो मैंने उसको नसीहत की और कहा कि नमाज़ को ठीक करो ताकि अल्लाह इस ख़ूबसूरत चेहरे को दोज़ख़ के अज़ाब से महफूज़ रखे तो उस लड़के ने मुझ से कहा तुम हिजाज़ी मालूम होते हो क्योंकि तुम मे सख़्ती है और अहले इराक़ के जैसी नर्मी नहीं है मैं यह नमाज़ पंद्रह साल से हज़रत मुहम्मद बिन हसन रहमतुल्लाह अलैह और हज़रत अबू युसूफ रहमतुल्लाह अलैह की मौजूदगी में पढ़ रहा हूँ उन दोनों ने मेरी नमाज़ पर कभी अैब नहीं लगाया फिर वह अपनी चादर अपने चेहरे पर झिटकते हुये निकल गया। इत्तेफाक़ से उसकी मुलाक़ात हज़रत मुहम्मद बिन हसन रहमतुल्लाह अलैह और हज़रत अबू युसूफ रहमतुल्लाह अलैह से मस्जिद के दरवाज़े पर हुई तो उसने कहा क्या आप दोनों हज़रात ने मेरी नमाज़ में कोई अैब देखा है उन दोनों ने फरमाया नहीं। तो उस लड़के ने कहा हमारी इस मस्जिद में एक साहब हैं जो मेरी नमाज़ पर अैब लगाये हैं। तो आप दोनों ने फरमाया कि तुम उनके पास जाओ और उन से कहो तुम नमाज़ किस चीज़ से शुरू करते हो। इमामे शाफई रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं वह लड़का मेरे पास आया तो मैंने उससे कहा दो फर्ज़ और एक सुन्नत से (नमाज में दाख़िल होता हूँ) फिर वह उन दोनों के पास गये और उनको मेरे जवाब बता दिया वह दोनों समझ गयो कि यह एक ऐसे आदमी का जवाब है जिस को इल्म में नज़र हासिल है फिर उन दोनों ने कहा उन के पास जा कर कहो दो फर्ज़ और एक सुन्नत कौनसे हैं तो मैंने कहा दो फर्ज़, एक निय्यत, दूसरा तकबीरे तहरीमा और एक सुन्नत रफये यदैन है फिर उसने उन दोनों के पास वापस जा कर उन को मेरा जवाब बताया। वह दोनों मस्जिद में दाख़िल हुये और मेरी तरफ देखे और मेरा ख़्याल है कि उन

दोनों ने मुझे कम नज़र से देखा और एक जानिब तशरीफ फरमा हुये और उस लड़के से फरमाया कि उन के पास जा कर उन से कहो कि उन दो हज़रात शैख़ैन को वह जवाब दें इमामे शाफई रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं वह जब मेरे पास आया तो मैं समझ गया मुझ से किसी चीज़ के बारे में पूछा जायेगा। तो मैंने कहा इल्म का हुक्म यह है कि उसके पास खुद आना चाहिये मेरी तो उन दोनों से कोई ज़रूरत नहीं है। इमामे शाफई रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि वह दोनों अपनी जगह पर से उठ कर मेरे पास आये और सलाम किया। मैं उठा और इज़हारे ख़ुशनूदी किया और दोनों के सामने बैठ गया।

इमाम मुहम्मद बिन हसन रहमतुल्लाह अलैह के चंद सवालात:

इमाम मुहम्मद बिन हसन रहमतुल्लाह अलैह मेरी तरफ मुतवज्जह हुये और चंद सवालात किये।

सवाल: फरमाया क्या तुम हरम शरीफ के रहने वाले हो?

जवाब: मैंने कहा हाँ।

सवाल: क्या तुम अरबी हो या मौला (गुलाम) हो?

जवाब: मैंने बताया मैं अरबी हूँ।

सवाल: अरब के किस ख़ानदान से हो?

जवाब: मैंने उनको बताया कि मुत्तलबी ख़ानदान से हूँ।

सवाल: आप ने फरमाया किस की औलाद से हो?

जवाब: तो मैंने अर्ज़ किया इमाम शाफे रज़ि अल्लाहु अन्हू की औलाद से हूँ।

सवाल: आप ने फरमाया क्या इमामे मालिक रहमतुल्लाह अलैह को देखे हो?

जवाब: मैंने अर्ज़ किया मैं उन्हीं के पास से आ रहा हूँ।

सवाल: तो आप ने फरमाया क्या तुम को ‘‘मुअत्ता शरीफ’’ मैं नज़र है?

जवाब: मैंने अर्ज़ किया कि मैं उसको ज़बानी याद कर लिया हूँ।

तो आप को यह बात बड़ी मालूम हुई और दवात व कागज़ मंगवाये और उस पर एक मसअला तहारत का और एक मसअला ज़कात का और किताबुल बुयू, फराइज़, रहन, हज, ईला और फिक़्ह के हर बाब का एक एक मसअला लिखा और हर दो मसअलों के दरमियान जगह ख़ाली रख दी और मेरे सामने मेज़ पर रख दिया और फरमाया इन तमाम मसाइल का मुअत्ता शरीफ से जवाब लिखो। इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि मैंने किताबुल्लाह और सुन्नते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और इजमाये उम्मत से तमाम मसाइल में जवाब लिख कर आप के हवाले कर दिया आप ने उसको देख कर गौर फरमाया फिर अपने गुलाम से फरमाया :

خذ بيدك سيدك اليك

‘ख़ुज़ बियदी सय्यदिका इलैका’ अपने आक़ा का हाथ पकड़ कर ले चलो फिर मुझ से चलने के लिए फरमाया मैं इनकार किये बगैर उठा दरवाज़ा तक चला तो गुलाम ने कहा कि आक़ा ने मुझे हुक्म दिया है कि आप घर तक सवार हो कर चलेंगे। तो मैंने कहा अच्छा लाओ तो उस ने मेरे सामने आरास्ता ज़ीन के साथ एक ख़च्चर पेश किया जब मैं उस की पुश्त पर बैठ गया तो अपने आप को हलके कपड़ों में महसूस किया और वह कूफा की गलियों में मुझ को फिराते हुये हज़रत मुहम्मद बिन हसन रहमतुल्लाह अलैह के घर तक पहुंचाया और मैं देखा कि दरवाज़े और दहलीज़ सब पर सोने और चाँदी का नक़्श किया हुआ है तो अहले हेजाज़ की

तंगदस्ती और मईशत को याद कर के रोया और कहा इराक़ वाले अपने छतों को सोने और चाँदी का नक़्श करते हैं और अहले हेजाज़ तो गोश्त के ख़ुश्क टुकड़े खाते और गुठलियों को चूसते हैं फिर हज़रत मुहम्मद बिन हसन रहमतुल्लाह अलैह मेरी तरफ मुतवज्जह हुये मैं रो रहा था फरमाया तुम फिक्रमंद न हो ऐ अबू अब्दुल्लाह तुम ने जो कुछ देखा है यह मेरी हलाल की कमाई है और अल्लाह मुझ से इस माल में फर्ज़ (ज़कात) का मुतालबा नहीं करेगा। क्योंकि मैं हर साल इसकी ज़कात निकालता हूँ दोस्त को इस से खुश करता हूँ दुश्मन को ना खुश करता हूँ।

इमामे शाफई रहमतुल्लाह फरमाते हैं कि फिर आप ने मुझे एक हज़ार दिरहम का क़ीमती ख़िलअत पहनाया फिर अपने ज़ख़ीरों में से किताब 'अल औसत' जो हज़रत इमामे अबू हनीफा रहमतुल्लाह अलैह की तालीफ है ला कर मुझे दिया मैंने किताब के अव्वल व आख़िर में देखा फिर उसी रात मैं याद करना शुरू किया और सुबह होने तक उसको याद कर लिया और आप को मेरे इस याद करने से मुतअल्लिक़ कुछ भी ख़बर नहीं थी और आप कूफा में मसाइल का जवाब देने और फतवा देने में मशहूर थे।

एक दिन में आप के सीधे जानिब बैठा हुआ था आप से एक मसअला दरयाफ्त किया गया तो आप ने उसका जवाब देते हुये फरमाया कि इमामे अबू हनीफा रहमतुल्लाह अलैह ने इस तरह फरमाया है तो मैंने आप से अर्ज़ किया इस मसअला के जवाब में आप को शुबहा हो गया इस आदमी के मसअला के बारे में जवाब यह है और फलाँ किताब में इस मसअला के नीचे फलाँ मसअला दर्ज है और उसके ऊपर फलाँ मसअला है। इमाम मुहम्मद बिन हसन रहमतुल्लाह अलैह ने किताब मंगवाई और देखा तो मसअला को वैसे ही पाया जिस तरह मैंने ज़िक्र किया था। फिर आप ने

अपने जवाब में मेरे क़ौल की तरफ रुजू फरमाया उसके बाद मुझे कोई किताब नहीं दी।

हारून रशीद के दौर में इमामे शाई रहमतुल्लाह अलैह का शहर इराक़ में दाख़िला:

मैं ने सफर की इजाज़त तलब की तो आप ने फरमाया मैं मेहमान को अपनी तरफ से न जाने की इजाज़त देता हूँ न नेमत में हिस्सेदारी को ख़त्म करने की। जब मैंने यह बताया कि मेरा क़स्द यह नहीं है बल्कि मैंने तो सफर का इरादा किया है तो आप ने अपने गुलाम को हुक्म दिया कि ख़ज़ाना में जो कुछ सोना चाँदी है वह सब ले कर आये फिर मैं आप ने वह सब मुझे दे दिया और वह तीन हज़ार दिरहम थे फिर शहर इराक़, सर ज़मीन फारस और ममालिके अजम में घूमता और लोगों से मुलाक़ात करता रहा यहाँ तक कि इक्कीस साल की उम्र हो गई फिर मैं हारून रशीद के दौरे ख़िलाफत में दोबारा इराक़ में दाख़िल हुआ दरवाज़ा में दाख़िला के वक़्त एक लड़का मेरे पीछे पड़ गया और नरमी से गुफतगू करते हुये मुझ से दरयाफ्त किया कि:

सावाल: आप का नाम क्या है?

जवाब: मैं ने कहा मुहम्मद

सवाल: आप किस के बेटे हैं?

जवाब: इदरीस शाफई का बेटा हूँ।

सवाल: क्या आप मुत्तलबी ख़ानदान के हैं?

जवाब: हाँ

फिर वह सब बातें एक तख़्ती पर लिख लिया जो उसकी आस्तीन में थी फिर मुझे छोड़ दिया और मुझे एक मस्जिद में पहुंचाया गया मैं उस लड़के के उस अमल के नतीजे पर गौर करता रहा यहाँ तक कि जब आधी रात हुई तो मस्जिद का मुहासरा किया गया और वह लोग हर आदमी की चेहरे को गौर करते हुये मुझ

तक पहुंचे और उन्हों ने मुझ से कहा कि अमीरुल मुमिनीन को जवाब दो, मैं इनकार किये बगैर उठा और जब उनको (अमीरुल मुमिनीन को) देखा तो मैंने वाज़ेह तौर पर सलाम किया तो उसको यह अलफाज़ पसंद आये और मुझे सलाम का जवाब दिया।

ओहदये क़ज़ा के लिए हारून रशीद का इमाम के लिये पेशकश:

फिर ख़लीफा ने कहा :

تزعم انك من بنی هاشم

'तज़अमु अन्नका मिन बनी हाशिम'।

सवाल: तुम अपने बारे में बनी हाशिम होने का ज़ोम करते हो।

जवाब: लफ्ज़े ज़ोम कुरआन मजीद में बातिल है।

सवाल : अच्छा आप अपना नसब बयान कीजिये।

जवाब: मैंने अपना नसब बयान करना शुरू किया यहाँ तक कि उस को आदम अलैहिस्सलाम तक पहुंचाया।

सवाल: यह फसाहत व बलागत तो सिर्फ मुत्तलबी ख़नदान की औलाद में ही होती है। क्या आप इजाज़त देंगे कि मैं आप के लिए ओहदये कज़ा पेश करना चाहता हूँ और अपनी हुकूमत में आप को बराबर का हिस्सेदार बनाना चाहता हूँ कि आप मुसलमानों में आप का और मेरा हुक्म किताब व सुन्नत और इजमाये उम्मत के मुताबिक़ नाफिज़ फरमायें।

जवाब: अमीरुल मुमेनीन अगर आप मुझे अपने इस इकराम व नेमत के लिए मुहमकये कज़ा के दरवाज़ा को सुबह सिर्फ खोलने और शाम बंद करने के लिए ख़्वाहिश फरमायें तो भी मैं उस को नहीं करूंगा।

फिर ख़लीफा रो पड़े और मुझ से कहा कि आप असबाबे दुनिया में से कुछ कुबूल फरमायें मैं ने कहा मुझे नक़द चाहिये तो

ख़लीफा ने मेरे लिये एक हज़ार दिनार का हुक्म दिया फिर मैं अपनी गुफ्तगू ख़त्म करने भी न पाया था कि वह रक़म मुझे मिल गई। चंद बच्चों और नोकरों ने मुझ से बख़्शिश के लिए सवाल किया मेरी मुरव्वत इजाज़त नहीं दी कि मैं अल्लाह की इस नेमत में दूसरे को शामिल न कर के बाज़ पुर्स रहूँ (यानी मैंने उस रक़म को दूसरों में तक़सीम कर दिया) और मेरे लिए भी उन के बराबर सिर्फ एक हिस्सा रह गया। फिर उसी मस्जिद को रात में वापस हुआ और नमाज़े फज्र में इमामत के लिए एक लड़का आगे बढ़ा क़िरात अच्छी थी मगर उसको सहो हो गया और वह वाक़िफ नहीं था आगाज़ व इख़्तेताम किस तरह से करना चाहिये सलाम फेरने के बाद मैंने उस से कहा तूने अपनी और हमारी नमाज़ को ख़राब कर दिया उसको दोबारह लौटाओ तो वह जल्दी से नमाज़ को दोबारह पढ़ाया और हम भी लौटाये उसके बाद मैंने उस से कहा कि एक कागज़ लाओ अगर सहो हो जाये तो उस से निकलने के मसायल तुम को लिख देता हूँ। वह जल्दी से कागज़ लाया। अल्लाह तआला ने मुझे तौफीक़ दी और उसके लिए किताब व सुन्नत और इजमाये उम्मत से मैं ने एक किताब लिख दी और उसी से उसका नाम रखा। (किताबुस्सौह)

किताबुज़्ज़ाफरान (४०) अजज़ा की तालीफ:

यह किताब, किताबुज़्ज़ाफरान से मशहूर है और इसके ४० अजज़ा हैं इस किताब को मैंने इराक़ में शुरू किया था ३ साल में मुकम्मल हुई और ख़लीफा हारून रशीद ने मुझे शहर नजरान में मुहकमये ज़कात का वाली बनाया चंद हाजी साहबान आये तो मैंने उन से अहले हेजाज़ के बारे में दरयाफ्त किया एक डेरे में एक नौजवान को देखा और उसकी तरफ सलाम का इशारा किया तो डेरे के क़ायद ने उसको खड़े होने का हुक्म दिया और मुझे गुफ्तगू

के लिए इशारा दिया मैंने हज़रत इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह के बारे में दरयाफ्त किया।

इमाम की हेजाज़ को वापसी:

तो उसने कहा तफसील चाहिये या मुख्तसर बयान करूँ। तो मैंने उस से कहा कहा कि बलागत तो इख़्तेसार में है तो उसने जवाब दिया जिस्म में तंदुरुस्ती है और तीन सौ बांदियाँ हैं अगर एक रात किसी बांदी के पास गुज़ारते हैं तो फिर एक साल के बाद ही उसके पास जाते हैं (खुशहाल ज़िंदगी है) मैंने इख़्तेसार के साथ आप के अहवाल बयान कर दिया है।

शहर हर्रान में दाख़िला और उसकी सर गुज़श्त:

इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं मेरी ख़्वाहिश हुई कि जिस तरह आप की तंगदस्ती के दौर में आप को देखा था उसी तरह आप को आप की तवंगरी के दौर में भी देखूँ। मैंने उस (नौजवान) से कहा क्या तुम्हारे पास सफर के लायक़ कुछ माल है? तो उसने कहा आप खुसूसन और अहले इराक़ उमूमन मुझे वहशत ज़दा करते हैं। इस में जो कुछ भी है वह आप के लिए है।

मैंने उस से कहा फिर तुम किस तरह बसर करोगे उसने जवाब दिया अपनी वजाहत के ज़रिये से फिर वह मेरी तरफ देखा और अपने माल का मेरे लिए फैसला किया मैंने उस में से हसबे ज़रूरत ले लिया और क़बीला रबीआ और मुज़रा के इलाक़े से चलते हुये शहर हर्रान पहुंचा और जुमा के दिन शहर में दाख़िल हुआ। जुमा के दिन गुस्ल की फज़ीलत याद आई हम्माम (गुस्ल खाना)को गया जब (जिस्म पर) पानी बहाया तो सर के बालों को परागंदा पाया और हज्जाम को बुलाया वह मेरे सर के कुछ बालों को शुरू ही किया था कि शहर के चंद मुअज़्ज़ज़ लोग आये और उसको अपने लिए बुलाये वह जल्दी से उनके पास पहुंचा और मुझे

छोड़ दिया। जब उनकी ज़रूरत पूरी हो गई तो फिर वह मेरे पास आया अब मैंने उसका इरादा तर्क कर दिया और हम्माम से निकल आया और उसको उस से ज़्यादा दीनार देते हुये कहा जब कोई मुसाफिर तेरे पास आये तो उसको हक़ीर मत समझ वह मेरी तरफ तअज्जुब से देखा हम्माम के दरवाज़े पर बहुत से लोग जमा हो गये जब मैं निकला वह लोग मुझ पर गुस्सा किये और इसी दौरान एक मुअज़्ज़ज़ आदमी हम्माम से निकला (उसको सवारी के लिए) ख़च्चर पेश किया गया ख़च्चर पर सवार होने के बाद वह उससे उतर गया और मुझ से कहा क्या आप इमाम शाफई (रहमतुल्लाह अलैह) हैं? मैंने कहा हाँ फिर वह सवारी को मेरे क़रीब लाया और कहा अल्लाह का वास्ता आप इस पर सवार हो जायें और एक गुलाम मेरे सामने सर झुकाये मुझे उस मुअज़्ज़ज़ आदमी के घर तक ले चला फिर वह मुअज़्ज़ज़ आदमी आयाा और खुशनुदी का इज़हार फरमाया पानी मंगवाया और हमें धुलाया दस्तरख़्वान तैयार हुआ वह बिस्मिल्लाह कहा और मैं अपना हाथ रोक लिया तो उसने कहा ऐ अबू अब्दुल्लाह (कुन्नियत इमामे शाफई रहमतुल्लाह अलैह) क्या बात है, तो मैंने जवाब दिया जब तक आप मुझे यह ना बतायेंगे कि आप को मेरा तआरुफ किस तरह हासिल हुआ आप का खाना मेरे लिए हराम है तो उस ने कहा मैं उन लोगों में से हूँ जिस ने जो आप से इह किताब सुने थे जिस को आप ने बगदाद में तालीफ फरमाया था। आप मेरे उसताज़ हैं मैंने कहा अहले इल्म के दरमियान इल्म रिश्ता है। फिर मैं खुशी से खाया क्योंकि अल्लाह तआला ने मेरा तआरुफ मेरे अबनाये जिन्स (अहले इल्म से) ही कराया और तीन दिन मेहमान रहा तो उसने कहा शहर हरान के अतराफ मेरी चार जागीरात हैं हरान में उस से बेहतर कोई जागीरात नहीं अल्लाह पाक गवाह है अगर आप इस में ठहरना

पसंद करें तो यह आप के लिए मेरा हदिया हैं मैं ने उस से कहा फिर आप किस तरह बसर करेंगे तो वह इशारा करते हुये कहा इन संदूक़ों में जो कुछ है इसी से ज़िंदगी गुज़ारुंगा और वह चालिस हज़ार दिरहम हैं मैं उस से तेजारत करुंगा इस के बाद मैंने उस से कहा मेरी ऐसी कोई गर्ज़ नहीं है मैं तो अपने शहर से सिर्फ तलबे इल्म के लिए निकला हूँ। तो उस ने कहा फिर तो माल मुसाफिर की ज़रूरतों में से है मैंने वह चालिस हज़ार ले लिया और उस से रुख़्सत हुआ।

शहर रमल्ला में दाख़िला:

और शहर हरान से इस हाल में निकला कि मेरे सामने बहुत सामान था फिर मुझ से कई लोग और मुहद्दीसीने केराम मिलते गये उन में हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाह अलैह सुफयान बिन अैनिया रहमतुल्लाह अलैह और इमाम औज़ाई रहमतुल्लाह अलैह भी हैं।

इन में से हर एक को उन की क़िस्मत के बक़द्र तक़्सीम करता गया यहाँ तक कि शहर रमल्ला में पहुंचा तो मेरे साथ सिर्फ दस दीनार रह गये थे।

मदीना मुनव्वरा में दाख़िला हज़रत इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह से दोबारा मुलाक़ात:

मैं ने उस से एक सवारी ख़रीदी और उस पर बैठ कर हेजाज़ का इरादा किया और मंज़िल बमंज़िल २७ दिन के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के शहर (मदीना मुनव्वरा) को बाद अस्र पहुंचा और लोहे की एक कुर्सी देखा जिस पर मिस्री रेश्मी कतान का तकिया था।

और उस पर ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लिखा हुआ था और उसके अतराफ

चार या उस से ज़ायद रजिस्टर थे इसी असना में हज़रत इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह को देखा आप बाबुन्नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में दाखिल हुये और आप के इत्र की ख़ुशबू मस्जिद में महक गई आप के अतराफ चार सौ या उस से ज़ायद हज़रात थे उन में से चार आप के दामन को उठाये हुये थे। जब आप पहुंचे तो बैठे हुये तमाम हज़रात खड़े हो गये और आप कुर्सी पर तशरीफ फरमा हुये और 'जराहुल अमद' (अमदन किसी को ज़ख्मी कर देने) का एक मसअला पेश किया मैं उस मसअला को सुना तो मुझ से रहा न गया हलक़े के आख़िर में ख़ड़ा हो गया और एक आदमी पर नज़र पड़ी (जो जाहिल था) तो मैं उस से कहा तुम उसका जवाब इस तरह से दो तो उस आदमी ने आप का सवाल ख़त्म होने से पहले असहाब की तरफ मुतवज्जह हो कर उन से जवाब दरयाफ्त फरमाया उन्हों ने उस आदमी के खिलाफ जवाब दिया आप ने फरमाया तुम्हारा जवाब गलत है और उस आदमी ने दुरुस्त कहा। वह जाहिल उस से ख़ुश हुआ। फिर आप दूसरे सवाल पेश किये तो वह जाहिल जवाब के लिए मेरी तरफ मुतवज्जह हुआ। तो मैं उसको जवाब बता दिया और वह फौरन जवाब सुनाया। मगर इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह उसकी तरफ मुतवज्जह नहीं हुये अपने असहाब से जवाब दरयाफ्त फरमाये उन्हों ने उसके ख़िलाफ जवाब बताया आप ने फरमाया तुम्हारा जवाब गलत है और उस आदमी का जवाब सही है। इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं आप जब भी सवाल फरमाते जवाब गलत है और उस आदमी का जवाब सही है।

फिर आप ने उस आदमी से फरमाया अंदर आ जाओ तुम्हारी जगह वह नहीं है वह आदमी इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह की इताअत में दाख़िल हुआ और आप के सामने बैठ गया। आप के

फेरासत से उस आदमी से दरयाफ्त फरमाया क्या तुम मुअत्ता शरीफ पढ़े हो तो उस ने कहा नहीं फिर आप ने फरमाया क्या तुम इब्ने जुरैह रहमतुल्लाह अलैह को देखे हो तो उस ने कहा नहीं आप ने फरमाया फिर तुम यह इल्म कहाँ से सीखे हो तो उस ने कहा मेरे बाज़ू एक नौजवान लड़का है वह मुझ को उस का जवाब बताता है और मैं कहता जाता हूँ इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह के पलटते ही लोग भी (मेरी तरफ) पलटे आप ने उस जाहिल से फरमाया तुम अपने साहब को हमारे पास आने के लिए कहो। इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं मैं दाख़िल हुआ इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह के सामने उसी जगह पर पहुंचा जहाँ वह जाहिल बैठा था। मुझे आप ने गौर से देखा और फरमाया क्या तुम शाफई हो तो मैंने अर्ज़ किया 'हाँ' फिर मुझे आप अपने सीने से लगाये और अपनी कुर्सी से उतर गये और फरमाया तुम हमारे इस (ज़ेरे दर्स) बाब को मुकम्मल करो ताकि हम आप के लिए इस जगह को ख़ाली कर दें जो मेरी तरफ मनसूब है इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि मैं ने जराहुल अमद(अमदन ज़ख्मी करना) से मुतअल्लिक़ चार सौ मसअले पेश किये मगर किसी ने भी कोई (सही) जवाब नहीं दिया फिर मैंने बताया कि पहले मसअले का जवाब यह है और दूसरे का जवाब यह है सब के जवाब बता दिया और उन को लिखा गया यहाँ तक कि सूरज डूब गया और हम मग्रिब की नमाज़ पढ़े फिर आप ने मेरी तरफ इशारा फरमाया जब मैं आप के घर पहुंचा तो पहली इमारत के बरख़िलाफ एक दूसरी ही इमारत देखा और रोने लगा तो आप ने फरमाया ऐ अबू अब्दुल्लाह क्यों रो रहे हो क्या तुम को इस बात का अंदेशा हो गया कि मैं आख़ेरत को दुनिया के बदले बेच दिया हूँ। मैं ने अर्ज़ किया ख़ुदा की क़सम यही ख़्याल हुआ। आप ने फरमाया तुम मुतमइन

रहो और अपनी आँखों को ठंडा करो यह सब शहरे ख़ुरासाँ, मिस्र और दूर दूर मुक़ामात से आये हुये तोहफे और हदाया हैं। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हदिया कुबूल फरमाते और सदक़ा को रद फरमाते थे और मेरे पास तीन सौ ख़ुरासान व मिस्र के कतान के ख़ुलअत हैं और इतने ही गुलाम हैं जो अभी बुलूग को नहीं पहुंचे हैं और यह सब मेरी तरफ से तुम्हारे लिए हदिया हैं और मेरे इन सनदूक़ों में ५ हज़ार दीनार हैं हर साल मैं उनकी ज़कात निकालता हूँ उन में से भी आधे तुम्हारे लिए हैं। इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि मैंने अर्ज़ किया कि आप भी उसको दूसरों से पाये हैं और मैं आप से उसका वारिस हो रहा हूँ यह सब कुछ जिस का आप ने मुझ से वादा फरमाया है रात गुज़रने से पहले मेरे स्टाप के तहत हो जाये ताकि उस पर मेरी मिल्कियत जारी हो और अगर मेरी मौत आ जाये यह सब मेरे वरसा के लिए हो न कि आप के वरसा के लिए आप मुसकुराये और फरमाया तुम तो सिर्फ इल्म के सेवा हर चीज़ से इनकार करते हो तो मैं ने अर्ज़ किया इस से बेहतर कोई चीज़ नहीं हो सकती।

और रात गुज़रने से पहले ही वह सब जिस का आप ने मुझ से वादा फरमाया था मेरे स्टाप के तहत कर दी गईं। फिर मैंने दूसरे दिन सुबह जमात के साथ फज्र की नमाज़ पढ़ी और हम दोनों एक दूसरे के हाथ पकड़े हुये घर गये और मैंने घर के दरवाज़े पर ख़ुरासान के उमदा घोड़े और मिस्री ख़च्चर देखा और आप से कहा इस से अच्छे घोड़े मैंने नहीं देखा आप ने फरमाया ऐ अबू अब्दुल्लाह यह तुम्हारे लिए मेरी तरफ से हदिया है तो मैंने कहा आप अपने लिए एक चौपाया रख लें तो आप ने फरमाया मुझे अल्लाह से शर्म आती है कि जिस बस्ती में अल्लाह के नबी

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं उस बस्ती को घोड़े के खुरों से रौंद दो।

इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि मुझे यक़ीन हो गया कि इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह का तक़्वा अला हालिही क़ायम है फिर मैं आप के पास तीन दिन क़याम किया फिर अल्लाह तआला की नेमतों को ले कर मक्का मुकर्रमा को चला और एक आदमी को जो मेरी इत्तेला पहुंचाये आगे रवाना किया जब मैं हरम शरीफ को पहुंचा तो बूढ़िया और उसके साथ दूसरी औरतें निकल कर आईं और वह मुझे अपने सीने से लगाईं और उसके बाद वह बुढ़िया जिन से मैं उलफत रखता और ख़ाला पुकारता था मुझे गले लगाईं और फरमाया।

ليس امك اجتاحت المنايا كل فواد عليك ام

आप की माँ को मौत ने ख़त्म नहीं किया है बल्कि (हमारा) हर दिल आप के लिए माँ है।

मुक़ामाते हरीरी के शारह शरीशी ने जुज़्ये सानी: स.१०१ में कहा है कि इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह तमाम लोगों में सब से ज़्यादा इल्म वाले और सब से ज़्यादा परहेज़गार और सब से ज़्यादा इबादत गुज़ार और सब से ज़्यादा सख़ी थे अगर तुम उन के हाफिज़ा और मबलगे इल्म से वाक़िफ होना चाहते तो उनके असफार पर गौर करो। बाज़ अहले इल्म ने आप के बारे में फरमाया है कि आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ नसब व हसब में शरीक हैं।

मुत्तलिब ने अपने बेटे हाशिम का निकाह हाशिम बिन अब्दे मुनाफ की बेटी शिफा से कराया और उन से अब्दे यज़ीद पैदा हुये जो इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के जद्दे आला हैं। अब्दे यज़ीद को ख़ालिस व शरीफुन्नफ्स कहा जाता है कि उस में कोई धब्बा

नहीं है इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के जद्दे आला में दो हाशिम हैं।

१. हाशिम बिन मुत्तलिब।

२. हाशिम बिन अब्दे मुनाफ।

इस तरह इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचाज़ाद भाई और फूफ़ूज़ाद भाई हैं शिफा जो अब्दुल मुत्तबिल की बहन हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की फूफी होती हैं।

जैसा कि गुज़र चुका हैं आप के दादा साइब रज़ि अल्लाहु अन्हू जंगे बदर के मौक़े पर मुश्रफ ब इस्लाम हुये और वह इस मौक़े पर बनी हाशिम बिन अब्दे मुनाफ के अलमबरदार थे जंग में क़ैद हो गये तो अपने नफ्स का फिदया दिया और इस्लाम कुबूल फरमाया उन से पूछा कि आप फिदया देने से पहले ही ईमान कुबूल क्यों नहीं किये तो फरमाया मैं मुसलमानों को उनकी मुझ से ख़्वाहिश में महरूम करना नहीं चाहता था।

इमाम अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाह अलैह वगैरह का इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह की तारीफ करना:

अबू सौर फरमाते हैं कि आप के जैसा न मैंने किसी को देखा और न कोई दूसरे देखने वालों ने देखा है। इमाम अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि मैं चालिस साल से हर नमाज़ में इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के लिए दुआ करता हूँ आप के साहबज़ादे ने कहा कि शाफई कौन बुज़ुर्ग हैं जिन के लिए आप यह दुआ फरमाते हैं तो आप ने फरमाया ऐ मेरे बेटे वह तो :

كان كالشمس للدنيا و كالعافية للناس

'काना कश्शम्स लिद्दुनिया व कल आफियति लिन्नासि'

दुनिया के लिए सूरज और लोगों के लिए आफियत की तरह

हैं। सालेह बिन अहमद बिन हंबल ने बयान किया कि मेरे वालिद इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के ख़च्चर के साथ आप का रेकाब थामे हुये चले तो यहिया बिन मुईन ने आप के पास कहला भेजा ऐ अब्दुल्लाह (कुन्नियत अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाह अलैह) क्या तुम को उन के ख़च्चर के साथ चलने के सेवा और कोई चीज़ पसंद नहीं थी तो इमाम अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया ऐ अबू ज़करिया (कुन्नियत यहिया बिन मुईन,) अगर तुम भी उसकी दूसरी जानिब से चलते तो तुम्हारे लिए भी यह नफा बख़्श होता। अगर कोई आदमी किसी दवात को हाथ लगाता है तो उस पर भी इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह का ऐहसान है।

इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के हालात ख़ुद उन की ज़बानी:

आप फरमाते हैं कि सोलह साल से कभी मैंने खाना पेट भर नहीं खाया इस लिए कि पेट भर खाना बदन को बोझल बनाता है और दिल को सख़्त कर देता है और ज़ेहानत को ख़त्म कर देता है। नींद को लाता है और आदमी को इबादत में सुस्त कर देता है और फरमाते हैं कि मैंने सच्ची या झूठी कभी अल्लाह की कोई क़सम नहीं खाई और फरमाया मैं ने कभी किसी से इस लिए मोनाज़रा नहीं किया कि वह आदमी गलत हो जाये और किसी से गुफतगू किया हूँ तो सिर्फ यह चाहा हूँ कि उसको तौफीक़ मिले और वह हेदायत पाये और उसकी मदद हो और अल्लाह की तरफ से निगरानी व हिफाज़त हो और किसी से गुफतगू किया हूँ तो उसकी परवाह नहीं किया कि अल्लाह हक़ बात मेरी ज़बान से ज़ाहिर करता है या उसकी ज़बान से और किसी के सामने हुज्जत पेश किया और वह कुबूल कर ली गई तो हैबत ज़दा हुआ हूँ और उसकी मुहब्बत दिल में बैठाया हूँ। किसी ने हक़ के मुक़ाबले में

बड़ाई की और जुज्जत बालाये ताक़ रखा तो वह मेरी नज़र से गिर गया और मैं उसको छोड़ दिया हूँ।

आप की इबादत और ज़ोहद व तक़्वा:

आप माहे रमज़ान में नमाज़ में साठ मर्तबा कुरआन मजीद ख़त्म करते थे।

कराबी फरमाते हैं कि मैं एक से ज़ायद मर्तबा आप के साथ गुज़ारा हूँ तक़रीबन एक तिहाई रात तक आप नमाज़ पढ़ते थे और पचास आयात से ज़्यादा पढ़ते हुये आप को मैंने नहीं देखा कभी ज़्यादा पढ़ते तो एक सौ आयतें पढ़ते जब भी रहमत की आयत पढ़ते तो अपने लिए और तमाम मुसलमानों के लिए रहमत की दुआ फरमाते।

इब्ने अब्दुल्लाह बलवा फरमाते हैं कि एक दिन हम ज़ाहिदों, आबिदों और उलमा का और उन के ज़ोहद व फसाहत और इल्म का तज़केरा करते हुये बैठे थे कि उमर बिन नबाता तशरीफ लाये और हमारी गुफतगू के बारे में दरयाफ्त किया तो हम ने उन को अपना मौज़ूपे गुफतगू बताया। उमर बिन नबाता ने फरमाया ख़ुदा की क़सम मैंने मुहम्मद बिन इदरीस शाफई से बढ़ कर किसी को भी परहेज़गार ख़ौफे ख़ुदा रखने वाला, सख़ी, आलिम और बुज़ुर्ग, करीम व अज़ीम और अफज़ल नहीं पाया।

एक मर्तबा मैं और आप और हारिस बिन लबीद, कोहे सफा की तरफ चले। हारिस रहमतुल्लाह अलैह हज़रत सालेह मरवी रहमतुल्लाह अलैह के साथी थे और निहायत परहेज़गार ख़ौफे ख़ुदा रखने वाले और बेहतरीन आवाज़ वाले थे उन्हों ने इस आयत की तिलावत की :

هذا يوم لا ينطقون ولا يؤذن لهم فيعتذرون

'हाज़ा यौमु ला यंतिकून वला युज़नु लहुम फयतज़िरुन' तो

इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह का रंग मुतगय्यर हो गया और रोंगटे खड़े हो गये और आप सख़्त बेचैन हो गये और बेहोश हो कर चेहरे के बल गिर पड़े जब आप को होश आया तो फरमाने लगे।

اعـوذبك مـن مقام الكاذبين واعراض الغافلين اللهم خـضـعـت لك قـلـوب العارفين وذلت لك قلوب المشتاقين الـلـهـم هـب لـى جودك وجللنى بسترك واعف عن تقصير بكرم وجهك۔

ऐ अल्लाह झुटों के मुक़ाम और गाफिलों की रुगर्दानी से मैं तेरी पनाह लेता हूँ ऐ अल्लाह आरिफों के दिल तेरे सामने झुके हुये हैं और मुश्ताक़ों के कुलूब तेरे सामने ज़लील हैं ऐ अल्लाह मेरे लिए अपनी बाराने रहमत अता फरमा अपनी परदा पोशी से मुझे ढाँक ले और अपने करम से मेरी कोताही को माफ फरमा फिर हम लोग उठ कर अलग अलग चले गये।

आप का ईसार:

रबी बिन सुलेमान रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि मैंने इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह को फरमाते हुये सुना कि एक मर्तबा ईद आई लेकिन मेरे पास ख़र्च के लिए कुछ नहीं था मैंने अपने घर के खर्च के लिए सत्तर दीनार क़र्ज़ हासिल किया अचानक एक कुरैशी अपनी ज़रूरत ले कर आया तो मैंने अपना हाल सुना दिया और उस से कहा कि तुम इस में से जिस क़द्र चाहो ले लो तो उस ने कहा मेरी ज़रूरत के लिए इस से ज़्यादा चाहिये तो मैंने उस से कहा अच्छा यह सारे ले लो फिर मैं इसी तरह रात गुज़ारा कि मेरे पास कोई दीनार या दिरहम नहीं था।

जाफर मक्की का इमाम के साथ इन्फाक़ का मामला :

मैं इसी हालत में घर में था कि जाफर बिन मुहम्मद मक्की

का क़ासिद आया और कहा वज़ीर तशरीफ लाये हैं आप उनको जवाब दीजिये उस ने दरयाफ्त किया कि आज की रात आप की क्या हालत गुज़री हैं मैं जब भी सो जाने का इरादा किया एक गैबी आवाज़ देने वाला आवाज़ देता "अश्शाफई अश्शाफई" तो मैं ने उसको अपना हाल बता दिया तो उसने मुझे पाँच सौ दीनार दिये फिर मज़ीद पाँच सौ दीनार दिये फिर उस में इज़ाफा करता रहा यहाँ तक कि दो हज़ार दीनार अता किये।

इमाम की सख़ावत:

इमाम की सख़ावत का यह हाल था कि एक मर्तबा आप के हाथ से चाबुक गिर गया एक आदमी उठा कर इमाम को दिया तो आप ने उसको पचास दीनार अता फरमाये। एक मर्तबा मक्का मुकर्रमा को दस हज़ार दिरहम ले कर पहुंचे और बैरूने शहर अपना ख़ेमा लगाया और लोग आते गये आप वह तमाम दिरहम तक़्सीम करने तक अपनी जगह से नहीं हटे।

आप की शायरी :

आप ज़बरदस्त शायर थे अबुलक़ासिम इब्ने अर्ज़क़ फरमाते हैं कि मैं आप के पास गया और अर्ज़ किया ऐ अबू अब्दुल्लाह (इमामे शाफई रहमतुल्लाह अलैह की कुन्नियत) क्या आप हमारे साथ इंसाफ का फैसला नहीं फरमायेंगे कि आप के लिए तो यह फिक़्ह है जिस के फवायद पर आप फाइज़ हैं और हमारे लिए यह शायरी है लेकिन आप इस शायरी में भी दख़्ल देने लगे हैं या तो आप (शायरी) हमारे लिए छोड़ दीजिये या मैं चंद अशआर लाया हूँ अगर आप उन पर उसी तरह का तरह मिसरा लगायें तो मैं शायरी से तोबा करलुंगा (शायरी छोड़ दुंगा) अगर आप यह न कर सकें तो फिर आप इस से (शायरी से) रुजू कर लें (छोड़ दें) आप ने फारमाया ऐ शख़्स तु (अपने अशआर) बयान कर तो मैं अपना यह

कलाम सुनाया।

١-ماهمتی الاقارعة الوریٰ خلق الزمان و همتی لم تخلق

मेरी हिम्मत तो सिर्फ दुश्मनों से लड़ने की है। ज़माना पुराना हो गया मगर मेरी हिम्मत पुरानी नहीं हुई।

٢- والناس اعنیهم الی سلب الغنی لاینظرون الی الجحیٰ والأولق

लोगों की आँखें दौलतमंदी को हासिल करने में लगी हुई हैं। वह अक़्लमंदी और बेवक़ूफी को नहीं देखते।

٣-لکن من رزق الجحیٰ حرم الغنی ضدان مفترقان ای تفرق

लेकिन जिस को अक़्लमंदी नसीब हुई वह दौलतमंदी से महरूम है। यह दोनों किस क़द्र अलग अलग ज़िद हैं।

لوکان بالحیل الغنی لو جدتنی بنجوم اقطار السماء تعلق

अगर दौलतमंदी तदबीरों से हासिल होती तो आप मुझ को पाते। आसमान के किनारों में सितारों से मेरा तअल्लुक़ होता।

इमामे शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने जवाब में फरमाया तुम बना कर लाये थे लेकिन मैं फिल बदिह कहुंगा। फरमाया

١-ان الذی رزق ایسار فلم ینل حمدا ولا اجر الغیر مؤفق

जिस को खुशहाली मिली और वह तौफीक़ नहीं पाया। ख़ुदा के हम्द की और नाशुक्री की तो यक़ीनन वह कम नसीब है।

٢- فالجدید فی کل امر شاسع والجد یفتح کل بامغلق

पस नसीब हर मुश्किल काम को आसान कर देता है। और नसीब हर बंद दरवाज़ा को खोल देता है।

٣- فاذا سمعت بان محروماتی ماءً لیشربه فغاض فصدق

जब तुम यह सुनो कि कोई कम नसीब पानी के पास पीने के लिए गया और पानी नीचे उतर गया तो उसकी तसदीक़ कर लो।

٤-واحق خلق الله بالهم امرء ذوهمة یبلی بعیش ضیق

अल्लाह की मख़्लूक़ में हमदर्दी का ज़्यादा मुस्तहिक़ आदमी।

वह हिम्मत वाला है जो तंग ज़िंदगी में भी बहादुरी दिखाता है।

٥-ومن الدلیل علی القضاء و کونه یؤس اللبیب و طیب عیش الاحمق

और यह क़ज़ा व क़द्र होने की दलील है कि अक़्लमंद तंग ज़िंदगी गुज़ारता है और कम अक़्ल राहत की ज़िंदगी गुज़ारता है।

अबुल क़ासिम ने कहा उसके बाद अब मैं शेअर नहीं कहुंगा। मुबर्रद ने कहा कि इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह अज़ीम शायर, बड़े अदीब, फिक़्ह और कुरआन के सब से ज़्यादा जानने वाले थे।

आप के अशआर को जमा किया जाये तो एक ज़ख़ीम दीवान हो जाता है ज़ेल में आप के चंद अशआर क़ारेईन किराम के इस्तिफादा के लिए दर्ज कर रहे हैं।

अशआर मा तर्जुमा:

रबी बिन सुलेमान कहते हैं कि हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह को यह अशआर फरमाते हुये सुना हूँ।

١- من النفس وا حماها علی مایزینها تعش سالما والقول فیك جمیل

नफ्स को (बुराई) से बचा और उसको ज़ीनत देने वाली चीज़ों का हामिल बना तो तू सलामती के साथ ज़िंदगी गुज़ारेगा और तेरे बारे में चर्चा भी अच्छा होगा।

٢- ولا تو لین الناس الا تجملا نبابك دهرا وجفاك خلیل

और तू लोगों के साथ हुसने सुलूक़ करता रह ख़्वाह ज़माना तुझ पर ज़ुल्म करे या दोस्त बदसुलूकी करे।

٣- وان ضاق رزق الیوم فاصبر الی غد عسیٰ نکبات الدهر عنك تزول

और अगर आज रोज़ी तंग है तो कल सब्र कर हो सकता है ज़माने की मुसीबतें तुझ से दूर हो जायें।

٤- ولا خیر فی ودامراء متلون اذا الریح مالت مال حیث تمیل

रंग बदलने वाले आदमी से दोस्ती में कोई भलाई नहीं, जब हवा बदलती है तो वह हवा के रुख़ पर पलट जाता है।

٥۔ وما اكثر الا خوان حين تعدهم ولكنهم فى التائبات قليل

और जब तू दोस्तों को शुमार करेगा तो बहुत ही ज़्यादा होंगे और लेकिन मुसीबतों में वह कम हो जायेंगे।

रबी बिन सुलेमान कहते हैं कि मैंने आप को यह अशआर भी फरमाते हुये सुना है।

٦۔ وانزلنى طول النوى دار غربة يجاورنى من ليس مثلى يشاكله

और तवील मुसाफेरत (उलमा से दूरी) ने मुझे ऐसे अजनबी मुक़ाम पर पहुंचा दिया कि मेरे साथ ऐसा (जाहिल) आदमी हो जाता है कि मुझ जैसा उसकी मोवाफेक़त नहीं कर सकता।

٧۔ احامقه حتى يقال سجية ولو كان ذا عقل لكنت اعاقله

मैं उसकी बेवकूफी में साथ चलता हूँ यहाँ तक कि उसको (मेरी) तबीअत ख़्याल किया जाता है, और अगर वह अक़लमंद होता तो मैं उसके साथ अक़लमंदों के जैसा मामला करता।

तबक़ाते शाफीआ कुबरा जिल्द १ स.१५५ पर है कि अबू उमर व उसमान रहमतुल्लाह अलैहुमा कहते हैं कि जब हज़रत इमामे शाफई रहमतुल्लाह अलैह मिस्र में दाख़िल हुये तो हज़रत इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह के असहाब आप से बहस करने लगे तो आप ने फरमाया।

٨۔ أأنثردرا بين راعية الغنم وانثر منظوما لراعية النعم

क्या मैं बकरियाँ चराने वालों के सामने नसर के मोती बिखेरुँ, और क्या ऊँट चराने वालों के सामने (नज़्म के) पिरोये हुये मोती पेश करूँ।

٩۔ لئن كنت قد ضيعت شربلدة فلست مضيعا بينهم غرر الكلم

अगर मैं (इल्म को) किसी बुरे शहर में ज़ाये किया हूँ, तो भी उम्दा बातं उन लोगों के दरमियान (बयान कर के)ज़ाये नहीं करूंगा।

١٠۔ فان فرح الله الكريم بلطفه وادركت اهلا للعلوم والحكم

अगर रब करीम अपना लुत्फ फरमाये और मुझे इल्म व हिक्मत के अहल मिल जायें।

١١۔ يشثت مفيدا و استفدت ودادهم والافمخزون لدى و مكتتم

तो मैं इल्मे नाफे बिखेरुंगा और उनकी दोस्ती से फायदा उठाउंगा वर्ना वह (इल्म) मेरे पास पूशीदा ख़ज़ाना रहेगा।

١٢۔ ومن منح الجهال علما اضاعه ومن منع المستو جبين فقد ظلم

और जिस ने जाहिलों को इल्म दिया तो उस ने इल्म को ज़ाये किया और जिस ने अहल को (इल्म) नहीं दिया तो उस ने ज़ुल्म किया।

अबू इबराहीम इसमाईल बिन यहिया मुज़नी रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने मुझे अपने यह अशआर सुनाये।

١٣۔ شهدت بان الله لا بشىء غيره واشهد ان البعث حق واخلص

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई चीज़ (लायक़े इबादत) नहीं, और मैं सिद्क़ दिल से गवाही देता हूँ कि दोबारा उठाया जाना हक़ है।

١٤۔ وان ابا بكر خليفه ربه وكان ابو حفص على الخير يحرص

और बेशक सय्यदना अबू बक्र रज़ि अल्लाहु अन्हू अपने रब के ख़लीफा हैं, और सय्यदना अबू हफ्स उमर रज़ि अल्लाहु अन्हू नेकी पर हरीस (बहुत चाहने वाले) हैं।

١٦۔ واشهد ربى ان عثمان فاضل وان عليا فضله متخصص

और मैं अपने रब को गवाह बनाता हूँ कि सय्यदना उसमान रज़ि अल्लाहु अन्हू साहबे फज़ीलत हैं, और यक़ीनन सय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि अल्लाहु अन्हू ख़ुसूसन फज़ीलत के हामिल हैं।

١٧۔ أئمة قوم يهتدى بهداهم لحا الله من اباهم يتنقص

यह क़ौम के इमाम हैं कि उन से हेदायत मिलती है अल्लाह पाक लानत करे इस आदमी पर जो इन का इनकार करता है और अैब जोई करता है।

١٨۔ فما لعتاة يشهدو ن سفاهة   وما لسفية لايحيص ويحرص

पस उन बे अदबों का क्या हो गया है कि वह अपनी बेवकूफी की गवाही दे रहे हैं, और उस बेवकूफी को क्या हो गया है कि वह (अपनी बे राह रवी) से हटता नहीं (बल्कि) और हिर्स करता है।

नज़र बिन इबराहीम मुक़द्दसी रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया कि मुझे बाज़ असहाब ने यह अशआर सुनाये और उन्हों ने कहा कि हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के हैं।

١٩۔ العلم من شرطه لمن خدمه   ان يجعل الناس كلهم خدمه

जो कोई इल्म की ख़िदमत करना चाहता है उसके शराइत में से यह है कि वह तमाम लोगों को इल्म का ख़ादिम बनाये।

٢٠۔ وواجب صونه عليه كما   يصون فی الناس عرضه ودمه

और उस पर वाजिब है कि वह उस (इल्म) की हिफाज़त इस तरह करे जैसा कि वह लोगों में अपनी इज़्ज़त और जान की हिफाज़त करता है।

٢١۔فمن حوى العلم ثم اودعه   بجهله غيره اهله ظلمه

पस जिस ने इल्म सीखा फिर उसको अपनी नादानी से ना अहल आदमी को दिया तो वह उस पर ज़ुल्म किया।

٢٢۔ و كان كالمبتنى البناء اذا   تم له ماراده هدمه

और वह उस घर बनाने वाली की तरह है कि जब उसके इरादे के मुताबिक़ (तामीर) मुकम्मल हो गई तो फिर उसको गिरा दिया।

रबी बिन सुलेमान मरावी रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने हमें अपने यह अशआर

सुनाये।

٢٣۔ صديق ليس ينفع يوم باس   قريب من عدو فی القياس

जो दोस्त मुसीबत के दिन काम नहीं आता तो क़रीने क़यास है यह बात कि वह मिस्ल दुश्मन के है।

٢٤۔ وما يبغى الصديق بكل عصر   ولا الا اخوان الا للتأسى

मैं ज़माना भर क़ाबिले ऐतेमाद भाई को तलाश किया मगर मेरी तलाश ने उसको और पीछे कर दिया।

٢٥۔عمر الدهر ملتمسا بجهدى   اخاثقة فاكداه التماسى

मैं ज़माना भर क़ाबिले ऐतिमाद भाई को तलाश किया मगर मेरी तलाश ने उसको और पीछे कर दिया।

٢٦۔ تنكوت البلا د على حتى   انا سها ليسوابناس

शहर मेरे लिए अजनबी हो गये। इस क़द्र कि उसके इंसान इंसान ही नहीं है।

हसन बिन अहमद बसरी रहमतुल्लाह अलैह ने कहा कि हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह जब मुक़ामे सिरीमनरा पहुंचे तो आप के कपड़े फटे पुराने थे और बाल बढ़ गये थे हज्जाम के पास तशरीफ ले गये तो हज्जाम आप के कपड़ों को देख कर आप को हलका समझा और कहा कि किसी दूसरे के पास जाइये हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह को उसके तर्ज़े अमल से तकलीफ हुई और आप ने आपने गुलाम से फरमाया इख़्राजात के लिए कितनी रक़म है तो गुलाम ने अर्ज़ किया दस दीनार हैं तो आप ने फरमाया यह सब उस अज्जाम को दे दो। चुनान्चे गुलाम ने वह तमाम दीनार हज्जाम को दे दिये और आप यह अशआर कहते हुये वहाँ से पलट आये।

٢٧۔ على ثياب لويباع جميعها   بفلس لكان الفلس منهن اكثر

मेरे कपड़े ऐसे हैं अगर उन को एक पैसा मैं फरोख़्त किया

जाये तब भी वह एक पैसा की क़ीमत उन (कपड़ों) से बढ़ी हुई होगी।

٢٨-وفيهن نفس لو تقاس بمثلها   نفوس الورى كانت اجل واخطرا

और उन (मामूली कपड़ों) में एक ऐसा इंसान है कि अगर मख़्लूक़ में इंसानों को इस जैसे इंसानन से वज़न किया जाये तो वह (उन तामम इंसानों से) बढ़ जायेगा।

٢٩- وما ضرنصل السيف اخلاق غمده   اذا كان عضبا حيث انفذته برا

और तलवार के फल को बोसीदा न्याम ज़र्र नहीं पहुंचाती जब वह तलवार तेज़ होगी तो उसको जहाँ चलायेगा कार गर होगी।

٣٠- فان تكن الايام ازرت ببزتى   فكم من حسام فى غلاف مكسرا

अगर ज़माना मेरे कमड़ों को औब लगाता है तो पस कितनी एक (उम्दा) तलवारें टूटे हुये गेलाफ में होती हैं।

हुरमला बिन यहिया फरमाते हैं कि मैं ने हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह को यह अशआर पढ़ते हुये सुना है।

٣١- تمنى رجال ان اموت وان امت   فتلك سبيل لست فيها بأوحد

मुख़ालिफ लोग चाहते हैं कि मैं मर जाऊँ और अगर मैं मर जाऊँ तो यह ऐसा रास्ता है कि मैं इस राह में तंहा नहीं हूँ।

٣٢- فقل للذى يبغى غلاف الذى مضى   تهيأ لأخرىٰ مثلها فكان قد

पस उस आदमी से कह दो जो तक़दीर के ख़ेलाफ चाहता है कि उस के मिस्ल कोई दूसरा रास्ता तलाश करे।

٣٣- وقد علموا لو ينفع العلم عندهم   لئن مت ماالداعى على بمخلد

अगर इल्म उन को नफा दे सकता है तो वह जानते हैं कि अगर मैं मर जाऊँ तो मुझ पर बद दुआ करने वाला भी हमेशा नहीं रहेगा।

मज़कूरा अशआर की वजह यह बतलाई गई है कि रबी रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि अशहब बिन अब्दुल अज़ीज़ ने

सजदे की हालत में हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के लिए बद दुआ फरमाया था:

اللهم امت الشافعى   والايذهب علم مالك

ऐ अल्लाह हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह को मौत दे वरना इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह का मज़हब ख़त्म हो जायेगा। यह बात जब हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह को मालूम हुई तो आप मुसकुराये और मज़कूरा अशआर पढ़े।

और यह अशहब वही हैं जिस ने हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह से मुनाज़रा किया था। और जब इमाम साहब अशहब पर गालिब रहे तो उस ने हज़रत इमाम को एक बड़ी कुंजी से मार कर इमाम के सर को ज़ख़्मी कर दिया था। आप उसी की वजह से बीमार हुये और उसी में इंतेक़ाल फरमाये।

हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह हज़रत मुहम्मद बिन अल हसन रहमतुल्लाह अलैह उन के इल्म की बिना पर ताज़ीम फरमाते थे हज़रत इमाम ने आप से चंद किताबें आरियतन तलब कीं लेकिन इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैह ने इसकी तकमील नहीं की तो आप ने उस मौक़े पर इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैह की तारीफ में दर्ज ज़ेल अशआर लिख कर भेज दिये तो इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैह ने आप की ख़्वाहिश से ज़ायद किताबें रवाना फरमाया।

٣٣- قل للذى لم ترعينا   من راه مثله

कह दीजिये कि जो आँखे उसको देखी हैं वह उस जैसी किसी शख़्सियत को नहीं देखीं।

٣٥- و من كان من رآه   قد رأى من قبله

और जिस ने उसको देखा है गोया वह उस से पहले के (आइम्मा) को देखा।

٢٦۔العلم ینھی اھلہ ان یمنعوہ اھلہ

इल्म उलमा को इस बात से मना करता है कि वह अहल हज़रात (यानी तलब करने वालों) से इल्म को रोक दें।

٣٧۔لعلہ یبذلہ لاھلہ لعلہ

उम्मीद है कि वह इस के अहल को इनायत करेंगे।

फक़ीह इब्ने अब्दुल हेकम रहमतुल्लाह अलैह बीमार हो गये थे तो हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह उनकी ऐआदत के लिए तशरीफ ले गये और यह अशआर फरमाये।

٣٨۔ مرض الحبیب فعدتہ فمرضت من حذری علیہ

महबूब बीमार हुआ तो मैं उसकी ऐआदत के लिए गया और उस पर अंदेशा कर के ख़ुद मैं बीमार पड़ गया।

٣٩۔ شفی الحبیب فعادنی فشفیت من نظری الیہ

महबूब अच्छा हो गया तो वह मेरी ऐआदत के लिए आया। उसको देखने से मुझे शिफा हो गई।

रबी बिन सुलेमान रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया कि हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह से तक़दीर के बारे में सवाल किया गया तो अल्लाह सुबहानहू तआला से ख़ेताब करते हुये कहा।

٤٠۔ ماشئت کان وان لم أشأ وما شئت ان لم تشالم یکن

तू जो चाहा हुआ अगरचे कि मैंने न चाहा हो। और मैं जो चाहा अगर तू नहीं चाहा तो वह नहीं हुआ।

٤١۔ خلقت العباد علی ماعلمت ففی العلم یجری الفتی والمسن

तूने अपने इल्म के मुताबिक़ बंदों को पैदा किया। पस उस इल्म में नौजवान और बूढ़ा दोनों चलते हैं।

٤٢۔ علی ذامننت و حذا خذلت وھذا ھنت وذالم تھن

इस पर तू ऐहसान किया और उसको रुसवा कर दिया। और इस को ज़लील किया। और उसको नहीं किया।

٤٣۔ فمنھم شقی و منھم سعید ومنھم قبیح ومنھم حسن

पस उन में से कोई बद नसीब है और कोई ख़ुश नसीब है और कोई बद सूरत है तो कोई ख़ूबसूत है। शरह मुक़ामाते शरबीनी में है कि आलिम और जाहिल के तअल्लुक़ बताते हुये फरमाया।

٤٤۔ ومنزلۃ السفیہ من الفقیہ کمنزلۃ الفقیہ من السفیہ

बेवकूफ का मुक़ाम आलिम के पास ऐसा ही है जैसा कि आलिम का मुक़ाम बेवकूफ के पास है।

٤٥۔ فھذا زاھد فی قرب ھذا وھذا فیہ ازھد منہ فیہ

यह उसके नज़दीक जाने से दूर रहता है तो वह उस से भी ज़्यादा उस से दूर रहता है।

٤٦۔ اذا غلب الشقاء علی سفیہ تقطع فی مخالفۃ الفقیہ

बेवकूफ पर जब बदबख़्ती ग़ालिब आ जाती है तो आलिम की मुख़ालिफत में फना हो जाता है(मुख़ालिफत पर उतर जाताह है।)

शरह मुक़ामाते शरीफी में है हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया।

٤٧۔ علی معی حیثما یممت ینفعی قلبی وعاء لہ لابطن صندوق

मेरा इल्म मेरे साथ रहेगा जिस जगह इरादा करो मुझे फायदा देगा। मेरा दिल इसी के लिए बर्तन है। संदूक़ का पेट नहीं है।

ان کنت فی البیت کان العلم فیہ معی او کنت فی السوق کان العلم فی السوق

अगर मैं घर में होता हूँ तो इल्म भी वहाँ मेरे साथ होता है या बाज़ारों में जाऊँ तो बाज़ार में भी मेरे साथ रहता है।

٤٩۔تعاظمنی ذنبی فلما قرنتہ بعفوك ربی کان عفوك اعظما

मेरे गुनाह मुझे बड़े मालूम हुये लेकिन जब मैं उसको तेरे अफू से मिला दिया। ऐ मेरे रब तो तेरी अफू उस से बड़ा निकला।

٥٠۔ ولما قسا قلبی وضاقت مذاھبی جعلت رجائی نحو عفوك مسلما

٢٦۔العلم ينهى اهله ان يمنعوه اهله

इल्म उलमा को इस बात से मना करता है कि वह अहल हज़रात (यानी तलब करने वालों) से इल्म को रोक दें।

٣٧۔لعله يبذله لاهله لعله

उम्मीद है कि वह इस के अहल को इनायत करेंगे।

फक़ीह इब्ने अब्दुल हेकम रहमतुल्लाह अलैह बीमार हो गये थे तो हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह उनकी ऐआदत के लिए तशरीफ ले गये और यह अशआर फरमाये।

٣٨۔ مرض الحبيب فعدته فمرضت من حذرى عليه

महबूब बीमार हुआ तो मैं उसकी ऐआदत के लिए गया और उस पर अंदेशा कर के ख़ुद मैं बीमार पड़ गया।

٣٩۔ شفى الحبيب فعادنى فشفيت من نظرى اليه

महबूब अच्छा हो गया तो वह मेरी ऐआदत के लिए आया। उसको देखने से मुझे शिफा हो गई।

रबी बिन सुलेमान रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया कि हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह से तक़दीर के बारे में सवाल किया गया तो अल्लाह सुबहानहू तआला से ख़ेताब करते हुये कहा।

٤٠۔ ماشئت كان وان لم أشأ وما شئت ان لم تشالم يكن

तू जो चाहा हुआ अगरचे कि मैंने न चाहा हो। और मैं जो चाहा अगर तू नहीं चाहा तो वह नहीं हुआ।

٤١۔ خلقت العباد على ماعلمت ففى العلم يجرى الفتى والمسن

तूने अपने इल्म के मुताबिक़ बंदों को पैदा किया। पस उस इल्म में नौजवान और बूढ़ा दोनों चलते हैं।

٤٢۔ على ذامننت و حذا خذلت وهذا هنت وذالم تهن

इस पर तू ऐहसान किया और उसको रुसवा कर दिया। और इस को ज़लील किया। और उसको नहीं किया।

٤٣۔ فمنهم شقى و منهم سعيد ومنهم قبيح ومنهم حسن

पस उन में से कोई बद नसीब है और कोई ख़ुश नसीब है और कोई बद सूरत है तो कोई ख़ूबसूत है। शरह मुक़ामाते शरबीनी में है कि आलिम और जाहिल के तअल्लुक़ बताते हुये फरमाया।

٤٤۔ ومنزلة السفيه من الفقيه كمنزلة الفقيه من السفيه

बेवकूफ का मुक़ाम आलिम के पास ऐसा ही है जैसा कि आलिम का मुक़ाम बेवकूफ के पास है।

٤٥۔ فهذا زاهد فى قرب هذا وهذا فيه ازهد منه فيه

यह उसके नज़दीक जाने से दूर रहता है तो वह उस से भी ज़्यादा उस से दूर रहता है।

٤٦۔ اذا غلب الشقاء على سفيه تقطع فى مخالفة الفقيه

बेवकूफ पर जब बदबख़्ती ग़ालिब आ जाती है तो आलिम की मुख़ालिफत में फना हो जाता है(मुख़ालिफत पर उतर जाताह है।)

शरह मुक़ामाते शरीफी में है हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया।

٤٧۔ على معى حيثما يممت ينفعى قلبى وعاء له لابطن صندوق

मेरा इल्म मेरे साथ रहेगा जिस जगह इरादा करो मुझे फायदा देगा। मेरा दिल इसी के लिए बर्तन है। संदूक़ का पेट नहीं है।

ان كنت فى البيت كان العلم فيه معى او كنت فى السوق كان العلم فى السوق

अगर मैं घर में होता हूँ तो इल्म भी वहाँ मेरे साथ होता है या बाज़ारों में जाऊँ तो बाज़ार में भी मेरे साथ रहता है।

٤٩۔تعاظمنى ذنبى فلما قرنته بعفوك ربى كان عفوك اعظما

मेरे गुनाह मुझे बड़े मालूम हुये लेकिन जब मैं उसको तेरे अफू से मिला दिया। ऐ मेरे रब तो तेरी अफू उस से बड़ा निकला।

٥٠۔ ولما قسا قلبى وضاقت مذاهبى جعلت رجائى نحو عفوك مسلما

और जब मेरा दिल सख़्त हो गया और मेरे रास्ते तंग हो गये तो मैं अपनी उम्मीद को तेरी माफी की तरफ सीढ़ी बना लिया।

٥١- وما زلت ذا عفو عن الذنب لم تزل تجود و تعفو منة و تكرما

और तू अपने फज़्ल से हमेशा गुनाहों को माफ करता है और हमेशा जूद व सख़ा और अफ़ू व करम करता है।

मुन्दर्जा ज़ेल अशआर आप के दीवान में से इज़ाफा किये गये हैं। (अज़ मुतर्जिम)

मनाफेउल असफार:

سافر تجد عوضا عمن تفاقه وانصب فان لذيذ العيش فی النصب

सफर करो जिस से तुम जुदा हो रहे हो उसके ऐवज़ मिलेगा। मेहनत करो बेशक लज़्ज़त वाली ज़िंदगी मशक़्क़त में है।

انی رأيت وقوف الماء يفسده ان سال طاب وان لم يجرلم يطب

मैं देखा हूँ पानी का एक जगह ठहरा रहना उसको ख़राब कर देता है, अगर वह बहता है तो अच्छा रहता है अगर न बहे तो अच्छा नहीं रहता।

والاسد لولا فراق الغاب مافترست والسهم لولا فراق القوس لم يصب

अगर शेर जंगल न छोड़े तो वह शिकार नहीं कर सकता और और तीर कमान से जुदा न हो तो ठीकाना को नहीं पहुंच सकता।

التبر كالترب ملقی فی اماكنه والعود فی ارضه نوع من الحطب

और सोना अपनी जगह में पड़ा हुआ हो तो मिट्टी की तरह है और संदूक़ की लकड़ी अपनी ज़मीन में बस एक क़िस्म की लकड़ी है।

فان تغرب هذا عز مطلبه وان تغرب ذاك عز كالذهب

अगर यह अपने मुक़ाम से कूच किया तो अज़ीज़ व नादिर हुआ और अगर वह अपनी जगह से हरकत करे तो सोना बन कर

इज़्ज़त पाया।

इबादतुल जाहिल:

عبادة جاهلين بغير علم كقرطاس تراه بلاكتاب

बग़ैर इल्म के जाहिलों की इबादत बग़ैर लिखे हुये सफेद कागज़ की तरह है। (यानी बे वज़न व बे क़ीमत है।)

मीज़ानुल मारफत:

اذا حاراً مرك فی معنيين ولم تدر حيث الخطا والصواب

जब तेरा मामला दो चीज़ों के दरमियान परेशान हुआ और गलत और सही को पहचान न सके।

فخالف هواك فان الهوىٰ يقود النفوس الی مايعاب

पस तू ख़्वाहिशे नफ्स की मुख़ालेफत कर क्योंकि ख़्वाहिशे नफ्स इंसान को अैब दार चीज़ों की तरफ ले जाती है।

कुज़ातुद्दहर:

قضاة الدهر قد ضلو فقد بانت خسارتهم
فباعوا الدين بالدنيا فما ربحت تجارتهم

ज़माने के क़ाज़ी भटक चुके हैं और उनका नुक़सान ज़ाहिर हो चुका है पस उन्हों ने दीन को दुनिया के बदल बेच दिया और उनकी तेजारत नफा बख़्श नहीं हुई।

ज़िल्लुत्तअल्लुम:

تصبر علی مراجفا من معلم فان رسوب العلم فی نفراته

उसताद की सख़्तियों पर तू सब्र कर क्योंकि इल्म की पुख़्तगी उसकी सख़्तियों को बरदाश्त करने में है।

ومن لم يذق ذل التعلم ساعة تجرع ذل الجهل طول حياته

और जो कोई एक साअत के लिए भी तलबे इल्म की ज़िल्लत को न चख सके तो वह ज़िंदगी भर जेहालत की ज़िल्लत को घूंट घूंट पीता रहेगा।

ومن فاته التعليم وقت شبابه　　فكبر عليه اربعا لو فاته

जिस आदमी से उसकी जवानी में इल्म छूट जाये तो उस पर मौत की चार तकबीरें (यानी नमाज़े जनाज़ा) पढ़ो।

حياة الفتى والله بالعلم والتقى　　اذا لم يكونا لا اعتبار لذاته

नौजवान की ज़िंदगी अल्लाह की क़सम इल्म और परहेज़गारी से है। जब वह दोनों (यानी इल्म व तक़्वा) न हो तो उसका कोई ऐतबार नहीं।

अल फरहुल क़रीब:

صبر ا جميلا ماقرب الفرجا　　من راقب الله في الامور نجا

सब्रे जमील कुशादगी को किस क़द्र क़रीब कर देता है, जो शख़्स मामलात में अल्लाह पर नज़र रखता है वह कामयाब हो जाता है।

من صدق الله لم ينله اذى　　و من رجاه يكون حيث رجا

जो अल्लाह के साथ रास्तबाज़ी का मामला करता है उसको तकलीफ नहीं पहुंचती और जो उस से उम्मीद रखता है। उसकी उम्मीद पूरी होती है।

अस्सिद्दीक़ वल अदू:

و ليس كثير ا ألف خل لواحد　　و ان عدوا واحدا لكثير

एक आदमी के लिए हज़ार दोस्त ज़्यादा नहीं। मगर एक दुश्मन उसके लिए बहुत है।

बज़्लुर्रा:

ولا تعطين الراى من لايريده　　فلا انت محمود ولا الراى نافعه

जो आदमी तेरी राये का ख़्वाहिश मंद नहीं उसको हरगिज़ राये मत दे न तू ही क़ाबिले तारीफ होगा न तेरी राये उसके लिए मुफीद होगी।

तलबुल उला:

بقدر الكد تكتسب المعالى　　ومن طلب العلا سهر الليالى

मेहनत के मुताबिक़ बलंदियाँ मिलती हैं। और जो कोई बलंदी चाहता है तो वह रातों में जागे।

و من رام العلا من غير كد　　اضاع العمر فى طلب المحال

और जो बग़ैर मेहनत के बलंदी चाहता है तो वह ना मुम्किन चीज़ की तलाश में उम्र ज़ाय करता है।

تروم العزثم تناول ليلا　　يغوص البحر من طلب اللآلى

तू इज़्ज़त चाहता है फिर रात में सोता है। जिस शख़्स को मोतियों की तलाश होती है वह समुंद्र में गोता लगाता है।

अर्रग़बतु फिज़्ज़यादत:

كلما ادبنى الدهر　　أرانى نقص عقلى
و اذا ماازددت علما　　زادنى علماًبجهلى

ज़माना जब भी मुझे तालीम दिया मेरी अक़्ल की कमी मुझे नज़र आई और जब भी मेरे इल्म में ऐज़ाफा हुआ तो उस से मेरी जेहालत का मुझे पता चला।

हुब्बे अहले बैत:

يا راكبا قف بالمحصب من منى　　واهتف بقاعد خيفها والناهض

ऐ सवार मेना की वादिये महसब में ठहर जा। और ऐलान कर मुक़ामे ख़फीफ में बैठे हुये और खड़े हो कर।

سحر ا اذا فاض الحجيج الى منىٰ　　فيضا بملتطم الفرات الفائض
ان كان رفضا حب آل محمد　　فليشهد الثقلان انى رافضى

सुबह के वक़्त जबकि हुज्जाजे केराम मिना की तरफ चलते हैं दरयाये फुरात के बहाव की तरह अगर आले मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुहब्बत करना राफज़ियत है तो जिन व इन्स गवाह रहें कि मैं राफ़ज़ी हूँ।

آل النبى ذريعتى　　وهمو اليه وسيلتى
ارجو بهم اعطى غدا　　بيدى اليمين صحيفتى

आले नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरा ज़रिया और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास मेरा वसीला हैं उन के ही वसीला से मुझे कल उम्मीद है कि मेरा आमये आमाल मेरे सीधे हाथ में दिया जायेगा।

يا آل بيت رسول الله حبكم فرض من الله فى القرآن انزله

ऐ आले नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तुम्हारी मुहब्बत अल्लाह की तरफ से फर्ज़ है अल्लाह ने कुरआन में उसका हुक्म दिया।

يكفيكم من عظيم الجخرأنكم من لم يصل عليكم لا صلاة له

तुम्हारी अज़मत फ़ख्र के लिए काफी है यह कि जो तुम पर दुरूद नहीं भेजता उसकी नमाज़ नहीं होती।

اذا نحن فضلنا علياً فاننا روافض بالتفضيل عند ذوى الجهل

जब हम ने हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहु की फज़ीलत बयान की तो, बेशक हम इस वजह से जाहिलों के नज़दीक राफज़ी बने।

لو شق قلبى لبدا وسطه سطر ان قد خطا بلاكاتب

अगर मेरे दिल को शक़ किया जाये तो उसके दरमियान में दो ऐसी सतरें ज़ाहिर होंगी जो बगैर कातिब के लिखी गई हैं।

الشرع والتوحيد فى جانب وحب اهل بيت فى جانب

एक जानिब शरीअत व तौहीद है तो दूसरी जानिब अहले बैत की मुहब्बत है।

नूरुल अबसार में है कि आप ने सय्यदना अली कर्रमल्लाहु वजहहू की मुहब्बत में फरमाया और यह हदीस नबवी:

من تولىٰ عليا كان مولى' لرسول الله عليه الصلوٰة والسلام

यानी जो आदमी सय्यदना अली रज़ि अल्लाहु अन्हू को दोस्त रखता है तो वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का भी दोस्त है। कि मोनासिबत से इमाम ने यह कलम फरमाया।

قالوا ترفضت قلت كلا مالرفض دينى ولا اعتقادى

लोगों ने कहा कि मैं राफज़ी हो गया हूँ तो मैं उन से कहता हूँ कि ऐसा हरगिज़ नहीं है राफज़ियत न मेरा दीन है न वह मेरा ऐतेक़ाद है।

ان كان حب الولى رفضا فاننى ارفض العباد

अगर वली (सय्यदना इमाम अली रज़ि अल्लाह अन्हू) से मुहब्बत रखना राफज़ियत है तो बिला शुबहा मैं तमाम लोगों में सब से बड़ा राफज़ी हूँ।

रशगतुस्सारी स. २५ पर है जो कि इमाम साहब ने फरमाया

و لما رأيت الناس قد ذهبت بهم مذاهبهم فى البحر الغى والجهل

और जब मैं लोगों को देखा कि उन के मज़ाहिब उन को गुमराही और जेहालत के समुंद्रों में ले गये हैं (गर्क़ कर दिये हैं)

وكبت على اسم الله فى سفن النجا وهم اهل بيت المصطفىٰ خاتم الرسل

तो मैं अल्लाह पाक का नाम ले कर नेजात की कश्ती में सवार हो गया और वह (कश्ती) ख़ातिमुल मुरसलीन मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अहले बैत हैं।

وامسكت حب الله و هو ولا ؤهم كما قد أمرنا بالتمسك بالحبل

और मैं अल्लाह की रस्सी को थाम लिया और वह (रस्सी) अहले बैत की मुहम्मत है जैसा कि हम को अल्लाह की रस्सी थामने का हुक्म दया गया है।

لعمرك ما الا نسان الا ابن يومه علىٰ ماتجلى يومه لا ابن امسه

तेरी ज़िंदगी की क़सम इंसान का ऐतबार सिर्फ इस हालत से होता है जिस में उसका दिन ज़ाहिर होता है न कि गुज़श्ता दिन का (बाप दादा का ऐतबार नहीं)

وما الجخر باعظم الرميم وانما فخار الذى يبغى الفخار بنفسه

और बूसीदा वड्डियों (आबा व अजदाद) पर फख्र नहीं होता और बेशक फख्र तो उस आदमी को है जो अपने ज़ात पर फख्र करता है।

عاشر کرام الناس تعش کریما　　ولا تعاشر اللئام فتنب الی اللؤم

शरीफ इंसान के साथ रह तो शरीफ आदमी की तरह तू ज़िंदगी गुज़ारेगा और कमीनों के साथ मत रह वरना कमीनों की तरफ तू मंसूब किया जायेगा।

किताब नूरुल अबसार में हज़रत इमाम अबू बकर बेहकी़ रहमतुल्लाह अलैह ने अपनी किताब मनाकि़बे इमामे शाफई में बयान फरमाया है कि एक मर्तबा हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह से अर्ज़ किया गया जिस किसी मजलिस में अहले बैत की फज़ीलत का बयान होता है तो लोग उसको सुनने के बजाये कहते हैं यह राफज़ी हैं यहाँ से चलो। उस पर इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने यह अशआर फरमाये।

و اذا فی مجلس ذکروا علیا　　وسبطیه و فاطمه زکیه

लोग जब मजलिस में हज़रत सय्यदना अली रज़ि अल्लाहु अन्हू का ज़िक्र करते हैं और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दोनों नेवासों और सय्यदतुना फातेमा ज़किया रज़ि अल्लाहु अन्हा का ज़िक्र करते हैं।

یقال تجاوزوا یاقوم هذا　　فهذامن حدیث الرافضیة

برئت الی المهیمن من اناس　　یرون الرفض حب الفاطمه

तो कहा जाता है ऐ लोगो उसको छोड़ दो यह तो रफज़ियों की बातें हैं।

मैं अल्लाह की जनाब में बरअत ज़ाहिर करता हूँ ऐसे लोगों से। जो सय्यदतुना फातेमा रज़ि अल्लाहु अन्हा से निस्बत रखने वालों से मुहब्बत को रिफज़ समझते हैं।

عواقب مکروه الامور خیار　　وایام شر لاتردم قصاد

बाज़ ना पसंदीदा उमूर का अंजाम अच्छा होता है और मुसीबत के दिन छोटे होते हैं जो हमेशा नहीं रहते।

و لیس بباق بوسها و نعیمها　　اذا کرلیل ثم کرنهار

दुनिया में रंज व राहत के दिन एक हालत पर नहीं रहते। रात के बाद दिन ही आता है।

इमाम साहब के अक्वाल:

आप अदब व ज़बान के माहिर थे मुख्तसर कलेमात में नसीहत व मआरिफ की बहुत सी बातें फरमा देते। ज़ेल में बतौर नमूना आप के चंद अक्वाल दर्ज किये जाते हैं।

قال الامام رحمة الله علیه

١۔ استعینوا علی الکلام باصمت و علی الاستنباط بالفکر

गुफतगू के लिए ख़ामूशी से मदद हासिल करो। और इस्तिम्बात के लिए गौर व फिक्र से काम लो।

٢۔ من وعظ اخاة سرا فقد نصحه و زانه ومن وعظ علانیة فقد فضحه و خانه

जो आदमी अपने भाई को तन्हाई में नसीहत करता है तो वह उसके साथ ख़ैर ख़्वाही और इस्लाह करता है। और जो ऐलानिया नसीहत करता है तो वह उसको रुसवा करता है और उसके साथ ख़ेयानत करता है।

٣۔ اظلم الناس لنفسه من تواضع من لایکومه و رغب فی مودة من لاینفعه و قبل مدح من لایعرفه۔

अपने आप पर सब से बड़ा ज़ुल्म करने वाला शख़्स वह है जो तवाज़ो से पेश आता है उस आदमी के साथ जो उसकी इज़्ज़त नहीं करता। और मुहब्बत करना चाहता है उस आदमी से जो उसके लिए फायदा मंद नहीं है और हर उस आदमी की तारीफ

कुबूल कर लेता है जिस को यह नहीं जानता।

٤۔ من غلبت علیه شدة الشهوة لحب الدنیا لزمته العبودیة لاهلها۔

जिस आदमी पर दुनिया की मुहब्बत में ख़्वाहिशे नफ्स गालिब आ जाये तो उसको दुनियादारों की गुलामी ज़रूरी हो जाती है।

٥۔ من رضیٰ بالقنوع زال عنه الخضوع

जो शख़्स क़नाअत पर राज़ी रहेगा तो उसको दूसरों के सामनेआजिज़ी की ज़रूरत नहीं।

٦۔ قال ماشبعت منذ ست عشرة سنة لان الشبع یثقل البدن و یقسی القلب ویزیل الفطنة و یجلب النوم و یضعف صاحبه من العبادة۔

आप ने फरमाया मैं सोलह साल से पेट भर खाना नहीं खाया इस लिए कि पेट भर खाना बदन को बोझल और दिल को सख़्त कर देता है और उस आदमी को इबादत में सुस्त कर देता है।

٧۔ راس التعبدا تقلیل الطعام

इबादत की अस्ल कम खाना है।

٨۔ اعلم ان من صدق الله نجا ومن اشفق علی دینه سلم من الردی ومن زهد فی الدنیا قرت عیناه بما یراه من ثواب الله تعالیٰ غدا۔

जानो! जो शख़्स अल्लाह तआला से रास्तबाज़ी का मामला करता है वह नेजात पाता है और जो अपने दीन के बारे में डरता है वह हलाकत से महफ़ूज़ रहता है और जो दुनिया में ज़ोहद (बे रगबती) इख़्तेयार करता है कल (क़यामत में) उसकी दोनों आँखें अल्लाह तआला के सवाब को देख कर ठंडी होंगी।

٩۔ من کان فیه ثلاث خصال فقد استکمل الایمان من امر بالمعروف وائتمر و نهی عن المنکر وانتهیٰ حافظ علی حدود الله تعالیٰ۔

जिस आदमी में तीन बातें होंगी यक़ीनन उसका ईमान कामिल हो जायेगा (१) नेकी का हुक्म दे और ख़ुद अमल करे (२) बुराई से रोके और ख़ुद भी रुके। (३) और अल्लाह तआला के हुदूद की हिफाज़त करे (अहकाम की पाबंदी करे)

١٠۔ کن فی الدنیازاهد وفی الأخرة راغبا و اصدق الله تعالیٰ فی جمیع امورك تنج فی الناجین۔

दुनिया से ज़ोहद और आख़ेरत की रगबत करने वाला बन जा। और अपने तमाम मामलात में अल्लाह तआला के साथ रास्बाज़ी इख़्तेयार कर। नेजात पाने वालों के सथ तुझे नेजात मिलेगी।

١١۔ من اطاع الله تعالیٰ بالعلم نفعه سره

जो कोई इल्म के साथ अल्लाह तआला की ऐताअत करेगा तो उसके बातिन को नफा देगा।

١٢۔ مامن احد الا وله محب و مبغض فاذا کان کذا لك فكن مع اهل الطاعة لله عز وجل۔

हर एक के लिए एक दोस्त है और हर एक के लिए दुश्मन, और जब ऐसा है तो तुम अल्लाह बुज़ुर्ग व बरतर की ऐताअत करने वालों के साथ रहो।

١٣۔ التمکین درجة الانبیاء ولا یکون التمکین الا بعد المحنة فاذا امتحن صبرو اذا صبر مکن۔

तमकीन अंबिया अलैहिमुस्सलाम का दर्जा है तमकीन का दर्जा

आज़माइश के बाद हासिल होता है। जब (बंदा) को आज़माया जाता है तो सब्र करता है और जब जब करता है तो तमकीन के दर्जा पर फायज़ होता है।

۱٤۔ اظلم الظالمين لنفسه الذى اذا ارتفع جفا اقاربه و انكر معارفه واستخف بالاعراف و تكبر على ذوى الفضل۔

अपने नफ्स पर सब से बड़ा ज़ालिम वह शख़्स है जो बलंदी पर पहुंचता है तो अपने रिश्तेदारों पर ज़ुल्म करता है और ऐहसानात का इनकार करता है। और शरीफ लोगों को हलका समझता है साहबे फज़ीलत हज़रात पर तकब्बुर करता है।

۱٥۔ كيف يزهد فى الدنيا من لايعرف قدر الأخرة و كيف يخلص من الدنيا من لايخلو من الطمع الكاذب و كيف يسلم من لايسلم الناس من لسانه و يده و كيف ينال الحكمة من لايريد بقوله وجه الله عزو جل۔

वह शख़्स दुनिया से कैसे बे रगबत रहेगा जो आख़ेरत की क़द्र नहीं जानता। और वह शख़्स दुनिया से कैसे छुटकारा पायेगा जो छोटी हिर्स से ख़ाली नहीं होता और वह शख़्स कैसे सलामत रहेगा जिस की ज़बान और हाथ से दूसरे लोग सलामत न रहें। वह आदमी हिकमत को कैसे पा सकेगा जिस का मक़सद अपनी गुफ्तगू से अल्लाह बुज़ुर्ग व बरतर की रज़ा मंदी न हो।

۱٦. مثل الذى يطلب العلم بلاحجة كمثل حاطب الليل يحمل حزمة حطب و فيه افعى تلد غه وهو لايدرى۔

जो शख़्स बगैर समझे बूझे इल्म हासिल कर लेता है तो उसकी ऐसी मिसाल है जैसे कोई शख़्स रात को लकड़ियों का गट्ठा बांधे और उस में कोई साँप उसको काट ले।

۱۷. من اذا ارضيته قال فيك ماليس فيك كذلك اذا غضبته قال فيك ماليس فيك۔

जो शख़्स इत्तेहाद व इत्तेफाक़ की सूरत में तुम्हारे सिफात की ऐसी तारीफ करे जो तुम में मौजूद न हों वह दुश्मनी में तुम्हारे वह ओयूब बयान करेगा जो तुम में नहीं है।

۱۸. السفلة من يكون اكرامه لمخالفيه اكثر من اكرامه مذهبه لانه يريد ان يجعل العدو وليابنفاقه وذالك لايكون .

अहमक़ शख़्स अपने अहले मज़हब को छोड़ कर दूसरे मज़हब वालों की इज़्ज़त करता है वह इस रेयाकारी से उन के दिलों में घर करना चाहता है हालांकि यह नामुम्किन है।

۱۹. العلم جهل عند اهل الجهل كمان لجهل جهل عنداهل العلم كفىٰ للعلم فضيلته انه يدعيه من ليس فيه و كفىٰ للجهل سوءً بان يتبرأمن هو فيه و يغضب اذا نسب اليه۔

उलमा के नज़दीक जेहल जेहालत है। इसी तरह जाहिलों के नज़दीक इल्म जेहालत है। इल्म की फज़ीलत यह क्या कम है कि बे इल्म उसके मद्दई हैं। और जेहल की बुराई यह क्या कम है कि जाहिल अपने जेहल के मुनकिर हैं। अगर उन को जाहिल कह दो तो गुसस्सा आ जाता है।

۲۰. من احب ان يفتح الله على قلبه نورالحكمة فعليه بالخلوة قله الاكل وترك مخالطة السفها و بغض العلماء الذين ليس معهم دين والادب.

जो यह चाहता हो कि अल्लाह तआला नूरे हिकमत उसके दिल पर खोले वह ख़लवत इख़्तेयार करे। कम खाये और अहमक़ों की सोहबत तर्क कर दे और उन उलमा से ऐहतेयात करे जिन के पास न अदब है न तहज़ीब है।

२१. किसी ने इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह से कुरआन के क़दीम होने का सवाल किया तो आप ने फरमाया:

كان اللّٰه و كان كلامه او كان اللّٰه و ما كان كلامه

यानी ख़ुदा है और उसका कलाम उसके साथ है क्या ऐसा भी कोई वक़्त था कि जब ख़ुदा हो और उसका कलाम उसके साथ न हो।

नसीहत आमेज़ ताज़ियत:

मरे बाज़ साथीयों ने मुझे बताया कि अब्दुर्रहमान बिन मेहदी के साहबज़ादे का इंतेक़ाल हुआ तो इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने उन के लिए पयामे ताज़ियत रवाना किया।

'ऐ मेरे भाई तुम अपने नफ्स को इस चीज़ से तसल्ली दो जिस से तुम दूसरों को तसल्ली देते हो और अपने लिए उस काम को ना पसंद करो जो दूसरों के लिए ना पसंद करते हो और अपने उस काम को बुरा समझो जो दूसरों की तरफ से बुरा समझते हो। जानो कि! सख़्त तरीन मुसीबत यह कि ख़ुशी भी जाती रहे और अज्र से भी महरूमी हो। क्या हाल होगा जबकि यह दोनों गुनाह किसी में जमा हो जायें। ऐ मेरे भाई तेरा हिस्सा जो तुझ से दूर है तो उसकी ख़्वाहिश करने से पहले वह तुझ से क़रीब हो जाये तो तू उसको हासिल करे अल्लाह तआला मुसीबतों के मौक़े पर तुझे सब्र अता फरमाये हमारे और तेरे लिए सब्र से अज्र अता फरमाये।

मैं ताज़ियत का पयाम भेज रहा हूँ लेकिन मुझे ख़ुद अपनी ज़िंदगी का भरोसा नहीं लेकिन यह तरीक़ा दीनी है ताज़ियत देने वाला और वह जिस को ताज़ियत दी जा रही है (मरने वाले के बाद अगर जबकि वह दोनों एक ज़माना तक ज़िंदा रहें)हमेशा रहने वाले नहीं हैं।

वफात:

रबी रहमतुल्लाह अलैह का क़ौल है कि इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के इंतेक़ाल के पंद्रह रोज़ पेश्तर उन्हों ने एक ख़्वाब देखा कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की मौत वाक़े हुई है। और जनाज़ा उठाये जाने की तैयारी थी।

सुबह को बाज़ असहाब से इस ख़्वाब की ताबीर दरयाफ्त की तो जवाब मिला कि यह दुनिया के बहुत बड़े आलिम की मौत की ख़बर है। थोड़े ही दिन गुज़रे थे कि इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने वफात पाई।

अबू सईद रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया कि मैं ने हज़रत इमाम शाफई को यह दो शेर कहते हुये सुना।

انی اریٰ نفسی تتوق الی مصر ومن دونها ارض المهامة والفقر

अपने नफ्स को शहर मिस्र जाने को मुश्ताक़ पाता हूँ। और उसके सेवा बंजर और बे आब व गयाह वादी है।

فو اللّٰه مادری أللخفض والغنی اقاد الیها ام اقادالی القبر

पस ख़ुदा की क़सम मैं नहीं जानता कि मैं आसूदगी और तवंगरी की तरफ जा रहा हूँ या क़ब्र की तरफ पहुंचाया जा रहा हूँ।

अबू सईद रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया ख़ुदा की क़सम चंद दिन भी नहीं गुज़रे कि आप उन दोनों की तरफ पहुंचा दिये गए।

मज़नी रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया कि जिस दिन आप की वफात हुई मैं उस रोज़ सुबह आप के पास पहुंचा और अर्ज़ किया ऐ अब्दुल्लाह (इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह की कुन्नियत) आज आप का मेज़ाज कैसा है तो आप ने फरमाया आज मैं नुनिया से रुख़्सत हो रहा हूँ। अपने भाईयों से जुदा हो रहा हूँ और मौत का प्याला पी रहा हूँ। और मैं नहीं जानता कि मैं जन्नत की तरफ जा

रहा हूँ कि अपने नफ्स को मुबारक बाद दूँ या वह नफ्स दोज़ख़ की तरफ जा रहा है कि उसकी ताज़ियत करूँ फिर आप उस वक़्त यह अशआर कहने लगे।

ولما قسیٰ قلبی وضاقت مذاهبی   جعلت الرجاء منی لعفوک سلما

जब मेरा दिन सख़्त हो गया और मेरे रास्ते तंग हो गये। तो मैं ने तुझ से माफी के लिए उम्मीद को सीढ़ी बना लिया।

تعاظمنی ذنبی فلماقرنته   بعفوک ربی کان عفوک اعظما

मेरे गुनाह मुझे बड़े मालूम हुये जब मैं उनको ऐ परवरदिगार तेरी माफी के साथ मिला दिया तो तेरी माफी सब से बड़ी निकली।

فمازلت ذاعفو من الذنب لم تزل   تجو دوتعفو منه وتکرما

तू गुनाहों को हमेशा माफ करने वाला है और अपने फज़्ल व करम से हमेशा सख़ावत करता और माफ करता है।

हाफिज़ इब्ने हजर अस्क़लानी रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि आप को बवासीर की सख़्त शिकायत थी अक्सर सवारी की हालत में ख़ून जारी हो जाता तो आप के पायजामे से बह कर मोज़े ताक पहुंच जाता उस तकलीफ की वजह से आप बेहद कमज़ोर हो गये थे इसी दौरान में आप का सख़्त मुख़ालिफ अशहब बिन अब्दुल अज़ीज़ मालमी का हमेशा यह काम था कि वह आप के लिए बद दुआ करता रहता।

इब्ने अब्दुल हेकम कहते हैं मैं ने इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह से अर्ज़ किया कि मैं ने ख़ुद देखा है कि अशहब सजदा में पड़ा हुआ यह दुआ कर रहा है ऐ ख़ुदा शाफई रहमतुल्लाह अलैह को उठा ले वरना मालिकी फिक़्ह सब मिट जायेगा उस पर आप ने यह फरमाया। बहुत से लोग मेरे मरने की तमन्ना कर रहे हैं मैं अगर मर भी गया तो भला मौत से और कौन बच सकता है अगर इल्म से उसको समझ हासिल हुई तो वह उसको ख़ूब समझेगा कि मैं

मर भी गया तो मेरे लिए जो बद दुआ करता है वह कब हमेशा रहने वाला है। चुनान्चे नक़्ल किया गया है कि इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह की वफात के अठारह दिन बाद अशहब का भी इंतेक़ाल हो गया।

आप की वफात:

माहे रजब २०४ हि. शबे जुमा आप इंतेक़ाल फरमाये और जुमा के दिन तदफीन अमल में आई उस वक़्त आप की उम्र शरीफ ५४ साल थी और हज़रत सिर्री बिन हेकम रहमतुल्लाह अलैह ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई आप की क़ब्र शरीफ के सिरहाने एक बड़ा कुतबा नसब है और उस पर यह लिखा हुआ है।

هذا قبر محمد بن ادریس الشافعی أمین اللّٰه

यह मुहम्मद बिन इदरीस शाफई रहमतुल्लाह अलैह की क़ब्र शरीफ है जो अल्लाह के अमीन हैं।

मुहम्मद बिन उमर राज़ी रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया कि आप माहे रजब की आख़िरी तारीख़ २०४ हि. शबे जुमा बवक़्ते ईशा इंतेक़ाल फरमाये और रोज़े जुमा बाद नमाज़े अस्र तदफीन अमल में आई।

तदफीन:

जदीद क़ाहेरा के जोनूब में और क़दीम क़ाहेरा के मश्रिक़ में थोड़े फासले पर आप का मज़ार एक गुंबद में वाक़े है रोज़ाना सुबह से शाम तक कई हज़ार आदमी हाज़िर हो कर ज़ेयारत करते रहते हैं। इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के इंतेक़ाल के कुछ दिनों बाद ख़्याल हुआ कि उन की नाशे मुबारक को बगदाद मुंतक़िल किया जाये। क़ब्र खोदी जा रही थी कि अंदर से इतनी तेज़ ख़ुशबू महकने लगी कि लोगों के हवास बाख़्ता हो गये। और वैसा ही छोड़ दिया गया।

इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह की वफात के बाद मुबशेरात

अबू सईद रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया कि आप की वफात के बाद आप को ख़्वाब में देखा तो अर्ज़ किया कहा अल्लाह तआला ने आप के साथ क्या मामला फरमाया तो आप ने फरमाया मुझे सोने की कुर्सी पर बैठाया और मुझ पर उम्दा मोती बिखेरे।

इमाम बहेक़ी रहमतुल्लाह अलैह ने उसमान से रिवायत की है कि मैंने ख़्वाब में देखा कि क़यामत क़ायम हो गई है और हश्र बरपा है और अर्श के नीचे से एक पुकारने वाले ने आवाज़ दी कि अबू अब्दुल्लाह, अबू अब्दुल्लाह, अबू अब्दुल्लाह, अबू अब्दुललाह को जन्नत में दाख़िल करो। मैंने एक फरिशते से जो मेरे बाज़ू खड़ा हुआ था। दरयाफ्त किया कि यह कौन लोग हैं तो उस ने कहा कि इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह इमाम सुफयान सौरी रहमतुल्लाह अलैह। इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह और इमाम अहमद बिन हंबल रहमहुमुल्लाह अलैहिम अजमईन हैं।

असफहानी रहमतुल्लाह अलैह रिवायत करते हैं कि मैं ने हुज़ूर अलैहिस्सलाम को ख़्वाब में देखा और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आप के चचा की औलाद में मुहम्मद बिन इदरीस शाफई रहमतुल्लाह अलैह का इंतेक़ाल हो गया है तो क्या हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन के लिए शिफाअत किस अमल की वजह से फरमाई गई है तो इर्शाद फरमाया शाफई मुझ पर ऐसा दुरूद पढ़ा करते थे जो आज तक किसी ने नहीं पढ़ा मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह वह दुरूद क्या है फरमाया:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كُلَّمَاذَكَرَهُ الذَّاكِرُوْنَ وَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كُلَّمَا غَفَلَ عَنْهُ الْغَافِلُوْنَ.

तर्जमा: मुसलमानों! इस दुरूद शरीफ को कसरत से पढ़ा करो।

करामात: जब इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने मज़हबे मालकिया के बाज़ मसाइल के रद में एक किताब लिखी तो आप की शिकायत हाकिमे मिस्र से की गई और हाकिम से कहा गया कि अगर इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह मिस्र से न निकाला गया तो शहर मिस्र में बद अमनी आम हो जायेगी। उस पर हाकिम ने आप को बुलवा कर हुक्म दिया कि आप मिस्र छोड़ दीजिये। इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने हाकिम के चेहरे को देख कर फरमाया अगर कुछ हर्ज न हो तो मुझे तीन दिन की मुहलत दीजिये। उस पर हाकिम ने हुक्म दिया कि बेहतर है। तीसरी ही शब को उसका अचानक इंतेक़ाल हो गया लोगों को उस पर तअज्जुब हुआ तो आप ने फरमाया :

مَنْ قَالَ الْقُرْآنَ مَخْلُوْق" فَهُوَ كَافِرٌ۔

अल्लाह जिस को चाहता है मिटा देता है और जिस को चाहता है क़ायम रखता है।

२. इमाम रबी रहमतुल्लाह अलैह कहते हैं मि मैं बूवैती, मज़नी, और मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह की वफात से कुछ पहले आप के पास पहुंचे। इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने हम को गौर से देखा और बहुत देर तक ख़ामूश रहे फिर हम चारों की तरफ मुख़ातब हो कर इमाम बूयती से फरमाया ऐ अबू याक़ूब रहमतुल्लाह अलैह तुम अनक़रीब लोहा पहन कर मर जाओगे। और एक मज़नी मिस्र में तुम्हारा मर्तबा बलंद होगा और एक तवील ज़माना पाओगे और जिस में तुम्हारी रिफअत उलूये शान रहेगी और मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह से फरमाया कि तुम अपने बाप के तरीक़ये मालकिया की जानिब पलट जाओगे

और मुझ से फरमाया कि ऐ रबी तुम्हारी वजह से मेरी किताबों की नश्र व इशाअत मनफअत बख़्श रहेगी फिर इमाम बुवेती से फरमाया कि ऐ बुवेती उठो और मेरा हलक़ये दर्स संभालो इमाम रबी फरमाते हैं कि इमाम शाफई का इर्शाद हर्फ ब हर्फ सही साबित हुआ चारों की तफसील यह है।

१. इमाम बुवैती रहमतुल्लाह अलैह ख़ल्क़े कुरआन के मुनकर थे आप ने फतवा दिया था कि :

مَنْ قَالَ الْقُرْآن مَخْلُوق" فَهُوَ كَافِرُ

जिस ने यह कहा कि कुरआन मख़्लूक़ है वह काफिर है। उस पर आप को बगदाद में गिरिफ्तार कर के जेल भेज दिया गया और वहाँ पर पाँव और गले में लोहे के तौक़ पहना दिये गये और ज़ंजीरों से जकड़ दिया गया चुनान्चे बगदाद के जेल ख़ाना में उसी हालत में आप का इंतेक़ाल हो गया।

२. इमाम मज़नी रहमतुल्लाह अलैह मज़हबे शाफई पर बकसरत तसानीफ लिखी जो मशहूर व मारूफ हैं आप ज़ाहिद, मुजतहिद और बड़े मुनाज़िर थे इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह फरमाया करते थे कि मज़नी मेरे मज़हब का नासिर है।

३. इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह की वफात कुछ क़ब्ल ही इमाम हमीदी रहमतुल्लाह अलैह ने इमाम बुवैती रहमतुल्लाह अलैह से फरमाया कि आप मसनदे इमामत पर बैठिये इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्दों में आप से बेहतर कोई शख़्स नहीं है उस पर मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल हेकम रहमतुल्लाह अलैह ने इमाम हमीदी रहमतुल्लाह अलैह से फरमाया कि तुम गलत कहते हो उस पर उन में और इमाम हमेदी में तेज़ गुफतगू हुई और मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह उस हल्क़े को छोड़ कर अलाहेदा हो गये।

४. इमाम रबी बिन सुलेमान रहमतुल्लाह अलैह से भी इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह की किताबों की बे हद इशाअत हुई। इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह फरमाया करते थे रबी रहमतुललाह अलैह ने मेरी बड़ी ख़िदमत की है अगर इल्म घोल कर पिलाने की चीज़ होती तो मैं उन्हें घोल कर पिलाता।

शेख़ अकबर मुहियुद्दीन बिन अरबी रहमतुल्लाह अलैह ने फुतूहाते मक्किया में लिखते हैं कि एक बुजुर्ग ने ख़िज़्र अलैहिस्सलाम से इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के बारे में सवाल किया जो जवाब यह मिला कि वह औताद में से थे। शेख़ अकबर ने यह भी इज़ाफा फरमाया कि शाफई शरीअत ज़ाहिरी के ऐसे पाबंद थे कि आप की तरीक़त का बातनी रुत्बा आप के हम अस्रों पर ज़ाहिर न हो सका।

आप की वफात पर कई लोगों ने क़सीदे लिखे हैं बतौर इख़्तेसार चंद दर्ज किये जाते हैं।

१. इमाम राज़ी रहमतुल्लाह अलैह ने अपनी किताब मनाक़िब के सफहा १५४ पर लिखा है कि अहले ख़ुरासान इस अमर पर मुत्तफिक़ हैं कि ख़ुरासान में इल्मे लोगत व नौह में अबुल हसन अली बिन क़ासिम हुज़ामी रहमतुल्लाह अलैह साहबे किताब मुख़्तसरुल औनी से बढ़ कर कोई आलिम न था और हुज़ामी रहमतुल्लाह अलैह ने अपने अशआर में हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह पर फख़्र करते हुये फरमाते हैं।

تلقيت دينى عن قريش و هاشم   ومن بيته كان الحطيم وزمزما

मैं अपना दीन कुरैश और हाशिम से सीखा हूँ, और उन के घर से हतीम व ज़मज़म का ज़ोहूर हुआ।

ففزت بدين الهاشمى محمد   وبالعروة الوثقىٰ التى لن تفصما

पस मैं मुहम्मद हाशमी रहमतुल्लाह अलैह के दीन के ज़रिया

कामयाब हो गया। और अपने मज़बूत हलक़े (कटरा) के ज़रिया जो हरगिज़ नहीं टूटेगा।

ادين بدين الشافعي و هديه   وابرأ الى رحمن ممن يخنهما

हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के मसलक और आप की सीरत को मैं इख़्तेसार करता हूँ और जो आदमी उस में ख़ेयानत करता है उस से अल्लाह तआला की जनाब में जो रहमान है अपनी बरअत ज़ाहिर करता हूँ।

२. अबू बकर मुहम्मद हसुने बिन दरीदाज़दी रहमतुल्लाह अलैह ने अपने एक मशहूर क़सीदा में हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह की तारीफ करते हुये फरमाते हैं।

الم تر آثار ابن ادريس بعده   دلائلها فی المشكلات لوامع

क्या तुम नहीं देखते इब्ने इदरीस (हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह) के आसार को, जिन के दलाइल मुश्किलात में चमकते हैं।

معالم يفنى الدهر و هی خوالد   و تنحفض الاعلام و هی روافع

और वह ऐसे निशान हैं कि ज़माना ख़त्म हो जायेगा और सारे झंडे झुक जायेंगे लेकिन वह सर बलंद रहेंगे।

تو اخا الهدى و استنقذته يدالتقىٰ   من الزيغ ان الزيغ للمرء صادع

वह साहबे हिदायत हैं उनके परहेज़गार हाथ ने उसको बचाया हर कजी से। उस में शुबहा नही कि कजी इंसान को हलाक कर देती है।

مناهج فيها للهدى تصرف   موارد فيهاللرشادشوارع

वह ऐसे रास्ते हैं जिन पर हिदायत की हुक्मरानी है। और ऐसी घाटी हैं जिस में रास्त रवी ही का रास्ता है।

ظواهر ها حكم و مستنبطاتها   لما حكم التفريق منه جوامع

उन के अहकाम ज़ाहिर हैं और उन के इस्तिंबात जामे हैं।

ولا ذبآثار النبى فحكمه   لحكم رسول الله فى الناس شائع

और उन्हों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अहादीस की पनाह ली। इस लिए उनका हुक्म हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अहकाम को लोगों में फैलाने वाला है।

وعول فى احكامه وقضائه   علىٰ مافضى التنزيل والحق خاضع

और उन्हों ने अपने अहकाम व फैसलों में सच्चाई का मुती बन कर कुरआन मजीद पर ऐतेमाद किया।

لرأى ابن ادريس ابن عم محمد   ضياء اذا ماظلم الخطب صادع

जब महिम्माते उमूर में तारीकी नुमायाँ होती है उस वक़्त मुहम्मद बिन इदरीस शाफई अपने चचा ज़ाद हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रोशनी को नुमायाँ करते हैं।

اذا المعضلات المشكلات تشابهت   سماضه نور فى وجاهن ساطع

जब सख़्त तरीन कामों में तारीकी की वजह से इम्तेयाज़ नहीं हो सकता उस वक़्त दरख़्शाँ नूर नुमायाँ होता है।

الى الله الا رفعه وعلوه   وليس لمايعليه ذوالعرش واضع

ख़ुदा को उसकी रिफअते शान ही मंज़ूर है और जिस को अर्शे अज़ीम का मालिक बलंद करे उसका पस्त करने वाला कोई नहीं।

فمن يک علم الشافعى امامه   فمرتعه فى ساحة العلم واسع

जिस शख़्स के पेशे नज़र इमामे शाफई रहमतुल्लाह अलैह का इल्म हो तो उसके लिए इल्म का वसी मैदान खुला है।

سلام علیٰ قبر تضمن جسمه وجادت علیه المدخنات الهوامع

जिस क़ब्र में उन का जिस्मे अक़्दस हो उस पर सलामती हो और उस पर बाराने रहमत की घटायें बरस्ती रहें।

لئن فجعنتا الحادثات بشخصه وهن بماحکمن فیه فواجع

अगरचे उनकी वफात से हम पर सख़्त मुसीबतें नाज़िल हुई और ऐसे हादसात के असरात सख़्त होते हैं।

فاحکامه فینابدرورزواهر وآثاره فین انجوم طوالع

मगर ख़ैर उनके अहकाम हमारे लिए चाँद की तरह तजल्ली दे रहे हैं और उन के आसार हम लोगों में तारों की तरह चमक रहे है।

३. शारह उम्दतुस्सालिक ने हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के नसब को बयान करते हुये बाज़ अशआर नक़्ल फरमाया है।

یاطالب احفظ اصول الشافعی مجتمعامع النبی الشافع

ऐ तालिबे इल्म हज़रत इमामे शाफई रहमतुल्लाह अलैह के उसूल (सिलसिलये नसब) को याद रख। जो नबी शाफे सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मिलता है।

محمد ادریس عباس ومن فوقهم عثمان قل وشافع

वह मुहम्मद बिन इदरीस बिन उब्बास हैं और उन से ऊपर उसमान बिन शाफे और वह।

وسائب ثم عبید سادس عبد یزید هاشم للجائع

इब्ने साइब फिर जद्दे सादिस उबैद और इब्ने अब्दे यज़ीद बिन हाशिम हैं जो भूकों को खिलाते हैं और हव।

مطلب عبد مناف عاشر اکرم بهامن نسبة للشافعی

इब्ने मुत्तलिब और जद आशिर अब्दे मुनाफ हैं हज़रत शाफई रहमतुल्लाह अलैह की यह निस्बत क्या ही आला है।

और उन्हों ने यह भी बताया है इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह शाफे रज़ि अल्लाहु अन्हू की तरफ मंसूब हैं इस लिए कि शाफे और उनके वालिद दोनों सहाबी रज़ि अल्लाहु अन्हुमा हैं और उस में शफाअत की तरफ नेक फाल है।

४. अल्लामा अबू हय्यान मुहम्मद बिन यूसुफ रहमतुल्लाह अलैह अपने एक तवील क़सीदे में हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह की तारीफ करते हुये फरमाते है। (तबक़ातुश्शाफया अल कुबरा जि.६ स.३६)

وما الفه الا اصل دین محمد فجرد له غرما و جدد له سعیا

और फिक़्ह तो अस्ल दीने मुहम्मदी है। तू अपने उसके लिए अपने अज़्म को ख़ालिस कर और अपनी कोशिश तेज़ कर।

وکن تابعا للشافعی وسالکا طریقته تبلغ به الغایة القصیا

और हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के मसलक की पैरवी कर और उनके तरीक़े पर चल तो अपने इंतेहा मक़्सद को पहुंच जायेगा।

ألا یاابن ادریس قد تضح الهدیٰ وکم غامض ابداوکم دارس احیا

सुनो! इब्ने इदरीस (इमाम शाफई) की वजह से हिदायत वाज़ह हो चुकी है। उन्हों ने कितनी एक पूशीदा चीज़ों को वाज़ह किया और कितने एक मिटते निशान को ज़िंदा किया।

سمی الرسول المصطفیٰ وابن عمه فنا هیک مجداقدسما الرتبة العلیا

वह रसूलुल्लाह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के

हमनाम और आप के चचाज़ाद भाई हैं तेरी बुज़ुर्गी के लिए यह काफी है कि वह बलंद रुत्बा पर फायज़ हैं।

هوا ستنبط الاصول فاكتسىٰ به الفقه من دياج انشائه وشبا

उन्हों ने उसूले फिक्ह को मुस्तंबत किया और इल्मे फिक्ह को अपने इंशा का रेशमी लेबास पहनाया और उसको मुनव्वर किया।

अल्लामा क़ाज़ीयुल कुज़ात तक़ीयुद्दीन अबुल हसन सुबकी रहमतुल्लाह अपने बड़े साहबज़ादे मुहम्मद को नसीहत फरमाते हुये हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह की तारीफ में फरमाते हैं।(तबक़ात जि. ६ स.१६१)

ابنى لا تهمل نصيحتى التى اوصيک واسمع من مقالتى ترشد

ऐ मरे प्यारे बेटे मेरी नसीहत को नज़र अंदाज़ मत कर जिस की मैं नसीहत करता हूँ और मेरी बात को सुन हिदायत पायेगा।

احفظ كتاب اللّٰه والسنن التى صحت وفقه الشافعى محمد

किताबुल्लाह और सुन्नते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जो साबित है हिफाज़त कर और हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के फिक्ह की हिफाज़त कर।

आप की सीरत के चंद वाक़ेयात :

आप की इबादत और ज़ोहद व तक़्वा के उनवान के तहत आप की सीरत के कुछ हालात लिखे जा चुके हैं यहाँ चंद वाक़ेयात बयान किये जोते हैं।

किताबुर्रक़ाइक़ में लिखा है कि हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह पर बेहोशी तारी हुई तो सुफयान बिन अैनिया को बताया गया कि आप का इंतेक़ाल हो गया तो हज़रत सुफियान रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया :

ان مات فقد مات احسن وافضل زمانه

अगर आप का इंतेक़ाल हो जाये तो अपने ज़माना की सब से बेहतरीन और अफज़ल शख़्सियत का इंतेक़ाल हो गया।

उमर बिन नबाता रहमतुल्लाह अलैह से रिवायत है वह कहते हैं कि जब मैं बगदाद पहुंचा आप उन दिनों इराक़ में थे एक नहर के किनारे वज़ू कर रहा था। मेरे पास एक बुज़ुर्ग आये और मुझ से फरमाया ऐ लड़के वज़ू अच्छी तरह कर। अल्लाह तआला दुनिया और आख़ेरत में तेरा भला करेगा। मैं मुड़ कर देखा उनके साथ एक जमात चल रही है। जल्दी से वज़ू कर के मैं भी उनके पीछे पड़ा। उन बुज़ुर्ग ने मेरी तरफ मुड़ कर फरमाया क्या तुझे कोई ज़रूरत है। मैं ने अर्ज़ किया हाँ अल्लाह तआला ने आप को जो इल्म अता फरमाया उस में से मुझे भी ऐनायत फरमायें। उस वक़्त आप ने फरमाया।

اعلم ان من صدق اللّٰه نجاو اشفق علىٰ دينه سلم من الردىٰ ومن زهدفى الدنيا قرت عيناه بمايراه من ثواب اللّٰه تعالىٰ غداًفلاازيد ک قلت نعم قال من كان فيه ثلاث خصال فقد استكمل الايمان من امربالمعروف و انتم و نهى عن المنكر و انتهىٰ و حافظ علىٰ حدود اللّٰه تعالىٰ ألا ازيدک قلت بلىٰ فقال كن فى الدنيا زاهدا و فى الأخرة راغباواصدق اللّٰه تعالىٰ فى جميع امورک تنج مع الناجين.

इस बात को याद रखो जो आदमी दुनिया में अल्लाह तआला से रास्ती का मामला रखेगा वह नेजात पायेगा और जो अपने दीन की फिक्र रखेगा वह हलाकत से महफूज़ रहेगा और जो कोई दुनिया में ज़ोहद व तक़्वा इख़्तेयार करेगा तो कल (आख़ेरत में) अल्लाह तआला की तरफ से सवाब को देख कर उसकी आँखें ठंडी होंगी।

फिर आप ने फरमाया क्या और इज़ाफा करूँ तो मैंने अर्ज़ किया कि हाँ और इर्शाद फरमायें तो आप ने इर्शाद फरमाया जिस

में यह तीन बातें होंगी उस ने अपना ईमान मुकम्मल कर लिया वह यह कि (१) नेकी का हुक्म दे और खुद भी अमल करे। (२) बुराई से दूसरों को रोके और ख़ुद भी बुराई से रुक जाये। (३) और अल्लाह तआला के हुदूद की पाबंदी करे।

फिर फरमाया क्या और बताऊँ मैं अर्ज़ किया हाँ, और इर्शाद फरमायें तो आप ने फरमाया। दुनिया से ज़ोहद इख़्तेयार करो और आख़ेरत की रगबत रखो नेजात पाने वालों के साथ तुम भी नेजात पा जाओगे।

फिर वह बुज़ुर्ग चले गये मैंने दरयाफ्त किया वह बुज़ुर्ग कौन थे लोगों ने बताया कि वह इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह हैं।

इस वाक़या से आप के ज़ोहद व तक़्वा अल्लाह तआला की मारफत के बगैर हासिल नहीं हो सकता अल्लाह तआला का इर्शाद है।

اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ

उसके सिवा नहीं है कि अल्लाह के बंदों में से उलमा ही अल्लाह से डरते हैं।

आप असरारे क़ल्ब से वाक़िफ थे:

आप से जो बातें हिक्मत की मंकूल हैं उस से ज़ाहिर होता है कि आप असरारे बातिनी से वाक़िफ थे। रियाकरी के बारे में आप से दरयाफ्त किया गया तो आप ने फौरन फरमाया, उलमा की निगाह क़ल्ब को पलट देने वाली है वह ख़्वाहिशाते नफ्सानी का एक फित्ना है। नफ्स के गलत इन्तेख़ाब की वजह से उन्हों ने उसकी तरफ देखा और उस ने उनके आमाल को ज़ाये कर दिया।

आप ने फरमाया अगर तुम को आपने कामों में रियाकारी का अंदेशा हो तो गौर करो इस बात में कि तुम किस की रज़ा के तालिब हो और कौन से सवाब की रगबत है किस की सज़ा से डर

रहे हो और किस आफियत की शुक्र गुज़ारी कर रहे हो और किस मुसीबत को याद कर रहे हो। अगर तुम उन उमूर में से किसी पर भी गौर करोगे तो तुम्हारा यह अमल तुम्हारी नज़रों में हक़ीर हो जायेगा।

हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने रियाकारी और खुद पसंदी का किस तरह उम्दा इलाज फरमाया। आप फरमाते हैं जो आदमी अपने नफ्स की हिफाज़त नहीं करता उसका इल्म उसको फायदा नहीं पहुंचाता। और जो शख़्स इल्म शरीअत के मुताबिक़ अल्लाह तआला की इताअत करता है तो उसका इल्म उसके बातिन को फायदा पहुंचाता है।

आप ने फरमाया हि हर आदमी का एक दोस्त और एक दुश्मन है ऐसी सूरत में तुम हमेशा अल्लाह तआला के फरमांबरदार बंदों के साथ रहेगी।

एक बार आप से दरयाफ्त किया गया कि सब्र, मेहनत और तमकीन में से कौनसी चीज़ अफज़ल है। आप ने फरमाया तमकीन अफज़ल है इस लिए कि यह पैगम्बरों का दर्जा है और मेहनत (आज़माइश) के बाद तमकीन का दर्जा हासिल होता है। जब बंदा आज़्माया जाता है और वह सब्र करता है तो फिर (दर्जये तमकीन) यानी उसको कुदरत अता फरमाता है। क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह तआला पैगम्बरों को पहले आज़्माता है उसके बाद उनको दर्जये तमकीन (कुदरत) अता फरमाता है (किफायतुल अत्क़िया)

हज़रत हारून बिन सईद बिन हतमुल ऐली रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया कि हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के जैसे उन्हों ने कभी किसी को नहीं देखा आप हमारे पास मिस्र तशरीफ लाये तो लोगों ने कहा कि कुरैश के एक फक़ीह तशरीफ लाये हैं, हम आप की ख़िदमत में हाज़िर हुये उस वक़्त आप नमाज़ पढ़ रहे

थे हम ने आप से ज़्यादा ख़ूबसूरत और आप से बेहतर नमाज़ पढ़ने वाला किसी को नहीं देखा। हम आप के गरवीदा हो गये।

आप जब नमाज़ से फारिग हुये ऐसी उम्दा गुफतगू फरमाये कि गुफतगू करने में आप से बेहतर हम ने नहीं देखा आप हक़ाइक़, ज़ोहद और असरारे कुलूब में भी गुफतगू फरमाते थे आप फरमाया करते थे।

كيف يزهد فى الد نيا من لايعرف قدر الأخرة و كيف يخلص من الدنيا من لايخلومن الطمع الكاذب و كيف يسلم من لايسلم الناس من لسانه ويده و كيف ينال الحكمة لا يريد بقوله وجه الله عزوجل.

वह आदमी दुनिया में कैसे ज़ोहद इख़्तेयार करेगा जो आख़ेरत की क़द्र नहीं जानता और वह आदमी दुनिया से कैसे छुटकारा पायेगा जो झूठी तमा (दुनिया की हिर्स) को नहीं छोड़ता। और वह शख़्स कैसे महफूज़ रहेगा जिस की ज़बान और हाथ से दूसरे लोग महफूज़ न रहें और हिक्मत को वह आदमी कैसे पायेगा जो अपनी गुफतगू में अल्लाह तआला की रज़ा (ख़ुशनुदी) पेशे नज़र नहीं रखता।

हज़रत सुवेद बिन सईद रहमतुल्लाह अलैह से रिवायत है कि हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह मदीना मुनव्वरा में नमाज़े फज्र के बाद तशरीफ फरमा थे कि एक आदमी आप के पास आया और कहा मैं अपने गुनाहों से ख़ौफज़दा हूँ परवरदिगार के सामने किस तरह जाऊंगा तौहीद के सिवा मेरे पास कोई अमल नहीं है तो हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया ऐ बंदये मोमिन अगर अल्लाह तआला तेरे साथ दर गुज़र करना चाहे तो उसके लिए कोई चीज़ हायल नहीं हो सकती।

वह तो फरमात है :

ومن يغفر الذنوب الا الله

गुनाहों को माफ करने वाला अल्लाह तआला के सिवा कौन है और अगर तुझ को दोज़ख़ में डाल कर सज़ा देना चाहता और उस में हमेशा रखना चाहता अपनी मारफत और तौहीद का इल्म तुझे न देता।

ان كنت تغدو فى الذنوب جليدا و تخاف فى يوم المعاد وعيدا

अगर तू गुनाहों में सख़्त हो गया है और आख़िरत के दिन के अज़ाब से डरता है।

فلقد اتاب من المهيمن عفوه واتاح من نعم عليک مزيدا

पस यक़ीनन रब महीमन की तरफ से तेरे लिए माफी है। और वह तेरे लिए अपनी मज़ीद नेमतें अता फरमायेगा।

لاتيأس من لطف ربک فيالحشىٰ فبطن امک مضغة ووليدا

तू तक़लीफ में अपने रब की मेहरबानी से मायूस मत हो। तू अपनी माँ के पेट में गोश्त का लोथड़ा और फिर बच्चा था।

لوشاء ان تصلى جهنم خالدا ماكان الهم قلبک التوحيدا

अगर वह चाहता कि तू जहन्नम में हमेशा रहे तो वह तेरे दिल में तौहीद का इलहाम न करता।

उसके बाद वह आदमी रो पड़ा और इबादत में मशगूल हो गया और आप की गुफतगू से उसको बड़ी ख़ुशी हुई।

आप के अशआर बहुत हैं (अगर जमा किया जाये तो एक दिन दीवान बन जाये) गुज़िश्ता औराक़ में अशआर के उनवान के तहत आप के चंद अशआर को यकजा कर दिया गय है।

आप की दुआयें:

अब्दुल्लाह बिन मरवान रहमतुल्लाह अलैह बयान करते हैं कि मैं हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के पास इल्म के हल्क़ा

में बैठा करता था और आप जो कुछ बयान फरमाते उसको लिखता जाता था।

एक मर्तबा सहर के वक़्त हाज़िर हुआ तो देखा आप मस्जिद में नमाज़ में ख़ड़े हुये हैं मैं वहीं बैठ गया यहाँ तक कि आप अपनी नमाज़ से फारिग हो कर दुआ में मशगूल हो गये मैने उस को सुन कर याद कर लिया। मिन्जुमला उनके यह हैं।

اللھم امنن علینابصفاء المعرفة وھب لنا تصحیح المعاملة فیما بیننا وبینک علیٰ السنة وارزقنا صدق التوکل علیک وحسن الظن بک وامنن علینا بکل مایقربنا الیک مقرونا بعوافی الدارین برحمتک یاارحم الراحمین.

ऐ अल्लाह तू हमें ख़ालिस मारफत अता फरमा और तेरे साथ सुन्नत के मुताबिक़ मामला को ठीक रखने और तुझ पर हक़ीक़ी भरोसा करने और तेरे साथ हुस्ने ज़न रखने की तौफीक़ अता फरमा और हम पर ऐहसान फरमा हर ऐसी चीज़ के ज़रिया जो हमें तुझ से क़रीब कर दे और उस में दुनिया व आख़िरत की आफियत शामिले हाल रहे। ऐ अरहमर्राहेमीन अपने फज़्ल व करम से कुबूल फरमा।

आप अपनी दुआ से फारिग हो कर मस्जिद से निकले और मैं भी आप के पीछे चला आप आसमान की तरफ देखते हुये यह अशआर फरमाये।

بموقف ذلی دون عزتک العظمیٰ   بمخفی سرلاا حیط به علما

तेरी अज़ीम इज़्ज़त के समाने मेरे ज़लील मौक़फ का वास्ता उस राज़े सर बस्ता का वास्ता जिस का कोई ऐहादा नहीं किया जा सकता।

باطراق راسی باعترافی بذلتی   یمدیدی استمطر الجود والرحما

मेरी अपनी ज़िल्लत का ऐतराफ करते हुये मेरे सर झुकाने का वास्ता अपने हाथों को फैला कर तेरी वजूद व रहमत की बारिश मांगता हूँ।

بأسماک الحسنیٰ التی بعض وصفا   نعزتھا تستغرق النثر و النظما

तेरे असमाये हुस्ना का वास्ता जिस के थोड़े से बयान के लिए भी सारी नज़्म व नस्र ख़त्म हो जाये।

بعھد قدیم من الست بربکم   بمن کان مجھولا فعلمته الاسما

तेरे अलस्तु बिरब्बिकुम के अहदे क़दीम का वास्ता उस शख़्सियत का वास्ता जो नावाकिफ थी तूने उसको सारे असमा सिखाये।

أذقنا شرابه الانس یامن اذا اسقیٰ   محبا شرابالایضام ولا یظما

हम को शराबे उन्स पिला। ऐ वह ज़ात कि जब वह किसी मुहिब को शराब पिलाये तो न वह मज़लूम रहता है न प्यासा रहता है।

एक मौक़े पर रब तआला की जनाब में तज़र्रुअ करते हुये फरमाते हैं।

الیک الله الخلق ارع رغبتی   و ان کنت یاذاالمن والجود مجرما

ऐ माबूद मैं तेरी ही ख़िदमत में अपनी ख़्वाहिश को पेश करता हूँ। ऐ ऐहसान व सख़ावत वाले अगरचे कि मैं मुजरिम हूँ।

ولما قساقلبی وضاقت مذاھبی   جعلت الرجامنی لعفوک سلما

और जब मेरा दिल सख़्त हो गया और मेरे रास्ते तंग हो गये। मैं अपनी उम्मीद को तुझ से माफी के लिए सीढ़ी बना लिया।

تعاظمنی ذنبی فلماقرنته بعفوک ربی کان عفوک اعظما

मेरे गुनाह मुझे ज़्यादा मालूम हुये गमर जब मैं उसको ऐ मेरे रब तेरी माफी के साथ मिलाया तो तेरी माफी अज़ीम निकली।

فللّٰہ دراالعارف الندب انہ تسح لفرط الواجد اجفانہ دما

पस अल्लाह के लिए ख़ूबी है साहबे मारफत शरीफ आदमी की कि उसकी पलकें शिद्दते गम की बना पर आंसू बहाती हैं।

يقيم اذا ما الليل مد ظلامه على نفسه من شدة الخوف ماتما

जब रात की तारीकी दराज़ हो जाती है तो वह शिद्दते ख़ौफ के मारे अपने नफ्स पर मातम करता (रोता) है।

فصيحا اذاماكان في ذكرربه وفيماسواه في الورى كان معجما

अपने रब के ज़िक्र में वह फसीहुल कलाम हो जाता है और ज़िक्र के सिवा लोगों के दरमियान वह गूंगा बन जाता है।

ويذكر ايامامضت من شبابه وماكان فيها بالجهالة اجرما

और वह अपनी जवानी के दिन याद करता है। और उस जुर्म (नाफरमानी) को याद करता है जिस को उसने जेहालत से किया था।

فصار قرين الهم طول نهار ويخدم مولاه اذا الليل اظلما

वह दिन भर गम का साथी बन जाता है। (गमगीन रहता है) और रात जब तारीक हो जाती है तो अपने आक़ा की ख़िदमत में लगा रहता है।

يقول حبيبى انت سؤلى بغيتى كفىٰ بک للراجين سؤلاومغنما

और कहता है तू मेरा महबूब है। मेरा सवाल तू है मेरा मतलूब तू है। उम्मीदों की दरख़्वास्त के लिए और उनके काम के लिए तू काफी है।

الست الذى غذا يتنى و كفلتنى ومازلت منانا على ومنعما

क्या तूने मुझे गिज़ा नहीं दी। और मेरी किफालत नहीं की। तू हमेशा मुझ पर ऐहसान और इनआम करता रहा।

عسىٰ من له الاحسان يغفر زلتى ويستر اوزارى وما قد تقدما

मुझे तव्क़्क़ो है कि ऐहसान करने वाला मेरी लगज़िश को माफ कर देगा और मेरी गुनाहों के बोझ को और मेरी साबेक़ा ख़ताओं को छुपा देगा।

मामूलात:

सुबह की नमाज़ के बाद सूरज निकलने तक फिक़्ह का दर्स देते उसके बाद हदीस का दर्स होता। फिर मजलिसे वाज़ फिर इल्मी तज़करे, ज़ोहर के बाद अदब शेर व शायरी, उरूज़, नौह और लोगत उसके बाद अस्र तक आराम फरमाते। अस्र से मग्रिब तक इबादत व ज़िक्रे इलाही करते। शब के मामूलात में यह तक़सीम थी एक तिहाई हिस्सा में लिखना। और एक तिहाई हिस्सा में इबादत। और एक तिहाई हिस्सा आराम फरमाते जब कभी नमाज़ पढ़ाते तो आप के पढ़ने का अंदाज़ ऐसा था कि मुक़्तदी भी रोने लगते इसी तरह अगर मजलिस में तिलावत फरमाते तो सामईन भी रोते और ख़ुद भी ख़ूब रोते और बेताब हो जाते थे। आप का अपने इल्म व फज़्ल के बावजूद ख़शीअते इलाही में यह हाल था हम अपनी जेहालत के साथ किस तरह बे ख़ौफ रह सकते हैं?

आप के हकीमाना अक़्वाल को गुज़िश्ता औराक़ में अक़्वाल के उनवान में हम ने यकजा कर दिया है। आप फरमाते हैं अपने नफ्स के लिए सब से बड़ा ज़ालिम वह शख़्स है कि जब वह मर्तबा पाता है रिश्तेदारों के साथ बद अख़्लाक़ी से पेश आता है और दोस्तों के साथ अजनबियों के जैसा सोलूक करता है शरीफ लोगों के साथ

हल्के पन से पेश आता है और बुज़ुर्गों के मुक़ाबले में तकब्बुर करता है।

आप रहमतुल्लाह अलैह फरमाते थे :

وددت ان الناس ينقفعون بهٰذا العلم ولم ينسب الى منه شئى۔

मेरा मंशा सिर्फ यह है कि लोग उस इल्म से फायदा उठायें उस में से कोई चीज़ मेरी तरफ मंसूब न की जाये आप दुनिया से बिल्कुल बे रगबत थे बे फायदा गुफ्तगू और बद गोई से बिल्कुल पाक थे।

आप से एक मसअला दरयाफ्त किया गया तो ख़ामूशी इख़्तेयार फरमाये। जब आप से कहा गया कि जवाब क्यों नहीं फरमाते तो फरमाया कि मैं जब तक यह ना जानूँ कि फज़ीलत किस में है जवाब देने में है या ख़ामूशी में है, मैं जवाब नहीं देता।

इस से अंदाज़ा होता है कि आप ज़बान का किस क़द्र ख़्याल रखते थे हालांकि तमाम आज़ा में उलमा के लिए ज़बान पर क़ाबू रखना सब से मुश्किल है। इस से साबित होता है कि आप की गुफ्तगू और आप की ख़ामूशी रज़ाये इलाही और सवाबे आख़िरत के लिए होती थी।

आप ने फरमाया कि एक साहबे हिक्मत ने दूसरे हकीम को लिखा कि तुम को जो इल्म मिला है उसको गुनाहों की तारीकी से मुलव्विस मत करो वरना जिस दिन (क़यामत के रोज़) अहले इल्म अपने अपने इल्म की रोशनी में चलते होंगे उस दिन तुम तारीकी में रहोगे।

आप फरमाते हैं जो कोई दुनिया की मोहब्बत और ख़ालिके दुनिया (अल्लाह तआला) की मुहब्बत दोनों को जमा करने का दावा करे वह झूठा है।

और अस्ल ज़ोहद सेख़ावत हे इस लिए कि आदमी जब किसी

चीज़ से मुहब्बत करता है तो उसको रख लेता है छोड़ता नहीं है और वही आदमी दुनिया को छोड़ता है (ज़ोहद इख़्तेयार करता है) जिस की नज़र में दुनिया हक़ीर होती है और ज़ाहिद के यही माना हैं।

आप इन्तेहाई ज़ाहिद थे और अल्लाह तआला का निहायत ख़ौफ रखने वाले और हमेशा आख़िरत की फिक्र रखने वाले थे।

इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि कुरआन की तालीम से इंसान का दर्जा, फिक्ह से इज़्ज़त, हदीस कुव्वले दलील और लोगत की वज़ाहत से क़ल्ब को सुकून हासिल होता है।

आप फरमाते हैं कि तीन काम बड़े सख़्त हैं। तंगी में सेख़ावत, ख़ल्वत में तक़्वा और जहाँ उम्मीद या कुछ ख़ौफ हो वहाँ सच्ची बात कहना। सेख़ावते दुनिया व आख़िरत के अैबों को छुपाने वाली चीज़ है। दिल ज़बान की खेती है। इस से अच्छ बातों की तुख़्म रेज़ी करो अगर कुछ दाने न उगें तो कुछ ज़रूर उगेंगे। ज़बान से जो बात निकलती है वह पत्थर से ज़्यादा सख़्त, सूई से ज़्यादा धंसने वाली। ईलवे से ज़्यादा कड़वी, चक्की के पाट से ज़्यादा फिरने वाली और नोक से ज़्यादा तेज़ होती है। ऐहतेयात से बात करो।

आप फरमाते हैं कि जो शख़्स दौलत के ज़ोर और ख़ुदी के घमंड में इल्म हासिल करता है वह ना काम रहेगा जिस ने ख़ाकसारी, तंग दस्ती और ऐहतेरामे इल्म के साथ इल्म को तलब किया वह कामियाब हो गया और इल्म को हासिल करना नफ्ल नमाज़ से अफज़ल है।

सेख़ावत:

एक दफा आप ने दर्ज़ी के पास अपना क़मीस सिलवाया और वह दर्ज़ी आप के मर्तबे से ना वाक़िफ था आप के साथ मज़ाक़

किया और क़मीस की एक आस्तीन तंग कर दिया आप मुश्किल से अपना हाथ निकाल सकते थे और एक आस्तीन को कुशादा कर दिया। हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह तशरीफ लाये और देखा कि एक आस्तीन निहायत तंग है और दूसरी आस्तीन बहुत कुशादा है यह देख कर गुस्सा करने के बजाये आप हुस्ने अख़्लाक़ से पेश आये फरमाया "जज़ाकल्लाहु ख़ैरा" अल्लाह तुम को बेहतरीन अज्र अता फरमाये। तंग आस्तीन वज़ू के लिए (ताकि वज़ू के वक़्त वह नीचे न उतरे) और यह कुशादा आस्तीन लिखने की गर्ज़ से अच्छी है इतने में बादशाह का क़ासिद दस हज़ार (१००००) दिरहम ले कर आया दर्ज़ी के पास आप से मुलाक़ात हुई तो आप ने फरमाया यह रुपये इस क़मीस के कतरने और सीने की मज़दूरी में उस दर्ज़ी को दे दो। दर्ज़ी ने आप के बारे में दरयाफ्त किया (यह कौन बुज़ुर्ग हैं) उसको बताया गया कि यह हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह हैं तो वह आप के क़दम बोस हुआ और माज़रत किया और आप के साथ हो गया और आप के शागिर्दों में शामिल हो गया।

हाफिज़ इब्ने हजर रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि जब इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह बगदाद तशरीफ लाये तो हारून रशीद ने आप को बुलवाया और फरमाया कि आज मेरे दरबार में सब जमा हों और वाज़ फरमायें इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने वाज़ फरमाया। हाज़ेरीन के तअस्सुरात तो बयान से बाहर हैं। ख़ुद हारून रशीद चीख़ चीख़ कर रोने लगा। वाज़ के ख़त्म होने पर आप को पच्चास हज़ार दिरहम नज़र किये वह पचास हज़ार दिरहम को आप ने उलमा, इबाद, ज़ोहाद और यतामा व बेवगान में तक़सीम कर दिये उस पर लोगों ने कहा आप इस क़द्र क्यों तक़सीम क्यों फरमा रहे हैं आप ने फरमाया कि अल्लाह फरमाता है

وَفِى اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّسَّائِلِ وَالْمَحْرُوْمِ

बेबस व बेकासों के नसीब से यह दौलत हाथ आई है इस लिए मैंने उन्हीं के नज़र कर दी। ख़ुदा ने मुझे एक वास्ता बनाया है जिस के ज़रिया यह माल उन तक पहुंच गया और मैं मेहशर के हिसाब से डर रहा हूँ कि उन के हुक़ूक़ का फर्ज़ जो मुझ पर डाला गया था आया मैं उस को सही तौर पर अदा कर रहा हूँ या नहीं।

फेरासत:

हीदस शरीफ में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया:

اتقو افراسة المؤمن فانه ينظر بنوراللّٰه

मोमिन की फिरासत एक ऐसा मलका है जो हर शख़्स में नुमायाँ नहीं होता यह बात तजरबा की कसरत और अमल के कमाल के बाद इंान को हासिल होती है जो इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह में बदर्जये अतम मौजूद थीं जैसा कि इमाम हमीदी रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि मैं और इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह मक्का से बाहर गये अब्तह़ में हम को एक शख़्स मिला मैं ने इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह से कहा कि आप फेरासत से बतलाइये कि उस शख़्स का ज़रिये मआश क्या है। आप ने फरमाया कि यह शख़्स बढ़ई या दर्ज़ी मालूम होता है मैंने उस शख़्स से जा कर दरयाफ्त किया कि तुम काम क्या करते हो उस ने कहा कि मैं पहले बढ़ई का काम करता था अब दर्ज़ी का काम कर रहा हूँ।

२. रबी रहमतुल्लाह अलैह कहते हैं कि जामा मस्जिद में मेरा भाई इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के सामने से गुज़रा तो आप ने फरमाया रबी रहमतुल्लाह अलैह यह तो तुम्हारा भाई है मैं ने कहा जी हाँ हालाँकि उस से क़ब्ल आप ने कभी भाई को नहीं देखा था।

४. इमाम बहेक़ी रहमतुल्लाह अलैह ने मज़नी रहमतुल्लाह अलैह से रिवायत की है कि मैं जामा मस्जिद में इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के साथ इत्तेफाक़न एक शख़्स आया और वह सोये हुये आदमियों में से किसी को तलाश कर रहा था। इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने रबी रहमतुल्लाह अलैह से फरमाया कि आप जाओ और उस तलाश करने वाले से कहो कि क्या तम्हारा हबशी गुलाम जिस की आँख ख़राब है गुम हो गया है रबी रहमतुल्लाह अलैह ने उस शख़्स से कहा वह शख़्स रबी रहमतुल्लाह अलैह के साथ आप के पास आया और कहने लगा बताइये मेरा गुलाम कहाँ है आप ने फरमाया वह तो क़ैद ख़ाना में है। वह क़ैद ख़ाना पहुंचा तो वह वाक़ई वहाँ मिल गया। मज़नी रहमतुल्लाह अलैह ने इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह से अर्ज़ किया आप ने तो हम को तअज्जुब में डाल दिया। फरमाइये कि यह क्या किस्सा है आप ने फरमाया कि जब यह ढूंढने वाला मस्जिद में आया तो मैं समझ गया कि वह किसी भागे हुये को ढूंढ रहा है। फिर यह उस हिस्सये मस्जिद में गया जहाँ सेयाह फाम हबशी सो रहे थे मैं ने बगौर देखा कि यह बायें आँख वालों पर गहरी नज़र डाल रहा है इस लिए मैं ने समझ लिया कि उसका कोई आँख का अैब वाला काला गुलाम भागा है मज़नी रहमतुल्लाह अलैह ने इन बातों को सुन कर आप से पूछा कि यह आप ने कैसे समझ लिया कि वह जेल ख़ाना में है। फरमाया यह मेरा तजरबा है कि जब गुलाम भागा होता है तो चोरी करता है अगर पेट भरा हुआ होता है तो ज़ेना करता है इस लिए मैंने समझ लिया कि उन दोनों बातों में से एक ज़रूरी है। चुनान्चे यही वाक़या निकला।

ज़ेहानत:

यूनुस इब्ने अब्दुल आला रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि

अगर अहले दुनिया की सारी अक्ल को और इमामे शाफई रहमतुल्लाह अलैह की अक्ल को जमा किया जाये तो इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह की अक्ल बढ़ जायेगी।

इमाम हुमैदी रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि मैंने मक्का मुअज़्ज़मा के तमाम असातज़ा को इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह की फहमे फिरासत, ज़ोकावत और इल्म की तारीफ में रत्बुल लिसान ही पाया। इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह फरमाया करते थे कि मेरे पास इल्म हासिल करने वालों में इमामे शाफई रहमतुल्लाह अलैह से ज़्यादा ज़हीन और समझ दार कोई नहीं आया।

१. अज़ मुतरज्जिम: आप की वालिदा माजिदा निहायत अमानत दार थीं अकसर लोग अपनी अमानतें आप के पास रखवाते थे एक दफा दो अशख़ास ने कपड़ों से लदा हुआ संदूक़ आप के पास बतौरे अमानत रखवा दिया। कुछ दिन के बाद एक शख़्स आ कर संदूक़ ले गया फिर कुछ अरसा के बाद दूसरे शख़्स ने आ कर संदूक़ तलब किया तो आप ने कहा कि मैं तुम्हारे साथी को दे चुकी हूँ वह आ कर ले गया है तो उस ने कहा कि जब हम दोनों ने रखवाया था तो फिर तुम ने मेरी गैर मौजूदगी में उसे कैसे दे दिया। यह सुन कर आप की वालिदा को बहुत निदामत हुई उसी वक़्त इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह घर आये और वालिदा ने सारे हालात बयान कर दिये उस पर आप ने फरमाया कि ऐ शख़्स तुम्हारा संदूक़ मौजूद है लेकिन तुम अकेले कैसे आये हो आप अपने साथी को लाओ और अमानत ले जाओ यह जवाब सुन कर वह हैरान हो गया।

एक दफा ख़लीफा हारून रशीद और उसकी बीवी ज़ुबैदा में किसी बात पर तकरार हो गई तो ज़ुबैदा ने हारून से कहा कि तुम

जहन्नमी हो उस पर हारून रशीद ने कहा कि अगर मैं जहन्नमी हूँ तो तुझ पर तलाक़ यह कह कर हरून रशीद और ज़ुबैदा दोनों एक दूसरे से जुदा हो गये दिल पर बड़ा मलाल रहा और उलमा को बुला कर मसअला दरयाफ्त किया कि मैं जहन्नमी हूँ या जन्नती? और उलमा तरद्दुद में थे कि किस तरह ख़लीफा को जहन्नमी या जन्नती क़रार दें बिल आख़िर किसी ने भी जवाब नहीं दिया। इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह कम सिनी के बावजूद उन उलमा के साथ तशरीफ रखते थे चुनान्चे आप ने फरमाया अगर इजाज़त हो तो मैं उस का जवाब दुंगा। इजाज़त मिलने के बाद आप ने ख़लीफा से फरमाया कि आप को मेरी ज़रूरत है या मुझे आप की। ख़लीफा ने फरमाया मुझे आप की ज़रूरत है आप ने फरमाया कि तुम तख़्त से उतर कर नीचे आ जाओ। क्योंकि उलमा का मर्तबा तुम से बलंद तर है चुनान्चे हारून ने नीचे उतर कर आप को तख़्त पर बैठाया। फिर आप ने हरून से सवाल किया कि क्या तुम्हें कभी ऐसा भी मौका मिला है कि तुम गुनाह पर क़ादिर होने के बावजूद महज़ ख़ौफे इलाही से बाज़ रहे हो तो हारून ने क़सम खा कर कहा हाँ ऐसे मवाक़े भी आये हैं तो उस पर इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया कि तुम जन्नती हो। उस पर उलमा ने दलील तलब की तो आप ने फरमाया अल्लाह तआला का इर्शाद है कि :

وَاَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰىۙ فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِىَ الْمَاْوٰىؕ

जो अपने परवरदिगार के हुज़ूर में खड़े होने से ड़रे और अपने नफ्स को ख़्वाहिशात से रोकता रहा उसका ठेकाना जन्नत है यह जवाब सुन कर उलमा ने बहुत तारीफ की और फरमाया कि जिस का कम सिनी में यह आलम हो तो ख़ुदा जाने जवानी में उसके क्या मरातिब होंगे।

क़ेरात:

ख़ुद इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह के सामने क़ेरात पढ़ने वाला बड़ा क़ाबिल होता था। आप ने मुझे हुक्म दिया कि तुम पढ़ा करो मैं कुछ पढ़ कर ख़ामूश हो जाता तो आप फरमाते कि अभी और पढ़ो मेरी ख़ुश इलहानी आप को बेहद पसंद थी आप कुरआन शरीफ को ख़ुश इलहानी और अरब के तमाम लेहजों में पढ़ते थे जब आप इमामत फरमाते तो लोगों के रोने की आवाज़ें बलंद हो जातीं तो आप को रुकू कर देना पड़ता और जब आप किसी मजलिस में कुरआन शरीफ पढ़ते तो लोगों की हिचकियाँ बंध जाती और बहुत सारे लोग बेख़ुद हो कर गिर जाते इमाम राज़ी रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं आप की क़िरात की संद का सिलसिला चार वास्तों के बाद सय्यदुल कुर्रा अबी इब्ने काब रज़ि अल्लाहु अन्हू और उनके बाद हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक पहुंचता है।

इल्मे हैयत व नुजूम:

हाफिज़ इब्ने हजर असक़लानी रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि आप ने मनाज़िल शमश व क़मर, रुजू, इस्तेक़ामत, साद व नहस तासीरात कवाकिब व रफ्तारे सय्यारात, अस्बाबे तगय्युर व तबद्दुल को माहिरीने इल्म हैयत व नुजूम से अच्छी तरह सीखा एक वाक़या नक़ल किया जाता है। इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने अपने एक दोस्त का ज़ायचा देख कर कहा कि २७ दिन में तुम्हारे यहाँ बच्चा पैदा होगा और उसकी बायें रान में सेयाह तिल होगी। चौबिस रोज़ ज़िंदा रहेगा फिर अचानक मर जायेगा चुनान्चे वैसा ही हुआ उसके बाद इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने उस इल्म की सारी किताबें जला डालीं फिर कभी भी नुजूम के

मुतअल्लिक़ किसी सवाल का जवाब नहीं दिया और उसके मोताले को दुरुस्त न समझा।

इल्मे तिब:

इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह बेहतरीन तबीब भी थे। जालीनूस, बोक्‌रात, अरस्तू व दीगर हुक्माये यूनान व दोम की किताबों पर आप की नज़र वसी थी। आप फरमाते थे कि इंसान दो चीज़ से मुरक्कब है। जिस्म व रूह। पस इल्म भी दो हैं एक इल्मे तिब दूसरा इल्मे दीन अक्सर फरमाते थे कि मुसलमानों ने इल्मे तिब को ज़ाये कर दिया है और उस निस्फ इल्म के वारिस यहूद व नसारा को बना दिया। आप ने फरमाया जिस शहर में कोई तबीब और आलिम न हों वहाँ ठहरना जुर्म है। अफसोस कि मुसलमानों ने इल्मे तिब की तलाश और उसकी तहक़ीक़ से ऐराज़ कर लिया इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह अपने ज़माना के अतिब्बा में मुम्ताज़ माने जाते थे।

लोगत :

इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह और इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैह के मुनाज़रात का तज़केरा जब हारून रशीद तक पहुंचा तो हारून रशीद ने आप को बुलाया और आप से कुरआन व हदीस, लोगत, शेर व अदब और बित से मुतअल्लिक़ सवालात किये तो आप ने हर एक बात का मुकम्मल जवाब दिया जब हारून रशीद ने अरबी अदब और लोगत के बारे में दरयाफ्त किया तो आप ने हारून रशीद को यह जामे जवाब दिया:

مَبدأ نا وطباعنا والسنتنا.

हम अरब ही की मिट्टी से पैदा हुये और यही ज़बान हमारे रग व ख़ून में सरायत किये हुये है और यही हमारे आबा व अजदाद

की ज़बान है और आप हुज़ैल के दस हज़ार अशआर मअ गराइबे लोगत के हिफ्ज़ कर लिये थे।

१. **मुनाज़रा के बाब में तफसील मोलाहेज़ा फरमायें।**

असमई जो अदब का माहिर है कहता है कि मैं ने अज़ीलैन और शंफरी के अशआर कुरैश के नौजवान मुहम्मद बिन इदरीस शाफई रहमतुल्लाह अलैह से सीखे और पढ़े हैं।

इमाम अबू मंसूर रहमतुल्लाह अलैह जो लोगत के इमाम हैं जिन के कमाले अदब पर इजमा है फरमाते हैं कि इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह को उस इल्मे लोगत में कमाले तबौहुरर हासिल है उन्हों ने इमामे शाफई रहमतुल्लाह अलैह के बाज़ मुहावरात की शरह लिखी है और अपनी किताब के मुक़द्दमें में यह ऐतेराफ किया है कि उन के मिस्ल अदब लोगत और जाहिलियत के इस्तेआरों का जानने वाला कोई न था।

इमाम राज़ी रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि फन्ने लोगत के माहिरीन का इत्तेफाक़ है कि इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह उस फन्ने लोगत में अइम्मये लोगत के सर ताज हैं। और जिस तरह हातिम ताई की सेख़ावत और हज़रत सय्यदना अली कर्रमल्लाहु वज्ह की शोजाअत मुसल्लमा है इसी तरह इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह इल्मे अदब, लोगत और नौह में मुम्ताज़ तरीन फर्द हैं।

अबू अब्बास सालब रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह लोगत का ख़ज़ाना हैं और वह ख़ुद इस क़ाबिल हैं कि उन से लोगात के मानी व मक़ासिद हासिल किय जायें।

तीर अंदाज़ी:

इस दौर के नुक़तये नज़र से मज़हबी आलिम को गाज़ी बनना ज़रूरी था। और तीर अंदाज़ी अरबी सिपाहियाना ज़िंदगी का ख़ास जौहर था। इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह उस फन में माहिर थे तीर

अंदाज़ी में आप को वह मलेका हासिल था कि कुरैश में उन का कोई सानी न था। दस निशाने मैं एक अमदन क़तअ करते ताकि नज़रे बद से महफूज़ रहें आप बाकमाल अश्ख़ास की बड़ी क़द्र करते थे। एक मर्तबा आप जा रहे थे तो एक शख़्स को देखा कि तीर अंदाज़ी की मश्क़ कर रहा है आप की मौजूदगी में उसका तीर सही निशाने पर लगा आप ने उसको तीन दीनार दिये और माज़रत की कि काश मेरे पास और दीनार होते तो मैं तुम्हें दे देता।

फहमे कुरआन:

आप अक्सर इस जुमला का ऐआदा फरमाते रहते थे कि मुझे इस शख़्स पर तअज्जुब है जो लोगते अरब व अय्यामे अरब से नावाक़िफ होने के बावजूद कुरआन शरीफ की तफ्सीर करने की जुरअत करता है कोई भी शख़्स कुरआन मजीद से नसीहत हासिल कर सकता जब तक कि उस का नफ्स कुरआनी वादों पर मुतमइन न हो जाये। वईद से लरज़ जाये वहदानियत और रिसालत के हुकूक़ से सही तौर पर आशना हो सके और जब तक कि उसके मानी को समझने की अहलियत पैदा नहीं कर लेता और उसका तरीक़हाये बयान की हलावत महसूस नहीं कर लेता और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हालाते ज़िंदगी पर और उन वक़ाये पर जिन के लिहाज़ व मुनासेबत से नुज़ूले कुरआन हुआ है बाख़बर नहीं होता। उन तमाम उसूलों की तफसील आप की किताब "अल उम्म" और अहकामे कुरआन में मुलाहेज़ा फरमायें। और आप फरमाते हैं कि लोगात और कलामे अरब और उन तामाम बातों पर उबूर हो जाने के बाद सब से बाला तर नूरे बसीरत भी होनी चाहिये।

वजूहाते नज़ामे कुरआन मस्लन मुजमल, मुबीन, मुहकम, मुत्शाबेह, आम व ख़ास, नासिख़ मंसूख़, ऐतबार , अमसाल, क़ेसस, अहकाम, अस्बाबे नुज़ूल और मुहावराते अरब उन सब पर आप की

गायर नज़र थी इमाम यूनुस रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह इस ख़ूबी से कुरआन मजीद की तफ्सीर बयान किया करते थे कि गोया आप नुज़ूले कुरआन के वक़्त मौजूद थे।

हज़रत जुनैद रहमतुल्लाह अलैह फरमाया करते थे कि कुरआन शरीफ को इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह से ज्यादा समझने वाला कोई नहीं है। और आप खुद फरमाते हैं कि कुरआने करीम में कोई ऐसा कलमा नहीं जिस का मतलब मुहावरये अरब के लेहाज़ से मैं न जानता हूँ। फहमे कुरआन की एक मिसाल रूयत आख़ेरत में बारी तआला की निसबते सहाबाये केराम रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन का इत्तेफाक़ है। आयत :

كَلَّا اِنَّهُمْ عَنْ رَبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَمَحْجُوْبُوْنَ.

बेशक काफिर अपने रब से उस दिन महजूब रहेंगे।

इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि नाराज़गी की बिना पर एक क़ौम का महजूब होना दलालत करता है कि रज़ा मंदी की वजह से दूसरी क़ौम उसको देखेगी। उस से बढ़ कर आप का यह क़ौल है कि ख़ुदा की क़सम अगर मोहम्मद बिन इदरीस (शाफई रहमतुल्लाह अलैह) को इस बात का यक़ीन न होता कि यौमे मिआद में अपने रब को देखेगा तो दुनिया में उसकी इबादत न करता। यह सिर्फ रब्बुल आलमीन के कलाम का नमुना है जो आप ने कहा वरना अल्लाह तआला बज़ातिही मुस्तहिक़ है।

अहले सुन्नत का इजमा है कि आप मुमिनीन को रुयते बारी होगी जैसा कि हदीस में है।

اِنَّكُمْ سَتَرَوْنَ رَبَّكُمْ كَمَا تَرَوْنَ الْقَمَرَ لَيْلَةَالْبَدْرِ

तुम क़रीब में अपने रब को देखोगे जैसे कि चौधवीं रात के चाँद को दखते हो।

मोतज़ला कहते हैं कि तुम क़रीब में अपने परवरदिगार की रहमत को देखोगे। मोतज़ला का यह क़ौल ख़ेलाफे इजमा है।

फहमे हदीस:

इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने इबतेदा में इल्मे हदीस ही की जानिब तवज्जह फरमाई और उस फन में आप को ख़ुसूसी तअल्लुक़ और लगावो था इसी लगावो की वजह से आप ने मुअत्ता इमाम मालिक रमतुल्लाह अलैह को दस साल की उम्र में हिफ्ज़ कर लिया। और दीगर शुयूख़े कामेलीन से हदीस हासिल किया और आप ने उस में बलंद मुक़ाम पाया। फिक़्ह में आप की ज़्यादा शोहरत हुई। मगर फक़ीह की बगैर हदीस पर नज़र वसी होने की फक़ीह बन नहीं सकता। फिक़्ह शाफई पर नज़र डालने से उसका बख़ूबी अंदाज़ा होता है कि आप को इल्मे हदीस में क्या मर्तबा हासिल था। और आप ने फरमाया कि :

اذا صح الحديث فهو مذهبى

जो हदीस सही हो वही मेरा मज़हब है और जिस दौर में आप ने कसबे इल्म किया वह दौर इल्मे हदीस का ख़ूब तरक़्क़ी पर था।

ज़ाफरानी रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि असहाबे हदीस सो रहे थे तो इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने उन्हें बेदार किया उन्हें इमाम अहमद रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि कोई ऐसा मुहद्दिस नहीं जिस ने क़लम व दवात को हाथ लगाया हो और इमाम शाफई का उसकी गर्दन पर ऐहसान न हो फरमाते हैं हमें मुजमल मुफस्सल और नासिख़ व मनसूख़ और हदीस का इल्म नहीं हुआ जब तक हम इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह की मजलिस में न बैठे।

एक दफा इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह हरम शरीफ में तशरीफ फरमा थे और आप के अतराफ लोगों का हुजूम था और आप फरमा रहे थे ऐ इराक़ वालो। ऐ शाम वालो अगर किसी हदीस के बारे में कुछ पूछना हो तो मुझ से दरयाफ्त कर लो। इमाम अहमद

रहमतुल्लाह अलैह के साथ इसहाक़ रहमतुल्लाह अलैह भी थे उन्हों ने फरमाया कि चलो उस नौजवान से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक हदीस का मतलब मालूम करें। इमाम अहमद रहमतुल्लाह अलैह ने उस हदीस के बारे में सवाल किया:

مكنو ا الطيور فى اوكارهم.

रात के वक़्त परिन्दों को अपने घोंसलों से न उड़ाओ।

उस पर इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया कि अहले अरब क़ब्ले इस्लाम जब रात के वक़्त सफर करते तो परिन्दों से शुगून (फाल) लेते वह परिन्दों को उड़ाते परिन्दा दायें तरफ उड़ जाता तो अपने सफर कामियाब समझते और बायें तरफ उड़ता तो वह सफर नन करते। लिहाज़ा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि उसकी कोई हक़ीक़त ही नहीं। हर काम अल्लाह तआला के भरोसे पर रहे परिन्दों को अपने घोंसलों में रहने दो यह सुन कर इमाम इसहाक़ रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया अगर हमारा सफर इराक़ से हेजाज़ तक सिर्फ इस हदीस की शरह के लिए होता तो भी कामियाब होता बेशक उस नौजवान का दावा सच्चा है।

इमाम अहमद रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि किसी ने इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह से एक मसअला दरयाफ्त किया तो आप ने जवाब दे कर दलील में एक हदीस पेश की तो उस शख़्स ने आप से कहा कि क्या आप उस हदीस पर अमल करते हैं उस पर आप को बहुत गुस्सा आया और फरमाया क्या तुम ने मुझे कभी कनीसा से निकलता देखा या मेरे गले में ज़ुन्नार को देखा:

اذا صح الحديث فهو مذهبى

इमाम सख़ावी रहमतुल्लाह अलैह ने फतहुल मुगीस में लिखा है कि इमाम अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि मैं

ने मोअत्ता इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह को उन के शागिर्दो से दस बार सुना था जो हुफ्फाज़े हदीस थे। लेकिन जब इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह से मुलाक़ात हुई तो फिर उसका ऐआदा किया और मैंने उन को सब से बेहतर पाया और मुहद्देसीन उस इसनाद को सिलसिलतुज़्ज़हब कहते हैं।

عن احمد عن شافعی عن مالک عن نافع عن ابن عمر

मिन जुमला दीगर तसानीफ के इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह की एक किताब इख़्तेलाफुल हदीस भी है जो एक फकीह और मुहद्दिस के लिए निहायत मुफीद है।

औलाद:

आप की एक अहलिया मुहतर्मा थीं उन का नसब हज़रत उसमान गनी रज़ि अल्लाहु अन्हू से मिलता है। अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन उमर राज़ी रहमतुल्लाह अलैह अपनी किताब मनाक़िबुश्शाफई में लिखते हैं कि हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के दो साहबज़ादे थे। बड़े का इस्मे गेरामी मुहम्मद है उन की कुन्नियत अबू उसमान थी। इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया था कि मैं उन का नाम रखा हूँ जो मुझे सब से ज़ादा महबूब है और दूसरे साहबज़े का बचपन ही में इंतेक़ाल हो गया था।

जिस वक़्त इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने वफात पाई तो यह उस वक़्त मक्का में मुक़ीम थे। इमाम अहमद रहमतुल्लाह अलैह उन से फरमाया करते थे कि मैं तीन वजूहात की बिना पर आप से मुहब्बत करता हूँ। एक तो यह कि तुम मेरे उसताज़ इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के साहबज़ादे हो। दूसरे यह कि तुम क़ुरैशी हो। तीसरे यह कि तुम मुत्तबये सुन्नत हो। साहबज़ादे

फरमाया करते थे कि इमाम अहमद रहमतुल्लाह अलैह ने मुझ से बारहा फरमाया कि मैं छः आदमियों के लिए ख़ास तौर पर सजदे में दुआ करता हूँ उन में से एक इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह भी हैं। आप के साहबज़ादे हलब और हज़ीरह में क़ाज़ी थे। २४० हि. में उन्हों ने वफात पाई।

हुलिया:

शैख़ तक़ीयुद्दीद इब्ने सलाह रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं आप मेयाना क़द थे। और ख़ूबसूरत थे पेशानी कुशादा थी। रुख़्सार उभरे हुये न थे। चेहरा पर गोश्त न था गर्दन लम्बी थी। मेहंदी का ख़ेज़ाब लगाते (इत्तेबाये सुन्नत में) अगर आप ज़बान बाहर निकालें तो नाक को लगती थी। बीनी मुबारक (नाक) बलंद थी और उस पर चेचक का निशान था। और आप के दोनों अबरू मिले हुये न थे। दंदाने मुबारक के दरमियान कुशादगी थी। आप के बाज़ू और पिंडलियाँ दराज़ थे। गंदुमी रंग था। जिल्द पतली, मुसतक़ीम थे यानी झुके हुये क़ामत के नान थे।

तसानीफ:

हज़रत मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाह अलैह ने सराहत की है कि आप की तसानीफ एक सौ तेरह थीं अल्लाम हमवी ने आप की किताबों की मुकम्मल फिहरिस्त में १४३ से ज़ादा किताबें बतलाई हैं जिन में मशहूर यह हैं। किताबुल उम सात जिल्दों में है और ज़ख़ामत तक़्रीबन चार हज़ार सफहात हैं किताबुर्रिसाला यह फसाहत व बलागत और बेहद मुश्किल है।

हाफिज़ इब्ने हजर रहमतुल्लाह अलैह कहते हैं कि इमाम मज़नी रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया कि मैंने इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह से ५०० मर्तबा किताबुर्रिसाला को पढ़ा। हर

मर्तबा एक नया लुत्फ आया और अजीब अजीब इन्केशाफात हुये।

उसके अलावा "मुसनद इमाम शाफई" किताब "इख़्तेलाफे मालिक व शाफई" "अहकामुल कुरआन" "इख़्तेलाफुल हदीस" किताबुल ऐलल" और कई किताबें हैं।

इमाम हुरमला रहमतुल्लाह अलैह ने आप की एक तसनीफ को मुर्तब किया जिस का नाम "किताबुस्सुन्न" है और इमाम मज़नी रहमतुल्लाह अलैह ने एक तसनीफ मुर्त्तब किया है जिस का नाम मबसूत है।

इमाम इसहाक़ बिन रहविया रहमतुल्लाह अलैह से जब पूछा गया कि इस क़द्र कम उम्री में इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने इतने बलंद पाया तसानीफ को कैसे मुर्त्तब किया। तो आप ने कहा उस कम उम्री की वजह से खुदाये तआला ने उन को मुकम्मल अक़्ल अता फरमा दी थी।

तज़्केरये शोयूख़:

इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के शोयूख़ बहुत से हैं जिन हज़रात से आप ने इल्म हासिल किया उन में चंद मशहूर आइम्मये केराम यह हैं।

१. हज़रत इमाम मालिक बिन अनस रहमतुल्लाह अलैह जो बलंद पाया मोहद्दिस मुम्ताज़ फक़ीह इमामुल मदीना थे। अहले हेजाज़ को आप पर ऐतेमाद था। आप ८० हि. में पैदा हुये और १७९ हि. में वफात पाई। मदीना मुनव्वरा में जन्नतुल बक़ी में मदफून हैं।

२. हज़रत फुज़ैल बिन अयाज़ रहमतुल्लाह अलैह आप औलियाए उज़्ज़ाम व मुहद्देसीने केराम में मुम्ताज़ हैं ख़ुरासान के रहने वाले थे मक्का मुअज़्ज़मा में मुस्तक़िल क़याम फरमाया। आप आमश रज़ि अल्लाहु अन्हू, यहिया बिन सईद अंसारी रज़ि अल्लाहु

अन्हू, इमाम जाफर सादिक़ रज़ि अल्लाहु अन्हू से रिवायत फरमाया है। तमाम मुहद्देसीन आप की जलालते शान के मोतरिफ हैं। आप आबिद, मुत्तक़ी, फाज़िल और कसीरुल हदीस थे आप से इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने रवायतें की हैं १८७ हि. मक्का मुकर्रमा में आप ने वफात पाई।

३. हज़रत सुफियान बिन ऐनिया रहमतुल्लाह अलैह। आप हुज्जतुल इस्लाम, हफिज़ुल हदीस, आबिद, ज़ाहिद और मक्का मुकर्रमा में अपने वक़्त के ज़बरदस्त इमाम थे इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि अगर इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह और इमाम सुफ्यान बिन ऐनिया रहमतुल्लाह अलैह न होते तो हेजाज़ में इल्मे हदीस न होता आप ने सत्तर हज किये आप फरमाते हैं कि मैं मैदाने अरफात में यह दुआ करता कि इलाही उस मुक़द्दस मुक़ाम में मेरा यह हज़ आख़िरी न हो। जब सत्तर हज हो चुके तो आप मुझे ख़ुदा से सवाल करने में शर्म आई और दुआ न की इसी साल १९८ हि. ९१ वर्ष की उम्र में इंतेक़ाल हो गया।

४. मुस्लिम बिन ख़ालिद ज़ंजी रहमतुल्लाह अलैह आप ने उमर बिन दीनार रहमतुल्लाह अलैह। ज़ैद बिन असलम रहमतुल्लाह अलैह हेशाम बिन उरवा रहमतुल्लाह अलैह और मोहम्मद बिन शहाबुद्दीन ज़ोहरी रहमतुल्लाह अलैह से अहादीस में रवायत की है। फिक्ह इमाम अब्दुल मलिक बिन अब्दुल अज़ीज़ फक़ीहे हरम से हासिल किया। तीन वर्ष तक शेखुल हरम रहे इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने इबतेदा में फिक्ह उन्हीं से हासिल की १८० हि. में वफात पाई।

उन के सिवा आप के और बहुत से शुयूख़ हैं जिन में से चंद के असमाये गेरामी यह है:

इबराहीम बिन मादुज़्ज़ुहरी मुतवफ्फा १८३ हि.

मुहम्मद बिन हसन शेबानी (शागिर्द इमामे आज़म)	१८९
इसहाक़ बिन यूसुफ अल वसती	१९५
मुहम्मद बिन उमर अल वाक़ेदी	२०७
इसमाईल बिन इबराहीम अल क़रशी	१९३
मुहम्मद यज़ीद अल वास्ती	१८८
हातिम बिन इसमाईल अल मदनी अल कूफी	१८७
मरवान बिन माविया अल फज़ारी	१९३
हम्माद बिन ज़ैद अल बसरी	१९७
हेशाम बिन यूसुफ अस्सोनानी	१९७
दाऊद बिन अब्दुर्रहमान अल मक्की	१७५
वकी बिन अल जर्राह	१९६
ओबाद बिन अल आवाम	१८५
यहिया बिन हस्सान अल तैनसी	२०८
अब्दुल्लाह बिन नाफे अल मदनी	२०६
यहिया बिन सलीम अल मलकी	१९४
अब्दुल करीम बिन मुहम्मद अल जुरजानी	१७०
यूसुफ बिन ख़ालिद अस्समती	१८९
मुहम्मद बिन इसमाईल बिन अबी फिदैक	२००
यूसुफ बिन उमर बिन यज़ीद	२०५

तलामिज़ा:

आप के शागिर्दों की सही तादाद मोतय्यन करना मुश्किल है। रबी बिन सुलेमान रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि मैंने इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के दरवाज़े पर साथ सौ सवारियाँ देखी हैं। यहाँ चंद मुम्ताज़ शागिर्दों का तज़केरा किया जाता है उन से इस्तेफादा पर मशाहिर व अकाबिर फख़्र महसूस करते हैं।

१. इमाम अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाह अलैह आप की

पैदाइश १६४ हि. बगदाद में हुई तालीम के बाद अपनी कामिल तवज्जोह इल्मे हदीस पर मबज़ूल रखी माहे रबीउल अव्वल २४१ हि. में वफात पाई तक़रीबन पंद्रह लाख आदमियों ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ी। बगदाद में तदफीन अमल में आई।

२. रबी बिन सुलेमान रहमतुल्लाह अलैह १७४ हि. में पैदा हुये। इमामे फिक़्ह थे। आप जामा उमर बिनुल आस रज़ि अल्लाहु अन्हू में मुअज़्ज़िन थे और बड़ी ख़ुश इलहानी से अज़ान दिया करते थे। इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि रबी रहमतुल्लाह अलैह ने मेरी बड़ी ख़िदमत की है आप उन से फरमाते कि अगर इल्म घोल कर पिलाने की चीज़ होती तो मैं तुम्हें घोल कर पिला देता और रबी रहमतुल्लाह अलैह से इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह की किताबों की बेहद इशाअत हुई उन से अबू दाऊद, नेसई, इब्ने माजा, तहावी रहमतुल्लाह अलैहिम ने रवायतें की हैं २७० हि. बउम्र ९६ साल वफात पाई।

३. हुरमेला बिन यहिया मिस्री रहमतुल्लाह अलैह यह इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के ख़ास शागिर्दों में से हैं। उन से इमाम मुस्लिम रहमतुल्लाह अलैह इब्ने माजा ने रवायतें की हैं इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के क़लमी मुसव्वदात का ज़ख़ीरा उन के पास काफी था। पैदाइश १६६ हि. और २४४ हि. में उन का इंतेक़ाल हुआ।

४. अबू इबराहीम इसमाईल बिन यहिया मज़नी रहमतुल्लाह अलैह १७५ हि. में पैदा हुये बड़े ज़ाहिद आलिम, मुजतहिद और बड़े मुनाज़िर थे इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने उन के बारे में "अगर यह शैतान से भी मुनाज़रा करें तो गालिब आ जायेंगे" इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि मज़नी रहमतुल्लाह अलैह मेरे मज़हब का नासिर है। आप मर्दों को ख़लिसतन लिल्लाह

गुस्ल देते थे और फरमाते, यह इस लिए करता हूँ कि मेरे दिल में सख़्ती न पैदा हो जाये आप से तहावी रहमतुल्लाह अलैह इब्ने ख़ुज़ैमा रहमतुल्लाह अलैह, इब्ने अबी हातिम रहमतुल्लाह अलैह, ज़करिया साजी रहमतुल्लाह अलैह ने रवायतें की हैं। आप की तसानीफ बकसरत हैं जैसे जामे सगीर, जामे कबीर, अल मुख़्तसर, नेहायतुल इख़्तेसार वग़ैरह आप बड़े मुस्तजाबुद्दावात थे। रमज़ान २६४ हि. में वफात पाई।

५. अबू याकूब बवैती रहमतुल्लाह अलैह हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के आप अरशद तलामेज़ा में शुमार किये जाते हैं। आप बड़े ज़ाकिर व आबिद थे हमेशा उन के होंट ज़िक्रे इलाही में हिलते ही रहते थे। इंतेक़ाल से क़ब्ल इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने आप को अपना क़ायम मुक़ाम बना कर मसनदे इमामत पर बैठाया था आप से रबी बिन सुलेमान रहमतुल्लाह अलैह यहिया बिन उसमान ने रवायतें की हैं आप को मसअलये ख़ल्क़े कुरआन के सिलसिले में बगदाद में गिरिफ्तार किया गया। लोहे की ज़ंजीरों से जकड़ दिया गया। बगदाद के जेल में अल्लाह तआला की जनाब में गिरया व ज़ारी व दुआ करते हुये २३१ हि. में वफात पाई।

६. इमाम हुमैदी रहमतुल्लाह अलैह आप का नाम अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर बिन ईसा बिन अब्दुल्लाह अल हमीदी रहमतुल्लाह अलैह है आप हाफिज़ुल हदीस और बड़े फक़ीह थे इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के तलामज़ा में सब से बड़ों में शुमार किये जाते थे और आप बड़े मुख़्य्यर थे। इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैह, ज़ोहली रहमतुल्लाह अलैह, अबू हातिम रहमतुल्लाह अलैह और बशीर बिन मूसा रहमतुल्लाह अलैह से रवायतें की हैं। इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि हुमैदी रहमतुल्लाह अलैह हदीस के इमाम हैं। बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैह ने उन से ७५ रवायतें की हैं २१९ मक्का मुकर्रमा में आप ने वफात पाई।

७. हसन बिन मुहम्मद ज़ाफ़रानी रहमतुल्लाह अलैह आप क़सबये ज़ाफ़रानिया के रहने वाले थे। और ज़ाफ़रानी ही ज़्यादा तर इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के हलक़ये दर्स में क़ेरात करते थे यूसुफ बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल बर रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि इस वक़्त उन से बेहतर फसीह और लोगत का जानने वाला कोई न था और उन से इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैह, अबू दाऊद और इमाम निसई, इमाम तिर्मीज़ी , इब्ने माजा और इब्ने ख़ुज़ैमा रहमतुल्लाह अलैहिम अजमईन ने रवायतें की हैं २५९ में वफात पाई।

८. सुलेमान बिन दाऊद रहमतुल्लाह अलैह यह इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के मुम्ताज़ तलामेज़ा में से हैं। इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह फरमाते थे कि मैं ने दो शख़्सों को बड़ा अक़लमंद पाया। एक सुलेमान बिन दाऊद रहमतुल्लाह अलैह दूसरे इमाम अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाह अलैह हैं आप से इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैह, अबू दाऊद, निसई, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा रहमतुल्लाह अलैहिम ने बवास्ता हारून जमाल रहमतुल्लाह अलैह रवायतें की हैं। २१९ हि. बगदाद में वफात पाई।

इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के ख़्वाब:

१. हज़रत रबी रहमतुल्लाह अलैह कहते हैं कि मैं हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह को अपना यह ख़्वाब बयान करते हुये सुना हूँ। मैंने मुल्के यमन या बगदाद में एक ख़्वाब देखा गोया मैं तवाफ के खुले हिस्से (मताफ) में बैठा हुआ हूँ अचानक हज़रत सय्यदना अली बिन अबी तालिब रज़ि अल्लाहु अन्हू तशरीफ लाये। मैंने आप के सामने जल्दी से खड़ा हो गया और मुसाफा किया। आप ने मुझे गले लगाया और मुआनक़ा कर के अपनी उंगली से अंगूठी निकाल कर मेरी उंगली में पहना दिया।

उसी रोज़ सुबह मुअब्बिर से मैंने उस ख़्वाब को सुनाया उस ने कहा ऐ अबू अब्दुल्लाह(हज़रत इमाम की कुन्नियत) ख़ुश हो जाओ हज़रत अली इब्ने अबी तालिब रज़ि अल्लाहु अन्हू से मुसाफा करना हिसाब व किताब (क़यामत) के दिन अमन का परवाना है। तुम्हारी उंगली में हज़रत का अंगूठी पहनाना इस का मतलब यह हैं कि सय्यदना अली इब्ने अबी तालिब रज़ि अल्लाहु अन्हू के इस्मे ग्रामी की तरह तुम्हारा नाम भी शोहरत पायेगा।

२. हाफिज़ इब्ने हजर रहमतुल्लाह अलैह लिखते हैं कि ज़करिया साजी रहमतुल्लाह अलैह ने हज़रत रबी रहमतुल्लाह अलैह से रिवायत की है कि इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया।

"मैं ने ख़्वाब में देखा कि कोई शख़्स आया और मेरी किताबों को हवा में फैलाया वह सारी किताबें उड़ गईं'' आप फरमाते हैं। मैंने बाज़ मुअब्बिरी को क़िस्सा सुनाया तो एक मुअब्बिर ने कहा।

ان صدقت رؤیاک لم یبق بلد من بلاد الاسلام الا دخله علمک.

अगर आप का यह ख़्वाब सच्चा है तो बेलादे इस्लामिया में से कोई शहर बाक़ी न रहेगा मगर यह कि आप का इल्म इस में दाख़िल हो जायेगा।

अल्क़ाब हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह:

हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह की तारीफ में उलमाये केराम ने जिन अलक़ाब के साथ आप का ज़िक्र फरमाया है उन में से चंद अर्ज़ा ज़ेल हैं उस से आप की अज़मते शान का अंदाज़ा किया जा सकता है और यह हाशिया शरीशी अलल हरीरी से माख़ूज़ हैं।

इमामुल अनाम	ख़ल्क़ के इमाम
निज़ामुल इस्लाम	इस्लाम का सरमाया

हादियुद्दुआत	दाइयाने इस्लाम के रहनुमा
दाइयुल हुदात	रहनुमायाने इस्लाम के दाई

احدالائمة الاربعة الاطواداشامخة فی الدین الأ جواد.

उन अइम्मये केराम में से एक जो दीन के बलंद और ऊँचे पहाड़ और साहबे सख़ावत हैं।

اکسیر العلوم وکلیل الرسوم رضیع لبان النبوة علم العلماء شنظیة من علمه حلم الحلماء جذوة من حلمه.

कीमियाये उलूम शआरे दीन के ताज मुरस्स, सीनये नुबूव्वत से दूध पीने वाले, उलमा का इल्म आप के इल्म का एक हिस्सा है और बुर्दबार लोगों की बुर्दबारी आप के इल्म का एक शरारा है अक़लमंदों की अक़ल आप के अक़ल का एक शरारा है।

افضل العلماء اعلم الفضلاء.

उलमा में अफज़ल तमाम अहले फज़ीलत में ज़्यादा इल्म रखने वाले।

وعقائد الاصول مقتدحة من زناد کلماته

इस्लाम के बुनियादी उसूल आप के कलेमात के चक़माक़ से निकले हुये हैं।

صدر البدور بدرالصدور

महताबाने इल्म का सरदार, सरदाराने इल्म के महताब।

وقواعد الفروع مفترحة من عداد نغماته.

इस्तिंबाते मसाइल के क़वाइद आप के उम्दा कलाम के फैज़ान अता के मुजव्वज़ा हैं।

ورة الاصلاف من صمیم آل عبد مناف

ख़ानदाने अब्दे मुनाफ के दुर्रे यतीम ।

كشف الظلمة عن الامة وصرف منهم المظلمة المداهمة

उम्मत से तारीकी को दूर किया बेइंसाफी को उन से हटाया।

فارس هيجاء المشكلات ومقوم عوجاء المعضلات

मुश्किल मसाइल की जंग में शहसवार दुश्वार मसाइल की कमान को दुरुस्त करने वाले।

بعلم كالبحر اللجحى ورأى كالبدر فى الليل الدجى

समुद्र जैसे बे पायाँ इल्म से तारीक रात में चौदहवीं के चाँद जैसी रोशन राये से।

منبع السنن متبع السنن.

सुन्नतों का सर चश्मा, शरीअत के पाबंद।

مذهب المؤيد بنصوص القراٰن و فصول الفرقان

आप का मस्लक नुसूसे कुरआन और आयाते फुरक़ानी से साबित व मज़बूत है।

فاز بغلبات الأقران

हमअस्र उलमा के मुक़ाबिलों में कामियाबी हासिल किया।

وحاز قصبات الرهان

इल्मी मसाबेक़त में गालिब रहे।

أسس بنيانه علىٰ تقوىٰ من اللّٰه ورضوان

आप ने अपने मस्लक की बुनियाद तक़्वा और अल्लाह तआला की रज़ा पर रखी है।

بطهارة الاعراق ودمائة الاطلاق وفخامة شرف الامومة وكرامة طرفى الابوة والعمومة.

नसब की पाकीज़गी के साथ और ननयाली शराफते पेदरी और जद्दी बुज़ुर्गी के साथ।

فهو بين المذاهب والا ديان كالناظر فى الاجفان والسمع فى الآذان والعقل فى الانسان و العدل للسلطان

आप का मज़हब दूसरे मज़हब के मुक़ाबले ऐसा है जैसे पलकों में आँख और कानों में समाअत और इंसानों में अक़्ल है और जैसे बादशाह के लिए इंसाफ है।

احله اللّٰه محل القدس واولى اليه سحاب الانس

अल्लाह तआला ने आप को पाकीगज़ा मुक़ाम में उतारा और उनसियत के बादल बरसा कर ऐहसान फरमाया।

इमाम शाफई रहमतुल्लाह बहैसियत मजद्दिद:

अब्दुल मलिक बिन अब्दुल हमीद मैमूनी रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि मैं एक मर्तबा हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में था आप के पास हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह का तज़केरा हुआ तो इमाम अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाह अलैह को देखा कि उन्हों ने बड़ी अज़मत से आप का तज़केरा फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मरवी है।

ان اللّٰه عزوجل يبعث بهٰذه الامة علىٰ راس كل مائة سنة رجلا يقيم لها امرد ينها فكان عمر بن عبدالعزيز علىٰ راس المائة وارجو ان يكون الشافعى علىٰ راس المائة الاخرىٰ

अल्लाह तआला इस उम्मत में हर सौ साल पर एक ऐसी शख़्सियत (मजद्दिद) को पैदा करता है जो उम्मत के लिए दीन को क़ायम करता है। तो पहले सौ साल पर सय्यदना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाह अलैह थे और मुझे उम्मीद है कि हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह दूसरे सौ साल पर भेजे गये हैं।

इमाम अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाह अलैह का दूसरा क़ौल है कि:

فكان فى المائة الاولىٰ عمر بن عبدالعزيز و فى المائة الثانيه الشافعى.

पहली सदी के मुजद्दिद हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाह अलैह थे और दूसरी सदी के मुजद्दिद इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह थे।

जमहूर का इत्तेफाक़ है कि इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह दूसरी सदी के मुजद्दिद थे।

हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के मनाक़िब में उलमाये सल्फ की तसानीफ:

इमाम सुबकी रहमतुल्लाह अलैह तबक़ाते शाफैय्या कुबरा स.८४ मुत्तलबी इमाम आज़म आलिम अज़ीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा ज़ाद भाई की सीरत के उनवान से एक बाब क़ायम करने का ज़िक्र करते हुये लिखते हैं। हम से पहले अइम्मये केराम उस मक़सद की तरफ सबक़त कर चुके हैं और आप की सीरत के मुख़्तलिफ उनवान पर बहुत कुछ लिख चुके हैं।

मेरे इल्म की हद तक सब से पहले इमाम दाऊद बिन अली असबहानी रहमतुल्लाह अलैह ने कई किताबें लिखी हैं फिर ज़करिया बिन यहिया साजी और अब्दुर्रहमान बिन हातिम रहमतुल्लाह अलैह और उन के बाद अबुल हसन मुहम्मद बिन हुसैन इबराही अबरी रहमतुल्लाह अलैह ने एक जामे किताब लिखी है जो ७४ अबवाब पर मुश्तमिल है। हकिम हफिज़ अबू अब्दुल्लाह बिन सबा रहमतुल्लाह अलैह ने भी एक जामे तालीफ फरमाई और ज़माना में

अबू अली हसन बिन हुसैन बिन हुक्मान असफहानी रहमतुल्लाह अलैह ने एक मुख़्तसर किताब लिखी है। और उस के बाद अबू उबैदुल्लाह इब्ने अबी शाकिर क़त्तान रहमतुल्लाह अलैह की तालीफ मंज़रे आम पर आई इमाम ज़ाहिद इस्माईल बिन मोहम्मद सरख़्सी रहमतुल्लाह अलैह ने एक सौ साला अबवाब पर मुश्तमिल किताब लिखी। फिर अल्लामा अबू मंसूर अब्दुल क़ाहिर बिन ताहिर बगदादी रहमतुल्लाह अलैह ने दो किताबें लिखीं उस में से एक ज़ख़ीम किताब आप के मनाक़िब पर मुश्तमिल है। और दूसरी मुख़्तसर मगर तहक़ीक़ी किताब है उस में जुरजानी हनफी रहमतुल्लाह अलैह की जानिब से हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह पर जो ऐतराज़ मंसूब हैं उस का रद किया गया है। उसके बाद अल्लामा हाफिज़ अबू बकर बहेक़ी रहमतुल्लाह अलैह ने आप के मनाक़िब में अपनी निहायत मशहूर जामे तहक़ीक़ी किताब लिखी। उन हज़रात के अलावा बेशुमार उलमाये केराम ने आप के मनाक़िब में किताबें लिखीं हैं। और न तमाम किताबों में जो मेरी नज़र से गुज़री और आप के मनाक़िब में लिखी हैं सब से बेहतर और जामे किताब अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन उमर राज़ी रहमतुल्लाह अलैह की तसनीफ है। आप के मनाक़िब में अहादीसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उलमाये केराम के चंद अक़्वाल मुलाहेज़ा फरमायें।

मनाक़िब:

हाफिज़ इब्ने हजर रहमतुल्लाह अलैह ने अबू दाऊद से रवायत की है कि हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हू फरमाते हैं कि मुझ से हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हू ने फरमाया कि मैं इस बात की गवाही देता हूँ कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फरमाते हुये सुना हूँ कि :

لاتؤموا قريشاً وائتموابها

तुम कुरैश के इमाम मत बनो तुम उन की इक़्तेदा करो।

ولا تقدموا على قريش و قد موها

और क़रैश के आगे मत बढ़ो उन को आगे बढ़ाओ।

ولاتعلموا قريشاً و تعلوامنها

और कुरैश को मत सिखाओ उन से सीख़ो

فان امانة امين من قريش تعدل امانة اثنين من غيرهم

इस लिए कि कुरैश के एक अमीन की अमानत गैर कुरैश के दो अमानतों के बराबर है।

وان علم عالم قريش يسع طباق الارض

कुरैश के एक आलिम का इल्म सारी रुये ज़मीन पर छा जायेगा। और एक रिवायत मे है कि :

ان علم عالم قريش مبسوط على الارض

कुरैश के एक आलिम का इल्म सारी ज़मीन में फैल जायेगा।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हू से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया:

اللهم اهدقريشاً فان عالمها يملأ طباق الارض علما

ऐ अल्लाह कुरैश को हिदायत पर रख क्योंकि उसका एक आलिम सारी रुये ज़मीन को इल्म से भर देगा।

اللهم كما اذقتهم عذاباً فاذقهم نوالا

ऐ बारी तआला जिस तरह उन को (कुरैश को) अज़ाब का मज़ा चखाया था। पस उन को अपनी रहमत का भी मज़ा चखा।

دعابهاثلاث مررات

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस दुआ को तीन मर्तबा फरमाया।

अबू दाऊद रहमतुल्लाह अलैह ने इब्ने मसऊद से और इमाम बेहक़ी रहमतुल्लाह अलैह ने हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हू व अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हू से रिवायत की है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

لَا تَسُبُّو اقُرَيْشاً فَاِنَّ عَلِمَهَا يَمْلَأ الْا رْض عِلْماً

कुरैश को बुरा न कहो क्योंकि उसका एक आलिम ज़मीन को इल्म से माला माल कर देगा। इस हदीस के मोताबिक़ चूंकि इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह कुरैशी थे और औलाद मुत्तलिब बिन अब्दे मुनाफ में पैदा हुये इस लिए इमाम अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाह अलैह ने ततबीक़ इस हदीस की इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह पर बयान की है और कहा है कि रुये ज़मीन में कोई कुरैशी आलिम इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के मिस्ल नहीं हुआ। और हाफिज़ इब्ने हजर रहमतुल्लाह अलैह ने इस हदीस के तुर्क़ को एक किताब में जमा किया है और उस किताब का नाम :

لذة الجيش فى طرق حديث الائمة من قريش

रखा।

मुसन्निफ मिश्कातुल मसाबिह ने अल इक्माल फी असमाईर्रेजाल में फरमाते हैं इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के फज़ाइल और कमालात ऐहातये बयान से बाहर है। वह तमाम दुनिया में बड़े आलिम और इमामे मश्रिक़ व मग्रिब हैं। ख़ुदा ने उनकी ज़ात में इस क़द्र उलूम और क़ाबिले फख़्र बातें जमा फरमा दी थीं कि उन से पहले या उन के बाद किसी भी इमाम में इस क़द्र उलूम और यह ख़ूबियाँ जमा नहीं फरमाईं और तमाम दुनिया में उन का तज़केरा इस क़द्र हुआ कि उन के सिवा किसी और का नहीं हुआ।

اخرج ابن عساكر عن علی بن المدینی قال علیکم یکتب الشافعی وقال انی لااترک للشافعی حرفاً واحداً لاکتبته فان فیه معرفة

अली इब्ने मदीनी रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया लोगो तुम इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह की किताबों को लाज़िम कर लो, मैंने इमाम शाफई के एक हर्फ को भी नहीं छोड़ा, सब को जमा रखा हूँ क्योंकि उस में मारफते इलाही है।

तारीख़ इब्ने ख़ल्क़ान में मशहूर नहवी तक़्तविया ने फरमाया कि इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह की मिसाल उलमा में ऐसी है जैसे चौदहवीं रात का चाँद आसमान के सितारों में है। ख़ुदा की क़सम वह तमाम उलूम का ख़ज़ाना हैं लोगों के सर ताज हैं। तमाम फोक़्हा से बलंद तर हैं आप ने नबी करीम सल्लाहु अलैहि व सल्लम की सही रवायतों पर अमल किया है।

इमाम हुसैन इब्ने अली कराबीसी रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि हम और हमारे पेशरौ यह नहीं जानते थे कि कुरआन व हदीस को किस तरह समझा जाये यहाँ तक कि हम ने उस का तरीक़ा इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह से सुना:

اخرج ابن عدی عن یونس یقول کانت الفاظ الشافعی کانها سکرو کنااذا قعدنا حوله لاندری کیف یتکلم کأنه سحر۔

यूनुस रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के अल्फाज़ गोया नशा की तरह हैं। हम आपके अतराफ बैठते तो समझ नहीं पाते थे आप किस तरह गुफतगू फरमा रहे हैं गोया (आप का कलाम जादू की तरह मोअस्सिर था) कि आप ने हम को जादू कर दिया है।

अबू मूसा ज़रीर रहमतुल्लाह अलैह से पूछा गया कि इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह की किताबें किस तरह लोगों के दिलों पर

असर कर गईं। आप ने फरमाया ख़ुदा का मंशा यही था कि उन का इल्म नुमायाँ हुआ इस लिये ख़ुदा ही ने उन की ज़ात को बलंद फरमाया।

हेलाल बिन अला रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि ख़ुदा ने चार मुक़तदिर हस्तियों को पैदा फरमा कर दुनिया पर ऐहसान फरमाया मिनजुमला उन में से एक इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह हैं।

इमाम हमीदी रहमतुल्लाह अलैह उसताज़ इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैह जब कभी इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह की रिवायत या क़ौल बयान करते तो यूँ फरमाते :

حدثنا سید الفقهاء الامام الشافعی

हम से तमाम फोक़्हा के सरदार इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने बयान किया।

इमाम अबू सौर रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि अगर कोई शख़्स यह कहे कि उस ने इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के दौर में उन जैसा शख़्स, इल्म, फसाहत, सेबात व इस्तेक़ामत और मारफत में देखा है तो वह झूठा है, उन जैसा इस दोर में कोई एक भी न था।

इबराहीम हरबी रहमतुल्लाह अलैह

سألت احمد عن الشافعی فقال حدیث صحیح وروأی صحیح

मैंने इमाम अहमद रहमतुल्लाह अलैह से इमाम शाफई रहमतुल्लाह के मुतअल्लिक़ दरयाफ्त किया तो आप ने फरमाया सही और सही राये है।

इसहाक़ बिन राहविया रहमतुल्लाह अलैह ने कहा :

لقینی احمد بن حنبل بمکة فقال تعالیٰ حتیٰ اریک رجلا لم ترعیناک مثله قال فجاء فاقامنی علی الشافعی

कि मक्का मुकर्रमा में अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाह अलैह ने मुझ से मुलाक़ात की और फरमाया।

आओ मैं तुम्हें एक ऐसे आदमी को दिखाता हूँ कि तुम्हारी आँखों ने इस जैसा नहीं देखा फिर वह मुझे इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के पास ला कर खड़ा कर दिये।

इमाम अय्यूब बिन सवैदुर्रमली रहमतुल्लाह अलै फरमाते हैं कि मेरा गुमान है कि मैं कितना ही ज़िंदा रहूँ मगर इमाम शाफई जैसा शख़्स अब न देख सकूंगा।

इमाम नेसई रहमतुल्लाह फरमाते हैं कि इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह का शुमार हमारे सिक़ह और महफूज़ उलमा में होता है। इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैह व इमाम मुस्लिम रहमतुल्लाह अलैह ने भी इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह की बेहद तारीफ व तौसीफ फरमाई है यह मुहद्देसीन (शाफईयुल मज़हब थे)

हज़रत अब्दुल्लाह अंसारी रहमतुल्लाह अलैह इर्शाद फरमाते हैं कि मैं इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह को दोस्त रखता हूँ अगरचे कि मैं शाफई नहीं हूँ मगर इस वजह से कि मैंने आप के जिस मुक़ाम पर भी नज़र डाली तो उनको आगे ही पाया।

इमाम मुहम्मद बिन हसन रहमतुल्लाह अलैह एक रोज़ हारून रशीद के दरबार में जा रहे थे रास्ता में इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह से मुलाक़ात हुई। इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैह फौरन अपने घोड़े से उतर पड़े और ख़ादिम से फरमाया कि दरबारे ख़ेलाफत में जा कर इत्तेला कर दो कि इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह मेरे पास तशरीफ लाये हुये हैं इस लिए मैं हाज़िर नहीं हो सकता। इमाम शाफई ने फरमाया आप तशरीफ ले जायें मैं फिर आ जाउंगा इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया वहाँ जाना

इस क़द्र ज़रूरी नहीं है जितना कि आप की तशरीफ आवरी से हमें इस्तेफादा ज़रूरी है।

बेहक़ी की रिवायत में है फरमाया हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह की ज़ात में इस क़द्र फज़ाइल व मनाक़िब जमा हैं कि किसी दूसरे की ज़ात में जमा नहीं हुये।

पहली चीज़ आप के नसब और मर्तबे की बुज़ुर्गी है और यह कि आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़ानदाने नुबुव्वत के चश्म व चराग हैं। और यह कि आप का मस्लक और अक़ीदा ख़्वाहिशाते नफ्स और बिदअतों से महफूज़ है और यह कि आप निहायत सख़ी और हदीस शरीफ की सहत व सुक़्म और नासिख़ व मनसूख़ से बख़ूबी वाक़िफ थे। और किताबुल्लाह और अहादीसे रसूलुल्लाह के हाफिज़ थे और सीरते तय्यबा और सीरते ख़ुलफाये केराम से वाक़िफ थे। और आप को मुख़ालेफीन की जालसाज़ी का कश्फ था। और इमाम अबू अब्दुल्लाह (इब्ने हंबल रहमतुल्लाह अलैह) जैसे जलीलुल क़द्र असहाब सुलेमान बिन दाऊद हाशमी, इमाम हमीदी, हुसैन कराबीसी, अबू सौर, ज़ाफरानी, बवैती, अबुल वलदी, हुरमला, रबी, हारिस बिन सुरैज, मज़नी रहमतुल्लाह अलैहिम जैसे बुज़ुर्ग आप के ज़ोहद इल्म और सुन्नत के ऐहतेमाम में मुत्तफिक़ हैं। आप के अज़मते शान पर जिस क़द्र उलमा मुत्तफिक़ हैं किसी दूसरे के लिए इस क़द्र मुत्तफिक़ देखा नहीं गया।

हाकिम रहमतुल्लाह अलैह ने रिवायत की है इमाम ज़ाफरानी रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया :

مارأیت مثل الشافعی افضل ولا اکرم ولا اسخیٰ ولا اتقیٰ ولا اعلم منه.

हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह से बढ़ कर अफज़ल व बुज़ुर्ग व सख़ी, परहेज़गार और आलिम मैंने किसी को नहीं देखा।

मामून रहमतुल्लाह अलैह ने कहा कि :

امتحنت محمد بن ادریس الشافعی فی کل شئی فوجدته کاملاً

मैंने मुहम्मद बिन इदरीस शाफई रहमतुल्लाह अलैह को हर चीज़ में आज़माया और आप को कामिल पाया।

क़ाज़ी अयाज़ रहमतुल्लाह अलैह ने मदारिक में बयान किया है। मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल हेकम रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया कि मुझ से मेरे वालिद ने कहा:

یابنی الزرم ھذا الرجل فما رأیت ابصر منه باصول الفقه اوقال باصول العلم قال محمد ولولا الشافعی ماعرفت الزی عرفت

ऐ बेटे तुम उन को लाज़िम कर लो। उसूले फिक़्ह या उसूले इल्म में उन से बढ़ कर बसीरत रखने वाला मैंने किसी को नहीं देखा। और फरमाया अगर इमाम शाफई रहमतुल्लाअ अलैह न होते तो मैं कुछ भी नहीं जानता।

इमाम अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इबराहीम अल बोशंजी रहमतुल्लाअ अलैह फरमाते हैं कि इस उम्मत में सदरे अव्वल के बाद लोगों के हालात को हम देखते हैं तो जलालते शान और बयान व ज़बान के ऐतबार से फसीह हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह से बढ़ कर किसी को नहीं पाते इस लिए कि आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रिश्तेदार हैं।

इमाम शाफई रहमतुल्लाअ अलैह की तारीफ में किसी ने क्या खुब कहा है।

ان ابن ادریس حقا — بالعلم اولیٰ و احریٰ

لانه من قریش — وصاحب البیت ادریٰ

बेशक मुहम्मद बिन इदरीस अश्शाफई रहमतुल्लाह अलैह इल्म

में लायक़ व फायक़ हैं क्योंकि वह कुरैशी हैं और घर वाला (घर की बात) को ज़्यादा जानता है।

इमाम निसई ने रिवायत किया है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया:

الائمة من قریش

अइम्मये कुरैश में से होंगे। और सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) में है:

لایزال ھذاالامر فی قریش مابقی فی الناس اثنان

लोगों में सिर्फ दो आदमी भी बाक़ी रह जायें तो यह अम्र (ख़ेलाफत)हमेशा कुरैश में रहेगा।

यह अहादीस शरीफा और इस माना में जिस क़द्र दीगर अहादीस हमारे असहाब हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के मनाक़िब में तालीफात नक़्ल किये हैं वह सब आप की अज़मते शान पर दलालत करती हैं।

इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह की वालिदाये मुहतर्रमा का नसब:

इमाम सुबकी रहमतुल्लाह अलैह साहबे तबक़ाते शाफय्या ने फरमाया कि आप की वालिदा मुहतर्मा का नसब जो मेरे पास क़ाबिले तरजीह है यह है:

فاطمه بنت عبداللّٰه بن الحسن بن الحسین بن مروان رحمھم اللّٰه۔

इमामुल अइम्मा अबू बकर मुहम्मद बिन इसहाक़ बिन ख़ुज़ामा ने यूनुस बिन अब्दुल अला को फरमाते हुये सुना कि हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह की वालिदा फातेमा हैं फिर उन का वही नसब ज़िक्र किया जिस को मैंने ऊपर बयान किया है।

यूनुस रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि मेरे इल्म की हद तक यह है कि हाशमिया ख़ातून के बतन से हाशमी बुज़ुर्ग की विलादत सिवाये उन दो बुज़ुर्गों के नहीं हुई एक हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि अल्लाहु अन्हू हैं दूसरे इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह हैं।

यहां उन अशआर का ज़िक्र मुनासिब मालूम होता है जो इब्ने मुक़री रहमतुल्लाह अलैह ने अपनी किताब में आप की शान में फरमाते है।

الشافعی امام کل ائمة تربی فضئله علی الألاف

हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह सारे अइम्मा के इमाम हैं और आप के फज़ाइल हज़ारों से बढ़ कर हैं।

ختم النبوة والامامة فی الهدیٰ بمحمدین هماالعبدمناف

नुबुव्वत और इमामत, हेदायत (दोनों) ख़त्म हो गई दो मुहम्मद पर और वह दोनों अब्दे मुनाफ के ख़ानदान से हैं।

और एक बुज़ुर्ग ने फरमाया

اثنان قد مضیافبورک فیهما عمر الخلیفة ثم حلف السودد

दो बुज़ुर्ग शख़्सियतें गुज़री हैं जिन में बरकत अता हुई एक ख़लीफा सय्यदना उमर रज़ि अल्लाहु अन्हू हैं और दूसरे साहब सेयादत।

الشافعی الالمعی محمد ارث النبوة وابن عم محمد

और सहेबे ज़ोकावत इमाम मुहम्मद शाफई हैं वह इल्मे नुबुव्वत के वारिस और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचाज़ाद भाई हैं।

हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के मुनाज़रात:

ज़ेल में आप के चंद मुनाज़रे दर्ज किये जाते हैं।

मुनाज़रे सिर्फ इज़हारे हक़ के लिए होता है। अइम्मये मुजतहेदीन उस उम्मत के मुख़्लिस तरीन बुज़ुर्ग हैं अपने मुनाज़ेरात में ज़ोहूरे हक़ के बाद रोजू करने में उन को अदना तअम्मुल तक नहीं होता था हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह को अल्लाह तआला ने मुनाज़रा की बड़ी कुदरत अता फरमाई थी।

हाफिज़ इब्ने हजर रहमतुल्लाह अलैह तवालियुत्तासीस में लिखते हैं हज़रत हारून बिन साद रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया :

لو ان الشافعی ناظر علی هذا العمود الذی من حجارة بانه من خشب لغلب لاقتداره علی المناظرة۔

अगर हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह इस पत्थर के सुतून को लकड़ी का साबित करने के लिये मुनाज़रा फरमायें तो वह अपनी कुदरते मुनाज़रा की बिना पर गालिब हो जायेंगे।

मोहम्मद बिन अब्दुल हेकम रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं:,

لورأیت یناظرک لظننت انه سبع یاکلک

अगर तुम से इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह मुनाज़रा करें तो तुम ख़्याल करोगे कि वह भेड़िये कि तरह तुम को खा जायेंगे।

और एक मुक़ाम पर फरमाते हैं:

کنت اذا رأیت من یناظر الشافعی لرحمه

मैं किसी को हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलै से मुनाज़रा करते देखता तो उस आदमी पर मुझ को रहम आ जाता है।

हज़रत इमाम शाफई और हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाह अलैहुमा के दरमियान मुनाज़रा:

बयान किया गया है कि तारिके सलात (नमाज़ छोड़ने वाला) के बारे में हज़रत इमाम अहमद रहमतुल्लाह अलैह और हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के दरमियान हुआ।

इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया ऐ अहमद रहमतुल्लाह अलैह क्या तुम तारिके सलात को काफिर क़रार देते हो?

इमाम अहमद रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया हाँ।

इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया फिर वह मुसलमान होना चाहे तो क्या करे?

इमाम अहमद रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया ला इलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह की गवाही दे।

इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया वह तो ला इलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह का हमेशा क़ायल है।

इमाम अहमद रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया, तो वह नमाज़ पढ़ने से सेमुसलमान हो गया।

इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया :

صلوٰۃ الکافر لا یصح ولا یحکم بالاسلام بھا

काफिर की नमाज़ तो होती ही नहीं फिर उसकी नमाज़ के ज़रिया इस्लाम का हुक्म कैसे लगाया जा सकता है।

فانقطع احمد وسکت.

उसके बाद इमाम अहमद रहमतुल्लाह अलैह ख़ामूश हो गये और सुकूत इख़्तेयार फरमाया।

इमाम इसहाक़ रहमतुल्लाह अलैह से मरवी है हम मक्का

मुकर्रमा में थे और वहाँ इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह और इमाम अहमद रहमतुल्लाह अलैह भी थे। इमाम अहमद रहमतुल्लाह अलैह इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के पास बैठे थे और मैं उनके पास नहीं बैठता था। इमाम अहमद रहमतुल्लाह अलैह ने मुझ से कहा ऐ अबू याकूब (इमाम इसहाक़ की कुन्नियत) आप उन के पास नहीं बैठे? मैंने कहा मैं उनके पास क्या करूँ वह तो तक़रीबन हमारे हम उमर हैं मैं इब्ने अैनिया रहमतुल्लाह अलैह और दूसरे बुज़ुर्गों को उन की ख़ातिर कैसे छोड़ूँ।

इमाम अहमद रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया अफसोस तुम पर! अफसोस उन मशाइख़ का इल्म तो तुम से नहीं छुयेगा लेकिन इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह का इल्म आप को कहाँ मिल सकेगा।

इसहाक़ कहते हैं मैं आप के पास गया और अहले मक्का मुकर्रमा के घरों के किराया के बारे में मुनाज़रा किया। इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने मुनाज़रा करने में तसाहुल किया (वह आमादा नहीं था) मैंने ख़ूब तक़रीर की और जब मैंने अपनी गुफतगू ख़त्म की तो मेरे साथ शहर मरो का एक आदमी था उसकी तरफ मुड़ कर मैंने कहा क्या तुम्हारा शहर मरो इसी तरह बे कमाल है। हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह समझ गये कि मैंने उन को कमतर ख़्याल किया है फिर वह मुझ से फरमाये क्या तुम इस मसअला में मुनाज़रा करोगे मैंने कहा मुनाज़रा ही के लिये आया हूँ।

हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया अल्लाह तआला का इर्शाद है:

للفقراء المھا جرین الذین اخرجو امن دیارھم

उन फोक़रा की उन के मालिकान की तरफ निस्बत किया है। और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फतहे मक्का के मौक़े पर फरमाया :

من اغلق بابه فهو امن ومن دخل دار ابی سفیان فهو آمن

जो कोई अपना दरवाज़ा बंद करले उसको अमान है और जो कोई अबू सुफयान के मकान में चला जाये अमान है।

बताओ इस फरमान में आप ने मकानात की निस्बत उन के मालिकान की तरफ फरमाई है या गैर मालिक की तरफ?

और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरामया :

وهل ترک لنا عقیل من دار

क्या अक़ील ने हमारे लिए कोई घर रखा है? (यानी नहीं रखा)

इमाम इसहाक़ रहमतुल्लाह अलैह ने कहा मेरे क़ौल की सहत की दलील यह है कि बाज़ केबार ताबेईन ने यह बात कही है।

इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने हाज़ेरीन से फरमाया यह कौन है आप को बताया गया कि यह इसहाक़ बिन इबराहीम हंज़ली रहमतुल्लाह अलैह हैं तो इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया क्या आप वही हैं जिस का अहले ख़ुरासान अपना फक़ीह समझते हैं।

इमाम इसहाक़ रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया हाँ वह इसी तरह समझते हैं।

इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया आप की जगह कोई दूसरा होता तो मैं उसके निचोड़ने का हुक्म देता मैं कह रहा हूँ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया और तुम कह रहे हो अता ताउस, हसन और इबराहीम (तबेईन) ने यूँ कहा

है। क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ किसी और की बात दलील हो सकती है। (हरगिज़ नहीं)

इमाम इसहाक़ रहमतुल्लाह अलैह ने कहा। अच्छा आप कुरआन की आयत पढ़ये:

سواء ان العاکف فیه والباد

उस में मुक़ीम और बाहर से आने वाले बराबर हैं।

हज़रत इमाम शफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया यह सिर्फ मस्जिदे हराम के लिए है।

दाऊद बिन अली असफहानी रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि इसहाक़ ने इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह की दलील को समझा नहीं। हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह का मंशा यह बताना था कि मक्का मुकर्रमा की सर ज़मीन अगर लोगों के लिए मुबाह होती तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यूँ फरमाते हम को जो मुक़ाम मिले या हम जिस शख़्स के भी घर में उतरें वह हमारे लिए जायज़ है आप ने ऐसा नहीं फरमाया बल्कि आप ने फरमाया:

لم یترک لناعقیل لکنا

अक़ील ने हमारे लिए कोई घर नहीं रखा। आपके इस इर्शाद में इस बात की वज़ाहत है कि जो कोई मक्का की किसी ज़मीन का मालिक हो जाये तो वह उसी की मिल्क है।

इमाम इसहाक़ रहमतुल्लाह अलैह के बारे में बयान किया जाता है वह जब कभी हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह का ज़िक्र करते तो अपने हाथ से अपनी दाढ़ी पकड़ लेते और कहते:

واحیاتی من محمد بن ادریس

यानी इस मसअला के बारे में मुहम्मद बिन इदरीस (इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह) के मुक़ाबे में मेरी ज़िंदगी पर अफसोस है।

इमाम इसहाक़ रहमतुल्लाह अलैह कहते हैं मैं जब समझ गया कि ला जवाब हो गया हूँ तो वहाँ से उठ गया।

इमाम मुहम्मद बिन हसन और इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैहुमा के दरमियान मशहूर मुनाज़रा का ख़ुलासा:

इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैह ने इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह से फरमाया आप क्या फैसला देंगे इस आदमी के बारे में जो किसी का शहतीर (नाट) गसब कर के अपना घर बनाये और उस पर एक हज़ार दीनार ख़र्च करे उसके बाद शहतीर का मालिक आया और दो आदिल गवाहों के ज़रिया साबित किया कि उस ने मेरा शहतीर गसब करके अपना घर बनाया है।

इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने जवाब दिया शहतीर के मालिक को उसकी क़िमत लेने के लिए कहूँगा अगर वह शहतीर ही का मुतालबा करे तो शहतीर उखाड़ कर उसके हवाले कर दुंगा।

इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया आप उस आदमी के बारे में क्या कहते हैं कि जिस ने रेशमी तागा गसब कर के अपने पेट को सी दिया फिर तागा का मालिक दो गवाहों को पेश करके तागा गसब करना साबित कर दे क्या उसके बेट से आप तागा निकलवायेंगे।

हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया तागा नहीं निकाला जायेगा।

इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया आप अपनी पहली बात (शहतीर के मसअले) को छोड़ दिये।

इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया आप जल्दी न करें आप यह तो बतायें कि उस शहतीर को कोई गसब न करता और उसका मालिक ख़ुद उखाड़ना चाहते हो तो यह जायज़ होगा या ना जायज़।

इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया यह जायज़ है।

इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया अगर वह तागा (जिस से उस ने पेट को सी लिया है) उसी का हो फिर वह उसके लिए जायज़ है या ना जायज़।

इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया ना जायज़ है।

इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया फिर आप जायज़ चीज़ को ना जायज़ चीज़ पर क़यास कैसे करते हैं।

इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया यह बताइये कि अगर शहतीर को गसब कर के सिसी कश्ती में लगा दिया और वह कश्ती बीच समद्र में हो तो क्या आप कश्ती से उस तख़्त को उखाड़ देंगे।

इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया नहीं बलकी इस कश्ती को किसी करीबी बंद्रगाह लाने का हुक्म दूँगा फिर वह तख़्ता निकाल कर उसके मालिक को दे दुंगा।

इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया :

لاضررولاضرار

किसी को नुक़सान न पहुंचाया जाये।

इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने जवाब दिया उस ने ख़ुद ही अपने को नुक़सान पहुंचाया है किसी और ने उसको नुक़सान नहीं पहुंचाया।

इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने जवाब दिया उस ने ख़ुद ही अपने को नुक़सान पहुंचाया है किसी और ने उसको नुक़सान नहीं पहुंचाया।

फिर इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया आप क्या फरमाते हैं इस मसअले में कि किसी ने एक आदमी की बांदी को गसब किया और उस से मुबाशरत किया और दस लड़के पैदा हुये और वह सब ऐसे आलिम हुये कि मिमबरों पर ख़ुतबा दिये और लोगों के दरमियान फैसला किये और बंदी के मालिक ने दो आदिल गवाहों के ज़रिया साबित किया कि वह बांदी उसकी है और उस आदमी ने उस को गसब कर लिया है मैं अल्लाह तआला का वास्ता दे कर पूछता हूँ कि आप क्या फैसला देंगे।

इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया वह लड़के उस बांदी के मालिक के गुलाम क़रार दिये जायें।

इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया उन दोनों में से किस में नुक़सान ज़ादा है उन लड़कों को गुलाम क़रार देने में या इमारत में से शहतीर निकालते में।

इमाम मुहम्मद बिन हसन रहमतुल्लाह अलैह ख़ामूश हो गये।

हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह का दौरे इब्तेला:

अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन उमर राज़ी रहमतुल्लाह अलैह ने अपनी किताब मनाक़िबे इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के बाबे सोयम की पहली फस्ल में हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के दौरे इब्तेला को बयान किया है हम उस का ख़ुलासा ज़ेल में ज़िक्र करते हैं।

हज़रत इमाम रहमतुल्लाह अलैह हज़रत अब्दुल्लाह बिन हसन बिन अली रज़ि अल्लाहु अन्हुम के असहाब में थे। आप को बतारख़ि १० शाबान शे दो शंबा पावँ में बेड़ियाँ डाल कर इराक़ में लाया गया उस वक़्त हज़रत इमाम अबू यूसुफ रहमतुल्लाह अलैह क़ाज़ीयुल क़ुज़ात थे और हज़रत इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैह ओहदये कोतवाली पर फायज़ थे।

इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैह हारून रशीद रहमतुल्लाह अलैह के पास पहुंच कर फरमाते हैं अल्लाह तआला का शुक्र है कि उस ने आप को मुल्क में इक़तेदार दिया और हर सरकश व फरमांबरदार पर हाकिम बनाया फिर आप ने फरमाया अब्दुल्लाह बिन हसन रज़ि अल्लाहु अन्हुमा की एक मुख़्तसर जमात और उन में एक साहब सब के नुमाइंदे हैं जिन का नाम मुहम्मद बिन इदरीस रहमतुल्लाह अलैह है उन का दावा है कि वह अमर (ख़िलाफत) के ज़्यादा हक़दार हैं और उन को उन की उम्र का ऐतबार करते हुये निस्बतन ज़्यादा इल्म का दावा है। (वह साहबे वजाहत और साहबे लिसान भी हैं) मुझे उन की (जमात) की तरफ से आप की हुकूमत के ख़िलाफ अंदेशा है अल्लाह तआला आप की मुश्किलात में काफी हो जाये और लग्ज़िशों को दर गुज़र फरमाये फिर आप ख़ामूश हो गये हारून रशीद रहमतुल्लाह अलैह ने हज़रत अबू यूसुफ रहमतुल्लाह अलैह से दरयाफ्त किया ऐ अबू याक़ूब आप बताइये क्या मामला है अबू यूसुफ रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया इमाम मुहम्मद ठीक कहते हैं फिर इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह को लाने का हुक्म दिया गया जब आप हारून रशीद के पास लाये गये तो लोग आप की तरफ टिकटिकी लगा कर देखने लगे आप ने ख़लीफा से फरमाया अस्सलामु अलैकुम या अमीरल मुमिनीन व

रहमतुल्लाहि व बरकातुहू। हारून रशीद ने कहा व अलैकुम अस्सलाम व रहमतुल्लाहि व बरकतुहू। फिर फरमाया आप ने एक ऐसे तरीक़े से (सलम में) आगाज़ फरमाया जिस का हुक्म नहीं दिया गया है। (लफ्ज़े अमीरिल मुमिनीन को शामिल करना) और हम ने आप को जवाब दिया और उसका जवाब का एक मुहकम फरीज़ा अदा किया। और मुझे तअज्जुब है कि आप मेरी मजलिस में मेरी इजाज़त के बगैर गुफ्तगू शुरू किये।

इमाम शाफई रहमतुल्लह अलैह ने फरमाया अल्लाह तआला का इर्शाद है:

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْ مِنْكُمْ وَعَمِلُواالصَّالِحَاتِ لِيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِى الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنِهِمُ الَّذِىْ ارْتَضٰى لَهُمْ لَيُبَدِّ لَنَّهُمْ بَعْدَ خَوْفِهِمْ اَمَناً۔

तर्जुमा: अल्लाह ने वादा फरमाया है उन लोगों से जो तुम में ईमान लाये और नेक अमल किये हैं उन को ज़मीन में ख़लीफा बनाया गया जैसा कि उस ने उन से पहले पहले के लोगों के ख़लीफा बनाया था और उन के लिए उनके दीन को जिस को वह उन के लिए पसंद किया है मुस्तहिक़ कर देगा और उन के ख़ौफ को अमन से बदल देगा।

वह जब वादा करता है तो पूरा करता है। ऐ अमीरुल मुमिनीन उस ने अपनी ज़मीन पर तुम्हें इक़तेदार दिया और ख़ौफज़दा था तो मुझे अमन अता फरमाया। आप ने क़सम खाई कि आप अपनी क़ौम को बिला वजह क़त्ल न करेंगे और अगर वह आप की ख़िदमत में उज़्र पेश करें तो उस को झूठ न समझेंगे।

हारून रशीद रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया वाक़िया यही है अब आपे बताइये आप का उज़्र क्या है जबकि आप के साथी ने

हमारे ख़ेलाफ बगावत किया और कम दर्जा के लोग उनके साथ हो गये हैं और आप उन के सरदार हैं।

हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया आप ने मुझ से बयान करने की ख़्वाहिश की है मैं इंसाफ की बात करूंगा लेकिन बेड़ियों के बोझ के साथ बात करना मुश्किल है अगर बराहे करम उन बेड़ियों को मेरे पाँव से हटा दें तो मैं अपने आबा व अजदाद के तरीक़े के मुताबिक़ घुटनों के बल बैठुंगा और अपने बारे में वज़ाहत करूंगा और अगर मामला दूसरे (यानी उसके बरअक्स) हो तो आप का हाथ ऊँचा और मेरा हाथ नीचा है वल्लाहु गनीयुन हमीद और अल्लाह तआला बड़ा गनी और लायक़ हम्द है।

हारून रशीद रहमतुल्ला अलैह ने अपने गुलाम से कहा ऐ सिराज उन को छोड़ दो। फिर उस ने आप के क़दमों से बेड़ियाँ खोल दीं। अब हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह अपने घुटनों के बल बैठ गये और फरमाया ऐ अमीरुल मुमिनीन ख़ुदा की क़सम अल्लाह तआला मुझे अब्दुल्लाह बिन हसन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हू के झंडे तले उठाये (जैसा कि आप जानते हैं यह दोनों ख़ानदानी बुज़ुर्ग हैं (यानी अहले बैते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से हैं। राये में इख़्तेलाफ के मौक़े पर उन की अज़मत का इनकार नहीं किया जा सकाता है। यह बात मुझे और हर मुसलमान को पसंद है बनिस्बत उसके कि अल्लाह तआला कुतरी बिन फजाह मारक़ी ख़ारजी के झंडे तले उठाये।

हारून रशीद रहमतुल्लाह अलैह जो टेक लगा कर बैठा था सीधा बैठ गया:

صدقت وبررت لان تكون تحت راية رجل من اهل بيت رسول اللّٰه واله وسلم خير من ان تكون راية خارجى طغىٰ وبغىٰ۔

आप ने सच कहा और ठीक फरमाया कि अहले बैत में से किसी बुज़ुर्ग के झंडे तले रहना बेहतर है किसी ख़रजी सरकश व बागी के छंडे तले रहने से लेकिन तुम इस बारे में क्या कहते हो कि कुरैश सब के सब इमाम हैं और आप भी कुरैशी हैं। उस पर इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने यह आयत सुनाई:

يـآيُّهاالَّذِينَ امَنُوٓ اِنْ جَآءَ كُمْ فَاسِق" بِنبَاً فَتَبَيَّنُوٓ ا قَوْ مأَبِجهَالَةٍ فَتُصْبِحُوا عَلٰى مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِيْن.

ऐ ईमान वालो अगर कोई फासिक़ तुम्हारे पास कोई ख़बर लाये तो तुम ख़ूब गौर करो ऐसा न हो कि कहीं नादानी में किसी क़ौम पर तुम ने ज़्यादती कर दी(जब हक़ीक़त खुले तो) तुम अपने किये पर पछतावा करने लगो।

हाशा लिल्लाह। ख़ुदा की क़सम मैं ऐसी बात कहने लगूं।यक़ीनन बात पहुंचाने वाले ने झूट कहा और गुनाह मोल लिया। अमीरूल मुमिनीन मेरे पास इस्लाम की ताज़ीम है और निस्बत की भी ताज़ीम है और यह दोनों चीज़ें बेहतरीन वसीला हैं और उस शख़्स के लिए जो अल्लाह तआला के हुक्म के मुताबिक़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चाचा ज़ाद भाई का अदब बजा लाये जो उन के दीन के मुदाफेअत करता हो और उन की उम्मत की हिमायत करता हो उस के लिए यह काफी वसीला है।

रावी का बयान है हारून का चेहरा (ख़ुशी से) चमकने लगा। फिर हारून रहमतुल्लाह अलैह ने कहा आप का ख़ौफ दूर हो जाना चाहिये हम आप के क़राबत और आप के इल्म का पास व लेहाज़ रखेंगे। फिर उस ने आप को तशरीफ रखने का हुक्म दिया और सवाल किया कि:

كيف علمک بكتاب الله عز وجل

किताबुल्लाह अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल के बारे में आप का इल्म क्या है। सब से पहले इसी से आगाज़ यिा जाना बेहतर है। (यह सुन कर) हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया कि किस किताब के बारे में आप दरयाफ्त कर रहे हैं अल्लाह तआला ने अंबियाये केराम अलैहिमुस्सलाम पर बहुत सी किताबें नाज़िल फरमाया है और एक रिवायत में यह है जैसा कि ज़मख़्शरी रहमतुल्लाह अलैह ने भी बयान किया है अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पर एक सौ चार किताबें नाज़िल और इतनी ही किताबें शीस अलैहिस्सलाम पर उतारीं और आप ने उन को गंवाया। और इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने यह भी फरमाया।

وجمع الله فی القرآن كل مافی سائر الكتب

और अल्लाह तआला ने उन सारी किताबों में जो कुछ है उसको कुरआन करीम में जमा फरमाया।

चुनान्चे इर्शादे बारी तआला है:

وتبياناً لكل شيءٍ وهُدىً و موعِظة للمتقين۔

(कुरआन पाक) हर चीज़ की वज़ाहत और डरने वालों के लिए हिदायत व नसीहत है।

और अल्लाह तआला ने यह भी इर्शाद फरमाया (जो गलबा वाला और जानने वाला है):

كتاب احكمت اياته ثم فصلت

यह ऐसी किताब है कि उसकी आयतें मुहकम हैं फिर उन की तफसील भी की गई है।

हारून रशीद रहमतुल्लाह अलैह ने कहा आप ने बड़ी तफसील बयान फरमाई। और मैं तो सिर्फ अल्लाह तआला की इस

किताब के बारे में दरयाफ्त कर रहा हूँ जो मेरे चचाज़ाद और रसूले पाक हज़रत मुहम्मद मुसतफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुई है।

हज़रत इमाम शाफइ रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया:

ان علوم القران كثيرة

बेशक कुरआन के उलूम बेशुमार हैं आप उस के मुहकम के बारे में दरयाफ्त फरमा रहे हैं या मुतशाबेह से मुतअल्लिक़ (नुज़ूल के ऐतबार से) अव्वल वाली आयतों या बाद की अयतों के बारे में या नासिख़ व मंसूख़ से मुतअल्लिक़ दरयाफ्त कर रहे हैं। आप ने कुरआन के तमाम उलूम याहँ तक कि उलूमे कुरआन के ७३ अक़साम गिनवाये।

हारून रशीद रहमतुल्लाह अलैह ने कहा तो कुरआन के एक बड़े इल्म का दावा कर दिया (यह सुन कर) इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया। आदमी का इम्तिहान लेना ऐसा ही है जैसे ख़ालिस सोने को आग पर रखना (जिस की वजह से सोने की असलियत मालूम होती है) फिर हारून रशीद रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया :

كيف بصرك بسنة

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत के बारे में आप की नज़र कैसी है।

हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत के बारे में जानता हूँ कि उस में बाज़ वह अहकाम हैं जो अला वजहिल ईजाब (यानी बतौरे वजूब) हैं इन को छोड़ना जायज़ नहीं। और उन में बाज़ वह हैं जो (अला वजहिल हज़र) यानी बतौरे नही हैं उन को

करना जायज़ नहीं। और जो निसबत अला वजहिल ख़ास यानी जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ ख़ास है उस में आप के सिवा दूसरा शरीक नहीं। और वह उमूर जो अला वजहिल उमूम यानी बतौर उमूम के हैं और उस में दूसरा दाख़िल हो सकता है।

وماخرج جواباعن سؤال سئل فليس لغيره استعماله

यानी जो किसी साइल के जवाब में हो उस का इस्तेमाल दूसरे के लिए नहीं हो सकता और रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सीनये मुबारक में उलूम की कसरत की बिना पर जो सुन्नत इब्तिदा में जारी हुई और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसको किया है तो दूसरों के लिए उसकी पैरवी हो सकती है और उस में जो सुन्नत हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए ख़ास है दूसरों के लिए उसकी इत्तिबा नहीं हो सकती। (इस तफसील को सुन कर)

हारून रशीद ने कहा ऐ (इमाम) शाफई (रहमतुल्लाह अलैह) आप ने यह बड़ी अच्छी तर्तीब बयान फरमाई और हर क़िस्म को उसके मर्तबे में बयान फरमाया।

हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया:

ذالک من فضل اللّٰہ علینا و علی الناس و انما شرفنا برسول اللّٰہ وبک

यह हम पर और सारे इंसानों पर अल्लाह तआला का फज़्ल है और हमारा मर्तबा तो सिर्फ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की निस्बत और आप की वजह से है।

हारून रशीद रहमतुल्लाह अलैह ने दरयाफ्त फरमाया:

كيف بصرك بالعربية

ज़बाने अरबी में आप की नज़र कैसी है। तो इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया:

هی میداننا ، طباعنابها تقدمت والسنتنا بهاجرت

वह तो हमारा मैदान है हमारी तबीयतें उसी में नशो नुमा पाती हैं और हमारी ज़बानें उसी में जारी हैं।

ولقد ولدت وانا ماعرف اللحن فكنت كمن سلم من الداء فلم يجتج الى الدواء

मैं अपनी पैदाइश ही से ज़बान की गलती को नहीं जानता मेरा हाल उस आदमी की तरह है जो बीमारी से महफ़ूज़ रहा और उसको दवा की ज़रूरत ही नहीं हुई।

और कुरआन करीम मेरे लिए उसकी गवाही देगा। अल्लाह तआला का इर्शाद है।

وَمَاارُسَلْنَا مِنْ رَسُوْلٍ اِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهٖ (الاية)

وانت وانا منهم فالعنصر رصيف والبحر قومة منيفة وانت اصل ونحن فرع۔

और आप और मैं उन्हीं में से हैं अस्ल मज़बूत है ख़नदानी नसब आला है और आप अस्ल हैं हम फुरू हैं।

उस पर रशीद ने कहा आप ने सच कहा अल्लाह तआला आप को बरकत दे :

فكيف معرفتک بالشعر

शायरी के बारे में आप का मबलगे इल्म क्या है?

हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया शअरे जाहिली महज़रमी (ऐसे शोअरा के अशआर जो जाहिलियत और इस्लाम (दोनों दौर को पाये हैं) और जदीद शायरी को भी जानता हूँ और उन की तमाम बहरों (औज़ान) में भी बहरे तवील, कामिल, सरीअ, बहरे मुहब्बत, ख़फीफ अरजज़ और हज़ज व गज़ल के

अलावा अमसाल, तहानी और उन के अक़साम की तादाद को भी जानता हूँ और फरमाया मैं ख़ुद अशआर में से मशहूर और शाज़ की रिवायत करता हूँ और ऐसे उम्दा अशआर की रिवायत करता हूँ जो बसीरत को तेज़ करते हों।

फिर रशीद रहमतुल्लाह अलैह ने दरयाफ्त किया:

فكيف علمک بالاحكام

आप अहकाम के बारे में क्या जानते हैं।

हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया आप इबादत के बारे में पूछ रहे हैं या मामलात से मुतअल्लिक़ या ऐताक़ (गुलामों को आज़ाद करना) व मनाकेहत (मसाइले निकाह) के बारे में या जेहाद व जंगों से मुतअल्लिक़ या देयत (ख़ून बहा) के बारे में यहाँ तक कि आप ने अहकाम की तमाम क़िस्में गिना दीं।

फिर हारून रशीद रहमतुल्लाह अलैह ने कहा:

فكيف علمک بالنجوم

आप नुजूम (फल्कियात) के बारे में क्या जानते हैं।

हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया फलक दायर, नज्म साइज़, कुतुब नाइज़ और माई व नारी सब को जानता हूँ और अरब जिन को अनवा (कारतियाँ) कहते हैं उसको और मनाज़िलुन्नीरैन (सूरज चाँद के मनाज़िल) और रुजू व इस्तेक़ामत और सुऊद व नहूस और उनकी हैयतों और मेज़ाजों से वाक़िफ हूं और उन चीज़ों को भी जानता हूँ जिन से ख़ुश्की और तरी में रास्ते मालूम किये जाते हैं और जिन से नमाज़ के औक़ात और मौसमों के अहवाल और आम वाक़यात मालूम होते हैं उन सब को जानता हूँ।

फिर रशीद रहमतुल्लाह अलैह ने कहा:

فکیف علمک بالطب

इल्मे तिब के बारे में आप क्या जानते हैं।

(यह सुन कर) इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया:

اعرف ماقالت الروم مثل اوسطاً طالیس وبقراط وجالینوس وقرقوریوس بلغتها.

मैं उन तमाम चीज़ों को जानता हूँ जिस को अतिब्बये रूम जैसे अरस्तू, जालीनूस और क़रकूरिवस ने अपनी ज़बान में बयान किया है और उन बातों के भी जानता हूँ जिस को अतिब्बा अरब ने नक़ल फरमाया है और जिस को हिन्दुस्तान के फलासफा ने मदून किया और जिस को ईरान के उलमा जैसे तहमासप, साहरदोबज़र जमहर ने बयान किया है।

उसके बाद हारून रशीद ने कहा :

فکیف علمک بالانساب

आप अंसाब के बारे में क्या जानते हैं।

उस पर इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया ऐ अमीरुल मुमिनीन यह वह इल्म है कि हमारे लिए दौरे जाहिलियत में भी जबकि कफ्र का गलबा था और हक़ मगलूब था उस इल्मे अंसाब से नावाक़िफ रहने की गुंजाइश नहीं थी उस से तआरुफ और कुफू की मारफत हासिल होती है और मैं सारी क़ौमों और शोरफा के नसब और लोगों के कारनामों से वाक़िफ हूँ उस में मेरा और आप का नसब और मेरे और आप के आबा व अजदाद के कारनामे सब ही शामिल हैं।

रावी का बयान है हारून रशीद टेक लगा कर बैठा हुआ था उस ने जब हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह से इन बातों को सुना तो सीधा बैठ गया:

وقال یاابن ادریس لقد ملأت صدری وعظمت فی عنی

और फरमाया ऐ इब्ने इदरीस (इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह) आप ने (मालूमात से) मेरे सीने को भर दिया और मेरी आंखों में आप की अज़मत बैठ गई।

فعظنی موعظة اعرف بهامقدار علمک وکنه فهمک

अब आप मुझे नसीहत फरमाइये जिस से आप के इल्म का मर्तबा और फहम की हक़ीक़त जान सकूँ। हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया एक शर्त पर नसीहत करता हूँ। उस पर हारून रशीद रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया आप की शर्त मंज़ूर है और वह शर्त क्या है इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया शर्त यह है कि आप अपनी अज़मत को ख़त्म कर दें और दबदबा को हटा दें और अपने कंधों से तकब्बुर की चादर निकाल दें नसीहत को कुबूल करें और नसीहत की अज़मत करें और उसकी जानिब तवज्जुह दें और यह भी शर्त है कि अपने नफ्स का जायज़ा लें और अपने उयूब का परदा चाक करें। और अपने नफ्स को अपने रब के हुज़ूर में डाल दें।

यह सुन कर हारून रशीद रहमतुल्लाह अलैह ने जवाब दिया कि वह सब मुझे मंज़ूर है:

فعظ واوجز

पस आप मुझे नसीहत फरमायें और मुख़्तसर करें।

इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने अपने तह बंद को ठीक किया और आसतीन चढ़ाई और दोनों घुटनों के बल बैठ गये और हारून की तरफ इशारा किया और फरमाया:

من اطال عنان الامل فی العزة طوی عذار الحذر فی المهلة ومن لم یعول علیٰ طرق النجاة کان بمنزلة الاکتراث من اللّٰہ مقیما وکان فی امنه

مثل نسبح العنکبوت لایامن علی نفسه ولایضیئی له ماالظلم علیه من لبسه۔

तर्जुमा: जो इज़्ज़त के ज़माने में उम्मीद की लगाम को दराज़ रखे तो मोहलत (यानी तंगी) के ज़माने में ऐहतेयात की सख़्ती को लपेट देगा। (ऐहतेयात नहीं करेगा) और नेजात की राहों पर ऐतेमाद (तवज्जुह) न करे तो वह अल्लाह तआला से बे परवाह होने वाले की तरह है। अपने अमन में मकड़ी के जाले की तरह है जिस की अपने नफ्स पर नहीं मिल सकता और इल्तेबास की वजह से उस पर जो अंधेरा छा गया है उसके लिए रोशनी नहीं होती।

اما لو اعبرت بمن سلف واستقبلت بالحسنیٰ الموتنف ونظرت لیومک وقدمت لغدک و قصرت أملک وصورت بین عینک واستقصرت مدة الدنیا وتوجهت الی مایصلح حالک فی العقبیٰ لما امتدت الیک بک الندامة ولاابتدرتک الحسرات غدا فی القیامة.

लेकिन अगर आप असलाफ (गुज़रे हुये लोगों) से इबरत हासिल करें और आने वाले ज़माने का नेकी के ज़रिया इस्तिक़बाल करें और आज के लिए गौर करें और कल (आख़िरत) के लिए नेक आमाल का तोशा तैयार करें और उसको अपनी आंखों के सामने तसव्वुर करें और अपनी उम्मीदों को कम करें और दुनिया की मुद्दत (मोहलत) को कम समझें और उन चीज़ों पर तवज्जुह दें जो आख़िरत में तुम्हारी हालत को ठीक करने वाली हैं तो तुम को अपनी वजह से नेदामत का समाना करना नहीं पड़ेगा और कल क़यामत के दिन तुम को हसरतें नहीं होंगी।

ولکن ضرب علیک الهویٰ رواق الحیرة فاذا بدت لک الموعظة لم تکدتراه ومن لمیجعل اللّٰه نورافماله من نور۔

और लेकिन ख़्वाहिशे नफ्स तुम पर हैरत का परदा डाल दे

तो तुम्हारे सामने नसीहत ज़ाहिर होने पर भी तुम उसको न देख सकोगे और अल्लाह तआला जिस के लिए रोशनी न रखे तो उसके लिए कोई रोशनी नहीं है।

रावी का बयान है कि (यह सुन कर) हारून रशीद ख़ूब रोया और उसकी आवाज़ बलंद हो गई हाज़ेरीन में से बाज़ ने कहा कि ख़ामूश हो जाइये आप ने तो अमीरुल मुमिनीन को रुला दिया।

इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने गुस्से से देखा और फरमाया ऐ ज़ुल्म व ज़ोर के बंदो और उन ज़ालिमों के मददगारो जिन्हों ने दुनिया फानी को महबूब चीज़ के बदले अपने आप को बेच दिया और आख़िरत के अज़ाब को ख़रीद लिया क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जो तुम से पहले गुज़रे हैं उनको किस तरह ढील दी गई वह मुसलसल नेमतों में रहे फिर वह (अपने गुनाहों की वजह से) एक ज़बरदस्त बा इक़्तेदार की गिरिफ्त में पकड़ लिए गये क्या तुम ने नहीं देखा उन के गुनाहों ने उन को किस तरह रुसवा किया और उन पर ज़िल्लत की फटकार हुई वह महल्लात और नेमतों और हूर व कुसूर में रहने के बाद क़ब्रों में पत्थरों और चटानों के नीचे जा पहुंचे और उसके बाद उन को अल्लाह तआला के सामने ख़ड़े होना है और उन से नेमतों के बारे में सवाल होगा:

فکن للّٰه فی الیوم کماتحت ان یکون لک فی الغد

पस आज तुम अल्लाह तआला के लिए ऐसे हो जाओ जैसे कल अपने लिए चाहते हो अगर कोई दस आदमीयों पर भी हाकिम बनाया जाये तो क़यामत के दिन वह इस तरह हाज़िर होगा कि उसके दोनों हाथ उसके गर्दन के साथ बंधे हुये होंगे सिर्फ उसका इंसाफ ही उसको खोलेगा और ऐ हारून अब तुम ख़ुद अपने बारे में

ख़ूब जानते हो। (यह सुन कर) हारून रशीद का रोना और बढ़ गया और कहने लगा ऐ इब्ने इदरीस (इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह) अब (नसीहत में) कमी कीजिये तुम ने अपनी ज़बान को हमारे ऊपर बे न्याम कर दिया जो तलवार से ज़्यादा तेज़ है।

हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया ऐ अमीरुल मुमिनीन अगर आप नसीहत कुबूल फरमायें तो आप का फायदा है आप के लिए नुक़सान नहीं।

रशीद ने कहा निजात की क्या सूरत है? तो इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया कि तुम अल्लाह तआला और उसके रसूल की हुरमतों का ख़्याल रखो और रास्तों को पुर अमन बनाओ और उम्मत के मामला को (यानी उसकी फलाह) का ख़्याल रखो और माले गनीमत में मुहाजेरीन और अंसार रज़ि अल्लाहु अन्हुम की औलाद के हुक़ूक़ अदा करो ताकि मुहताजी उनके वतन में उन को परेशान न करे और तुम अवाम का ख़्याल रखो और (मुल्की) सरहदात का ख़्याल रखो और इंसाफ से काम लो और (अल्लाह तआला के रास्ता में) ख़र्च करो और अहले इल्म को दसार (नुमायाँ और इज़्ज़त का लिबास) और अहले बिदअत को शिआर (अंदर का कपड़ा जो इज़्ज़त का नहीं है) बनाओ यानी अहले इल्म को इज़्ज़त दो और नुमायाँ करो अहले बिदअत को इज़्ज़त न दो और दर पेश आने वाले मसाइल में अहले इल्म से मशवरा करो और अहले बैत में से कोई अल्लाह तआला के अहकाम के बर ख़िलाफ आप के साथ कोई मामला करना चाहे तो आप उसे दर गुज़र फरमायें।

हारून रशीद रहमतुल्लाह अलैह ने कहा आप ने जो कुछ बताया है उसको अंजाम देने की ताक़त कौन रखता है इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया वह जो आप के नाम से मौसूम है

और आप की जैसी जगह पर बैठा है(यानी आप ही उन उमूर को अंजाम दे सकते हैं)

हारून रशीद रहमतुल्लाह अलैह ने कहा मैं ने आप के लिए इनाम का हुक्म दिया है कुबूल फरमायें।

इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया हरगिज़ नहीं। क़सम बख़ुदा अल्लाह तआला मुझे यह न देखाये कि नसीहत (वाज़) पर जज़ा कुबूल करने से मुंह काला हो गया हो मैंने अल्लाह तआला से अहद किया है कि किसी ऐसे बादशाह से मेरी मुलाक़ात हो जाये जो अपने को बड़ा समझता है मैं उसको ज़रूर नसीहत करूंगा।

फिर इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह उठे और निकल गये। हारून रशीद रहमतुल्लाह अलैह ने इमाम अबू यूसुफ और इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैहुमा की जानिब मुतवज्जह हो कर फरमाया आज के जैसा दिन मैंने (ज़िंदगी में) हरगिज़ नहीं देखा फिर उसके बाद एक दिन इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह हारून रशीद के पास आये तो हारून रशीद ने आप को एक हज़ार दीनार (अशरफी) पेश किया आप ने उसको कुबूल फरमाया तो हारून रशीद हंस कर कहने लगा आप क्या ही अक़लमंद हैं, अल्लाह तआला आप के दुश्मन को हलाक करे फिर जब इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह निकल गये तो हारून रशीद ने अपने गुलाम सिराज को हुक्म दिया कि वह आप के पीछे जाये कि ताकि यह देखे कि आप (उन अशरफियों को) क्या करते हैं। गुलाम ने कहा कि आप उन अशरफियों को एक एक मुट्ठी ख़र्च करते गये यहाँ तक कि जब देवढ़ी से बाहर निकले तो सिर्फ एक मुट्ठी दीनार रह गये थे वह भी उस गुलाम (सिराज) को दे दिया और फरमाया उस से अपना काम

निकालो, गुलमा हारून रशीद के पास आ कर वाक़या की जो कुछ उसने देखा था इत्तेला दिया।

याद रहे कि उस वाक़या को मुख़्तलिफ तरीक़ों से बयान किया गया है और मैंने इस रिवायत को लिया है जो तमाम रिवायतों में सही तरीन है। वल्लाहु आलम

फस्ल:

इसी फस्ल में वह सवालात हैं जिन को हारून रशीद रहमतुल्लाह अलैह के सामने हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह से दरयाफ्त किया गया।

अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन उमर राज़ी रहमतुल्लाह अलैह ने अपनी किताब की दूसरी फस्ल में उन सवालात के बयान में जो हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह से किये गये थे इस वाक़्ये का ज़िक्र करते हुये बयान फरमाया है।

शैख़ इसमाईल बू संजी रहमतुल्लाह अलैह ने बयान किया है कि हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह एक दिन हारून रशीद के पास तशरीफ लाये तो हज़रत इमाम अबू यूसुफ और हज़रत इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैहुमा ने चंद मसाइल में आप का इम्तिहान लिया और उन मसाइल को एक पर्चा पर लिख कर उस मजलिस में पर्चा आप के हवाले कर दिया इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने उसी वक़्त उन तमाम मसाइल का जवाब दे दिया और फिर उन दोनों से आप ने दो ऐसे मसअले दरयाफ्त किये जिस का वह जवाब न दे सके और अब उन मसाइल को हम यहाँ बयान करते हैं।

सवाल:उन दोनों बुज़ुर्गों ने आप से एक सवाल यह किया कि एक आदमी ने अपने घर में एक बकरी ज़बह किया फिर किसी

ज़रूरत के लिए बाहर गया और वापस आ कर घर वालों से कहा तुम उस बकरी के गोश्त को खा लो यह बकरी मेरे लिए हराम है तो उसके लिए घर वालों ने कहा यह बकरी हम पर भी हराम है।

जवाब: आप ने जवाब दिया कि यह आदमी पहले मुशरिक था उस ने बुतों के नाम पर बकरी ज़बह किया था जब वह किसी ज़रूरत के लिये घर से निकला तो अल्लाह तआला ने उसको हिदायत दी और वह मुशर्रफ ब इस्लाम हो गया और वापस आया तो घर लालों से कहा अल्लाह तआला ने मुझे इस्लाम की तौफीक़ दी और यह ज़बीहा मुझ पर हराम है तुम उसको खा लो जब उसकी क़ौम (यानी घर वालो ने) यह बात सुनी तो उसके इस्लाम लाने से ख़ुश हुये और वह भी मुर्शफ बइस्लाम हो गये इस लिये यह ज़बीहा उन पर भी हराम है।

सवाल: उन दोनों बुज़ुर्गों ने एक सवाल यह किया एक आदमी का गुलाम भाग गया तो उस के मालिक ने कहा गुलाम मिलने तक अगर मैं खाना खा लूँ तो वह गुलाम आज़ाद है इस बात से छुटकारे की उस के लिए क्या सूरत है।

जवाब: आप ने जवाब में फरमाया अपने किसी लड़के पर उस गुलाम को हेबा कर दे और खाना खा ले फिर अपने हेबा को वापस ले ले।

सवाल: तीसरा सवाल यह है कि दो शख़्सों ने शराब पी ली एक पर हद जारी होगी और दूसरे पर हद जारी न होगी हालांकि दोनों मुसलमान हैं आज़ाद हैं और आक़िल हैं, उसकी क्या सूरत है।

जवाब: आप ने जवाब दिया कि उन दोनों में से एक बालिग है और दूसरा बच्चा (यानी ना बालिग) है।

सवाल: उन सवालात में एक सवाल यह था कि दो औरतों ने दो गुलामों से मुलाक़ात कीं और कहने लगीं:

مرحبا بينينا وابنى زوجنا وهما زوجانا

ख़ुश आमदीद हमारे बेटों के लिए और हमारे शौहरों के बेटों के लिए जो हमारे शौहर भी हैं।

जवाब: आप ने जवाब दिया कि वह दोनों लड़कों में से हर एक उस में की एक औरत का लड़का था और हर एक औरत ने अपनी सहेली के लड़के से शादी कर ली तो वह दोनों उन दो औरतों के भी बेटे हुये और हुक्मन उन के शौहरों के भी बेटे हुये और उन के शौहर भी हैं।

सवाल: फिर एक सवाल ऐसे आदमी के बारे में था कि उस ने अपने बेटे से कहा अगर मैं मर जाऊँ तो तेरे लिए दो हज़ार दीनार हैं और अगर तू मेरा पोता (इब्न इब्नी) होता तो तुझ को दस हज़ार दीनार मिलते।

जवाब: आप ने जवाब दिया कि वह शख़्स तीस हज़ार दीनार का मालिक था और उसके २८ बेटियाँ भी थीं हर बेटी को एक हज़ार दीनार का हिस्सा मिलेगा और बेटे को दो हज़ार दीनार मिलेंगे और अगर (बजाये बेटे) के पोता होता तो बेटियों के लिए दो सुलुस बीस हज़ार और माबकी दस हज़ार दीनार पोते को मिलेंगे।

सवाल: पाँच आदमी एक औरत से ज़ेना के मुर्तकिब हुये उन में से एक वाजिबुल क़त्ल है दूसरे पर रज्म है तीसरे पर हद जारी होगी (सौ कोड़े) चौथे पर निस्फ हद (पचास कोड़े) और पायचवें पर कोई सज़ा नहीं उसकी सूरत क्या होगी।

जवाब: आप ने जवाब में फरमाया पहले ने ज़ेना को हलाल

समझा इस लिए वह मुर्तद हो गया इस लिए वह जाजिबुल क़त्ल है। दूसरा शादी शुदा था (इस लिए उसकी सज़ा रज्म है।) तीसरा गैर शादी शुदा है (इल लिए उसकी सज़ा हद है) चौथा गुलाम था (गुलाम पर निस्फ हद है) पांचवाँ मजनून (दीवाना) था (दीवाना पर कोई सज़ा नहीं)

जवाब: अगर वह गुलाम क़त्ल के या ज़रबे शदीद के ख़ौफ से उस अमल पर मजबूर हुआ तो उस पर कोई सज़ा नहीं और अगर उसको ऐसा ख़ौफ नहीं था तो निस्फ हद जारी होगी और वह औरत अगर शादी शुदा है तो उस के लिए रज्म (संगसार किया जाना) वाजिब है और अगर वह शादी शुदा नहीं है तो उस पर हद जारी होगी।

सवाल: एक ऐसे शख़्स के बारे में सवाल किया गया जिस ने क़ौम की नमाज़ में क़ौम की इमामत किया और सीधे जानिब जब यह सलाम फेरा तो उसकी बीवी मुतल्लक़ा हो गई और जब बाईं जानिब सलाम फेरा तो नमाज़ उसकी बातिल हो गई और आसमान की तरफ देखा तो उस पर दो हज़ार दिरहम कल सुबह में देना वाजिब हो गया उसकी वजह क्या है।

जवाब: आप ने जवाब दिया यह शख़्स जब सीधी जानिब सलाम फेरा तो उसकी नज़र उस शख़्स पर पड़ी जो उसकी गौर मौजूदगी (यानी मफकुदुल ख़बर हो जाने की सूरत) में उसकी बीवी से शादी किया था। जब इमाम सलाम फेरा तो उसकी नज़र उसके शौहर (मफकुदुल ख़बर) पर पड़ी जो हाज़िर हो गया है(उसकी मौजूदगी की वजह से) उसकी बीवी उस दूसरे शख़्स के निकाह से मुतल्लक़ा हो गई (यानी ख़ारिजे निकाह हो गई) और जब बायें जानिब सलाम फेरा तो उसको जिस्म पर ख़ून का क़तरा नज़र

आया (उसकी वजह से) उसकी नमाज़ वाजिबुल अदा हो गई और जब आसमान की तरफ देखा तो चाँद नज़र आया और उस शख़्स के ज़िम्मे क़र्ज़ पहली तारीख़ को वाजिबुल अदा था उसकी वजह से कल सुबह क़र्ज़ की अदायगी उस पर ज़रूरी हो गई।

अगर यह ऐतेराज़ किया जाये कि शौहर के गायब हो जाने की वजह जो निकाह हुआ था वह निकाह ही नहीं था तो फिर उसको कैसे कहा जायेगा कि तलाक़ पड़ गई और इसी तरह से यह भी ऐतेराज़ किया जा सकता है कि जिस्म पर निजासत(यानी ख़ून के होते हुये नमाज़ ही नहीं होती फिर कैसे कहा जायेगा कि नमाज़ बातिल हो गई। इस ऐतेराज़ का जवाब यह है यहाँ हक़ीक़ी माना मुराद नहीं है बल्कि ज़ाहिरी सूरत का ऐतेबार किया गया है क्योंकि वह औरत ज़ाहिर के ऐतेबार से (यानी मफकूदुल ख़बरी की बिना पर) हलाल थी जब वह आदमी देखा कि उस औरत का पहला शौहर सलामती के साथ आ चुका है तो औरत के दूसरे शौहर के लिए हलाल होने का जो गुमान था वह जाता रहा।

इसी तरह नमाज़ का मसअला है जिस्म पर ख़ून की मौजूदगी में हक़ीक़त में वह नमाज़ ही नहीं है लेकिन वह शख़्स (जिस्म पर ख़ून लगने का इल्म न होने कि वजह से) नमाज़ पढ़ा था इस ज़ाहिर का ऐतेबार करते हुये यह कहा गया है वह नमाज़ बातिल हो गई।

सवाल: उन्हों ने एक सवाल यह किया कि एक इमाम चार आदमियों को नमाज़ पढ़ा रहा थ मस्जिद में एक दूसरा शख़्स आया और इमाम की सीधी जानिब उन के साथ नमाज़ में शरीक हो गया जब इमाम ने सीधी जानिब सलाम फेरा और नज़र उस आदमी पर पड़ी तो इमाम वाजिबुल क़त्ल हो गया। और ज़रूरी हो गया कि

इमाम उस आदमी के हवाले कर दी जाये और इमाम के साथ जो नमाज़ पढ़े थे उन में से एक एक पर अस्सी कोड़े हद लगाना और मस्जिद को उसकी बुनियाद तक शहीद कर देना ज़रूरी हो गया (उसकी क्या सूरत है)

जवाब: आप ने जवाब दिया कि यह औरत किसी की बांदी थी उससे आदमी ने निकाह किया और अब जो लड़का पैदा हुआ वह गुलाम ही हुआ फिर उस आदमी ने उसको तलाक़ दिया और उसके आदमी उस औरत को जो बंदी से ख़रीद लिया उसके बाद फिर एक लड़ा पैदा हुआ और ख़लीफा बना लिये उस लड़के का नाम मिंबरों पर लिया जाता है उन्हों ने यह सवाल भी किया एक शख़्स ने दूसरे शख़्स के सर पर ज़बरदस्ती मारा मज़रूब (मार खाया हुआ) का कहना है कि ज़ारिब (मारने वाले) ने अपने मार के ज़रिया उसकी एक आंख ज़ाये कर दिया है और उसकी नाक को ख़राब कर दिया है और उसकी ज़बान को बे हिस कर दिया है (उसकी तहक़ीक़ किस तरह की जायेगी)

जवाब: हज़रत ने जवाब में फरमाया कि उसको धूप में सो जाने और अैने सूरज के सामने उस आंख को खोलने के लिए कहा जायेगा। अगर वह आंख खोल दे तो वह अपने क़ौल में सच्चा है। इसी तरह आग से निकलने वाले धुवाँ को सूंघेगा अगर उसकी आंख से रुतूबत न निकले तो वह नाक के दावा में सच्चा है और उसकी ज़बान को सूई से चुभोया जायेगा अगर उस से काला ख़ून निकले तो ज़बान के बारे में भी उस का दावा सही है।

सवाल: उन दोनों बुज़ुर्गों ने एक सवाल यह किया कि दो शख़्स एक छत पर थे उन में से एक आदमी छत पर से गिर कर मर गया तो दूसरे पर उसकी बीवी हराम हो गई।

जवाब: इमाम आली हमाम ने जवाब में फरमाया उस (मरने वाले) आदमी ने अपनी बेटी की अपने गुलाम से शादी कर दिया था उस आदमी के मरते ही उस की बेटी उसके गुलाम की मालिक हो गई (जो उसकी बेटी का शौहर है) मालिक होने की वजह से वह अपनी मालिका पर हराम है।

रावी का बयान है कि जब इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह उन तामम सवालात का जवाब दिये तो हारून रशीद को आप के इल्म और उम्दा फहम व ज़ेहानत से तअज्जुब हुआ और फरमाया ख़ानदाने अब्दे मुनाफ की ख़ूबी अल्लाह ही के लिए है और इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह से ख़ेताब करते हुये फरमाया आप ने ख़ूब बयान किया और बेहतरीन वज़ाहत फरमाई (आख़िर में) इमाम शाफइ रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया मैं उन बुज़ुर्गों से दो मुख़्तसर सवालात करता हूँ अगर जवाब दें तो अल्लाह का शुक्र है और मैं यही समझता हूँ कि वह जवाब देंगे।

फिर आप ने हज़रत अबू यूसुफ रहमतुल्लाह अलैह से फरमाया क़ाज़ी साहब आप क्या फरमाते हैं इस मसअला में कि एक शख़्स ने औरत से शादी किया और उस औरत की माँ (यानी अपनी सास) से अपने बेटे की शादी किया और हर एक को एक एक लड़का पैदा हुआ उन का आपस में क्या रिश्ता होगा।

यह दोनों बुज़ुर्ग देर तक गौर किये और जवाब नहीं दिये (यानी जवाब देना मुनासिब न समझे)

हारून रशीद रहमतुल्लाह अलैह ने कहा उन दोनों की मौजूदगी में आप के सिवा कोई जवाब नहीं दे सकता।

फिर ख़ुद आप ने जवाब दिया और पहले मसअला में फरमाया कि मुझे यह रिवायत पहुंची है कि एक औरत अमीरुल मुमिनीन

सय्यदना अली इब्ने अबी तालिब रज़ि अल्लाहु अन्हू के पास हाज़िर हुई और आप उस वक़्त (आज़िमे सफर थे) अपना एक पावँ ख़च्चर के रेकाब में रख दिये थे उस औरत ने कहा ऐ अमीरुल मुमिनीन मेरे भाई का इंतेक़ाल हुआ और तर्का में छ: सौ दिरहम छोड़े लेकिन मुझे सिर्फ एक दिरहम मिला है। आप तो अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ फैसला करते हैं मुझे बताइये उसकी तक़्सीम किस तरह हुई है।

सय्यदना अली रज़ि अल्लाहु अन्हू ने फरमाया तेरे भाई का इंतेक़ाल हुआ और उसके तर्के में छ: सौ दिरहम थे और उसकी दो बेटियाँ थीं उनको सुलसान (दो तिहाई) मिलेगा जो चार सौ दिरहम होते हैं दीगर वरसा में मय्यत की माँ मौजूद है उसको सुदुस (छट्टा हिस्सा) यानी ७५ दिरहम मिलेंगे अब पचीस दिरहम बाक़ी रहे मय्यत के वरसा में बारह भाई हैं। उनको चौबिस दिरहम मिलेंगे माबक़ेया एक दिरहम (जो एक भाई के हिस्से का आधा है) बहन को मिलेगा और मसअला में अल्लाह तआला का हुक्म यही है।

(सुरतुल मसअला कज़ा)

मिन ६००=२५×२४ (६०० दिरहम)

मय्यत

१	१२	२	१	१
उख़्त	अख़	बिनत	उम	ज़ौजा
१	२४	४००	१००	७५

यह सुन कर हारून रशीद रहमतुल्लाह अलैह मुसकुरा दिया (ख़ुश हुये) और फरमाया कि हज़रत अबुल हसन सय्यदना अली रहमतुल्लाह अलैह ने अल्लाह तआला की तौफीक़ से सच फरमाया हमेशा अल्लाह तआला की तौफीक़ उनके शामिले हाल रही है।

अब रहा दूसरा मसअला उसका जवाब यह है कि माँ का बेटा बेटी के बेटे (नेवासे) का मामू होगा और बेटी, माँ के बेटे का चचा होगा।

यह सुन कर हारून रशीद रहमतुल्लाह अलैह ने हज़रत अबू यूसुफ और इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैहुमा से फरमाया उनको छोड़ दो आप हज़ारत उनके बराबर नहीं हो सकते क्योंकि अल्लाह तअला उनके लिये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हक्के क़राबत रखा है और हक्के शराफत, हक्के कुरआन और हक्के इल्म भी है (उसका ऐहतेराम किया जये) उन दोनों बुज़ुर्गों ने कहा ऐ अमीरुल मुमिनीन हम अल्लाह तआला की पनाह लेते हैं। तमाम अहकाम में अल्लाह ही की ऐताअत की जायेगी। उसके बाद हारून रशीद ने दो हज़ार दीनार देने का हुक्म जारी फरमाया हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह बाहर निकले और तमाम रक़म को हाशिया और ख़ुद्दाम को तक़सीम कर के चले गये हारून रशी को उसकी इत्तेला मिली तो फरमाया ख़ानदाने मुत्तलिब के हज़रात किसी भी वक़्त शराफत व सख़ावत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दामन नहीं छोड़ते।

मज़कूरा वाक़या को हाफिज़ बहेक़ी रहमतुल्लाह अलैह ने भी ज़िक्र किया है अल्लामा हाफिज़ इब्ने हजर रहमतुल्लाह अलैह ने इस रिवायत से इख़्तेलाफ किया है और अल्लाह तआला ही हक़ीक़ते हाल को बेहतर जानता है।वल्लाहु आलम बिस्सवाब

हज़रत इमाम शाफई और हज़रत इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैहुमा के दरमियान एक मुनाज़रा:

मोअर्रेख़ीन ने ज़िक्र किया है हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह उलूवीन की जमात के साथ यमन से हारून रशीद के दरबार में लाये गये रात का वक़्त था। दस दस अश्ख़ास को हारून रशीद के पास पेश किया जा रहा था हारून रशीद पसे परदा उन से गुफ्तगू करता था और उन की गर्दन उड़ा देने का हुक्म सादिर करता है। यहाँ तक कि हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह की बारी आई तो आप ने फरमाया मैं मुहम्मद बिन इदरीस शाफई आप का गुलाम व ख़ादिम हूँ। हारून रशीद ने कहा उनकी भी गर्दन उड़ा दो। यह सुन कर इमाम हमाम रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया गोया आप मुझे भी मुनहरिफ और उलूवीन की तरफ मायल होने का इलज़ाम दे रहे हैं मैं उसकी एक मिसाल अर्ज़ करता हूँ अमीरुल मुमिनीन एक आदमी के दो चचाज़ाद भाई हैं उन में से एक उस आदमी के साथ नसब में शरीक होने की वजह से उसके साथ वैसा ही मामला करता है उसके माल को हराम समझता है मगर इजाज़त से इस्तेमाल करता है और उसकी बेटी को हराम समझता है मगर शादी करा दे तो कुबूल कर लेता है और उन में का दूसरा आदमी जो उसके सामने ख़ुद को एक गुलाम की तरह समझता है।

अब आप बताइये वह आदमी उन दोनों में से किस की तरफ माइल रहेगा?

हारून रशीद ने इमाम हमाम रहमतुल्लाह अलैह से आप की इस गुफ्तगू को तीन मर्तबा दोहराने के लिए दरख़्वास्त की। आप फरमाते हैं मैं मुख़्तलिफ अलफाज़ में उसको दोहराता गया।(यह सुन

कर) हारून रशीद ने कहा उन को (यानी हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह) कैद कर दिया जाये। चुनान्चे आप फरमाते हैं कि मुझे दारुल आम्मा में कैद कर दिया गया। मेरा दिल कैद ख़ाना से तंग हो गया। मैं गौर किया मुझे हज़रत इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैह के सिवा कोई भी ऐसा नज़र नहीं आया जो मेरे लिए गमगोसार बन सके। मैं उन के तफक्कुह की वजह से उन की तरफ मैलान रखता था। और उन से मुझे उम्मीद थी कि वह बादशाह के पास मेरी सिफारिश करेंगे। मगर वह एक दिन तशरीफ लाये और (मसाइले फिक्ह में) अपने असहाब के मुक़ाबले में अहले मदीना को कमतर बता रहे थे और अपनीर एक किताब का ज़िक्र फरमाया अगर कोई शख़्स उस में कोई नुक़्स ज़ाहिर कर सकता है तो मैं उस से मुनाज़रा करूंगा।

इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि मैं देख रहा था कि उस वक़्त अहले मदीना के चेहरों पर तकलीफ के आसार हो रहे थे और इमाम मुहम्मद बिन अल हसन रहमतुल्लाह अलैह के असहाब के चेहरों पर ख़ुशी के आसार ज़ाहिर थे।

यह सुन कर मैं तरद्दुद में पड़ गया कि उसका जवाब दूँ ताकि अहले मदीना को ख़ुशी हासिल हो, मगर हो सकता है कि सुलतान का गुस्सा मुझ पर और बढ़ जायेगा या यह कि ख़ामूशी इख़्तेयार करूँ। हो सकता है कि इमाम मुहम्मद बिन अल हसन रहमतुल्लाह अलैह बादशाह के पास मेरी सिफारिश करेंगे। आख़िर कार मैंने इस मामला में अल्लाह तआला की रज़ा को इख़्तेयार किया और उसका जवाब दिया। और इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैह से मैंने कहा कि ऐ अबू अब्दुल्लाह (इमाम मुहम्मद की कुन्नीयत है) मैं देख रहा हूँ कि आप मदीना मनव्वरा के बारे में

तान फरमा रहे हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हरम शरीफ और दारुल हिजरत है। वहाँ वही का नुज़ूल हुआ और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वहाँ दफन हैं वहाँ आप का मज़ारे मुबारक है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस सर ज़मीन को "ताबा" पाक ज़मीन क़रार दिया है और फरमाया:

روضة من رياض الجنة

उस में जन्नत के बागात में से एक बाग है अगर आप अहले मदीना के बारे में फरमाते हैं वह तो रसूलुल्लाह अलैहि व सल्लम के सहाबा और अंसार हैं उन्हों ने ईमान को मुस्तहकम किया और वही की हिफाज़त की और सुन्नतों को जमा किया अगर आप उन के बाद वालों के बारे में कह रहे हैं तो वह ताबेईन और उस उम्मत के उलमाये केराम हैं। और अगर आप की मुराद उन में से सिर्फ शख़्से वाहिद यानी हज़रत इमाम मालिक बिन अनस रहमतुल्लाह अलैह हैं कि उन्हों ने एक गवाह और क़सम को फैसला में काफी क़रार दिय है यक़ीनन यह अल्लाह तआला के इस इर्शाद के ख़िलाफ है:

واستشهدوا شهيدين من رجالكم

(तुम दो मर्दों की गवाही हासिल करो) इस तक़रीर के बाद इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया मैं आप की किताब को पढ़ा हूँ। बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम और सल्लल्लाहु अला मुहम्मदिव्व आलिही व सल्लिम अजमईन के सिवा उस किताब में कुछ भी सही नहीं।

१. मसलन एक दीवार के बारे में दो आदमी दावेदार हों और उन के पास कोई दलील नहीं? तो आप ने फरमाया है कि उस दीवार की आधी ईंटें जिस दीवार में होंगी वह दीवार उसी की होगी।

२. घर के सामान के बारे में शौहर और बीवी दोनों दावेदार हों तो आप ने फरमाया है जो सामान मर्द के लिए मौज़ूँ व मुनासिब है वह शौहर का होगा जो औरतों के लिए मौज़ूँ है वह औरत का होगा।

३. एक औरत एक बच्चा को लाई तो उसका शौहर इनकार करता है और कहता है, तू यह बच्चा किसी दूसरे का लाई है तो ऐसी सूरत में आप ने फरमाया कि उसके लिए दाया की गवाही काफी हो जायेगी।

४. अलगनी (बालकनी जो सामान वगैरह रखने के लिए घरों में बनाई जाती है)

अगर दूकान का मलिक और उस में रहने वाला (केराया दार) दोनों उसका दावा करें तो आप ने इस मसअला में फरमाया अगर वह अलगनी मुनफसिल यानी दीवार से अलग है तो केराया दार की है और अगर वह दीवार से अलग नहीं है बल्कि उस में मिली हुई है तो वह मालिक दूकान की है।

मज़कूरा तमाम सूरतों में बगैर दलील और बगैर क़सम के आप ने फैसले फरमाये हैं और फिर आप हम पर गवाह और क़सम के बारे में ऐतेराज़ फरमाते हैं।

हज़रत इमाम मुहम्मद बिन अल हसन रहमतुल्लाह अलैह ने उन की तक़रीर को समाअत फरमा कर सुकूत इख़्तेयार फरमाया हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया उस मजलिस में इमाम मुहम्मद बिन हसन रहमतुल्लाह अलैह के किसी साथी ने मुझ पर मुआवेज़ा करते हुये सवाल किया आप क्या फरमाते हैं कि एक आदमी भूल कर एक आदमी के घर गया और वहाँ एक बतख़ को देखा और तीर मार कर उसकी आंख़ फोड़ दिया तो उस पर क्या

चीज़ वाजिब होगी। तो मैं (यानी इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह) ने जवाब दिया कि देखा जाये कि बतख़ जब सही थी तो उस वक़्त उसकी क्या क़ीमत हो सकती थी और जबकि उसकी आंख फूट गई है तो क्या क़ीमत होगी उन दोनों क़ीमतों को जमा कर के (उसका निस्फ) तावान दिया जायेगा।

आप (हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह) फरमाते हैं कि उस के बाद मैंने उन से सवाल किया कि आप और आप के साथी क्या फरमाते हैं इस मसअला में कि एक मुहरम शख़्स (जो हालते ऐहराम में है) एक औरत की शर्मगाह को देखा और उसको इंज़ाल हो गया।

इमाम मुहम्मद इब्नुल हसन रहमतुल्लाह अलैह ने अपने साथी को आवाज़ दे कर कहा मैंने तुझे नहीं कहा था कि उन से तुम बहस मत करो।

और यह बात मरवी है कि इस मुनाज़रा की (तफसीलात की) हारून रशीद को इत्तेला हुई तो हारून रशीद ने कहा इमाम मुहम्मद इब्नुल हसन रहमतुल्लाह अलैह का इल्म (तो अपनी जगह है) मगर रसूलुल्लाह अल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया:

ان علق الرجل من قريش عقل رجلين

कुरैश के एक शख़्स की अक़्ल व समझ गैर कुरैश के दो आदमियों के बराबर है(यानी इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह कुरैशी हैं इल्म में बढ़े हुये हैं) फिर हारून रशीद ने हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह को इत्तेला दी कि वह आप से ख़ुश हैं और आप के लिए यमन की क़ज़ायत का भी पेश कश किया तो हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया मुझे उसकी ज़रूरत नहीं

अलबत्ता मेरी ज़रूरत सिर्फ इस क़द्र है शहर मिस्र में मेरे रिश्तेदारों का हिस्सा ही मुझ को अता किया जये हारून रशीद ने उसको कुबूल फरमाया और दुआ किया कि:

اکثر اللّٰہ تعالیٰ فی اهلی مثلک

अल्लाह तआला मेरे ख़ानदान में आप जैसे (अज़ीमुल मर्तबत शख़्सियतों) को कसरत से पैदा फरमाये।

हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के दौरे इब्तेला के बारे में मुख़्तलिफ वाक़ेयान बयान किये गये हैं हम इसी पर इक्तेफा करेते हैं। व बिल्लाहित्तौफीक़

एक दिन इमाम रबीआ रहमतुल्लाह अलैह ने इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह से फरमाया अगर कोई शख़्स रमज़ान का एक रोज़ा क़ज़ा करे तो उस पर बारा रोज़े की क़ज़ा लाज़िम है क्योंकि उस महीने को अल्लाह तआला ने बारा महीनों से इनतेख़ाब किया है उस महीने का एक दिन और महीनों के बारह दिन के बराबर है। इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने जवाब में फरमाया कि यह फिक़्ह है या मज़ाक़ अगर तुम्हारा यही ख़्याल है तो इस बिना पर यह लाज़िम हो जाता है कि किसी शख़्स की शबे क़द्र की नमाज़ फौत हो जाये तो वह उसकी हज़ार महीने तक क़ज़ा किया करे। चूंकि अल्लाह तआला का इर्शाद है:

ليلة القدر خير من الف شهر

शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है। रबीआ रहमतुल्लाह अलैह ख़ामूश उठ कर चले गये।

बुज़ुर्गों और असातज़ा का अदब व ऐहतेराम :

अल्लामा इब्ने हजर मक्की शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने ख़ैरातुल हस्नात में लिखा है कि इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने हज़रत इमाम अबू हनीफा रहमतुल्लाह अलैह के मुतअल्लिक़ फरमाया है। हज़रत रबी रहमतुल्लाह अलैह से रिवायत है कि इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया:

الناس عيال فی الفقه علی ابی حنيفه مارأيت ای علمت احدا افقه منه لانه لم يدرک احدا أفقه منه.

तमाम इंसान फिक़्ह में इमाम अबू हनीफा की औलाद यानी ख़ूशा चीं हैं मैंने आप से बढ़ कर किसी को फक़ीह नहीं पाया। इसी तरह अल ख़ैरातुल हस्नात फी मनाक़िबे अबी हनीफहुन्नोमान में इमाम इब्ने हजर रहमतुल्लाह अलैह ने नक़ल फरमाया है।

किसी ने इमाम मालिक और इमाम सुफयान अैनिया रहमतुल्लाह अलैह से मुतअल्लिक़ आप से दरयाफ्त किया तो फरमाया अगर यह दोनों न होते तो हेजाज़ से इल्म ज़ाये हो जाता। जब कभी इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह का क़ौल नक़ल करते तो फरमाते:

هذا قول استاذنا الامام مالک

यह हमारे उसताज़ इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह का क़ौल है किसी ने दरयाफ्त किया आप ने इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह जैसा मुहक़्क़िक़ भी देखा है आप ने फरमाया हमारी क्या हक़ीक़त हे जो हम से इल्म व अमल में ज़्यादा हैं वह यही कहते रहे कि इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह जैसा आदमी हम ने नहीं देखा।

इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैह इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के उसताज़ हैं आप इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह की बड़ी

ताज़ीम फरमाते अगर इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह तशरीफ लाते तो दीगर मशागिल को मुलतवी कर देते थे जैसा कि स.११४ पर वाक़या गुज़र चुका है। इसी तरह इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह भी अपने उसताज़ इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैह की ताज़ीम फरमाते आप ने अपने अशआर में भी तारीफ फरमाई है यह दोनों बुजुर्ग एक दूसरे का अदब मलहूज़ रखते और तअस्सुब से बिल्कुल पाक थे उन के दरमियान मुनाज़रे सिर्फ तहक़ीक़े हक़ के लिए हुआ करते थे ख़तीबे बगदादी रहमतुल्लाह अलैह रिवायत करते हैं कि इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया:

امن الناس علی فی الفقه محمد بن الحسن

इल्मे फिक़्ह में मुझ पर सब से ज़्यादा ऐहसान इमाम मुहम्मद बिन हसन रहमतुल्लाह अलैह का है।

हाफिज़ ज़हबी रहमतुल्लाह अलैह ने रिवायत किया है कि इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया :

ما رأيت اعلم بكتاب الله من محمد كانه عليه نزل

मैं ने इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैह से बढ़ कर किताबुल्लाह को जानने वाला नहीं देखा गोया कि किताबुल्लाह उन्हीं पर नाज़िल हुई है।

इमाम बुवैती रहमतुल्लाह अलैह ने इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह से रिवायत की है कि आप ने फरमाया:

اعننی الله برجلين بان عيينه فی الحديث و بمحمد فی الفقه

अल्लाह तआला ने दो हज़रात के ज़रिया यानी इब्ने अैनिया रहमतुल्लाह अलैह से हदीस शरीफ में और इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैह से फिक़्ह में मेरी मदद फरमाई। रहमहुल्लाहि अलैहिम अजमईन।

करामाते औलियाये केराम:

करामाते औलियाये हक़: तमाम अहले सुन्नत वल जमात (मज़हबे अरबा) का इत्तेफाक़ है और किताब व सुन्नत से औलियाये केराम की करामतों का ज़ोहूर साबित है।

तबक़ाते शाफय्या अल कुबरा इमाम ताजुद्दीन सुबकी रहमतुल्लाह अलैह के जिल्द २ स. ७४ में मज़कूर है अबू उबैदुल बसरा रहमतुल्लाह अलैह एक मर्तबा आप जेहाद में थे आप का घोड़ा मर गया। उस वक़्त आप ने दुआ की कि अल्लाह उन के घोड़े को ज़िंदा करे ताकि वह अपने मुक़ाम बसर को वापस जा सकें चुनान्चे घोड़ा अपने दोनों कान झाड़ते हुये खड़ा हो गया जेहाद से फारिग होने के बाद आप बसर को वापस हुये और अपने ख़ामिम को घोड़े पर से ज़ीन निकालने के लिए फरमाया ज़ीन निकालते ही घोड़ा मर कर ज़मीन पर गिर पड़ा।

हज़रत मुफर्रज दमामीनी रहमतुल्लाह अलैह यह औलिया अल्लाह में से हैं एक दफा आप के पास भुना हुआ चूज़ा लाया गया। आप ने उसको फरमाया उड़जा तो वह अल्लाह के हुक्म से ज़िंदा हो कर उड़ गया।

हज़रत शैख़ अहदल रहमतुल्लाह अलैह आप के पास एक बिल्ली थी आप के ख़ादिम ने उसको मारा तो वह मर गई और उसे कचरे में फेंक दिया दो या तीन दिन के बाद शैख़ ने बिल्ली के बारे में दरयाफ्त किया तो ख़ादिम ने कहा मुझे नहीं मालूम। शैख़ साहब ने फरमाया क्या तुझे नहीं मालूम फिर आप ने आवाज़ दी तो बिल्ली दौड़ते हुये आ गई।

हज़रत सय्यदना शैख़ अब्दुल क़ादिर रहमतुल्लाह अलैह एक दफा मुर्गी तनाउल फरमाये और फरमाया :

قم باذن اللّٰہ الذی یحیی العظام وھی رمیم

अल्लाह के हुक्म से उठ जा (ज़िंदा हो जा) जो पोसीदा हड्डियों में हयात बख़्शता है उसके साथ ही वह मुर्गी ज़िंदा हो कर सीधी खड़ी हो गई।

यह वाक़या बहुत मशहूर है: हज़रत शैख़ अबू यूसुफ धमानी रहमतुल्लाह अलैह के बारे में रिवायत है कि उन के एक साथी का इंतेक़ाल हो गया उन के ख़ानदान वाले उन पर बहुत रोये हज़रत शैख़ उनके इस क़द्र रोने को देख कर मय्यत के पास तशरीफ लाये और फरमाया:

قم باذن اللّٰہ

अल्लाह के हुक्म से ज़िंदा हो जा। चुनान्चे वह सीधा खड़ा हो गया और एक ज़माना तक ज़िंदा रहा।

हज़रत शैख़ ज़ैनुद्दीन फारूक़ी रहमतुल्लाह अलैह का मशहूर वाक़या है आप शामिया में मुदर्रिस थे। ताज सुब्की रहमतुल्लाह अलैह को हज़रत ज़ैनुद्दीन के साहब ज़ादे वलीउल्लाह शैख़ फतहुद्दीन यहिया ने यह वाक़या सुनाया है उसका ख़ुलासा यह है कि हज़रत शैख़ के घर में से एक छोटा बच्चा छत पर से गिरा और उसका इंतेक़ाल हो गया तो आप ने अल्लाह तआला से दुआ की तो अल्लाह तआला ने उसको ज़िंदा कर दिया (ताजुद्दीन सुबकी रहमतुल्लाह अलैह) फरमाते हैं मुझे उन करामतों पर ईमान है मगर मेरे नज़दीक ऐसा कोई वाक़या साबित नहीं है कि किसी वली बुज़ुर्ग ने ऐसा मुर्दे को ज़िंदा किया हो जिस का इंतेक़ाल हो कर ज़िंदा हुआ हो ऐसा कोई वाक़या हम को नहीं मिला अलबत्ता इस में कोई शक नहीं कि ऐसे वाक़यात अंबियाये केराम अलैहिमुस्सलाम से

बतौर मुजज़ा के सर ज़द हुये हैं।

लेकिन मुर्दों की बात करना यह करामत शवाफे में बाज़ औलियाये केराम से साबित है।

अबू सईद हज़ार रहमतुल्लाह अलैह ने उसको बयान किया है और सय्यदना शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतुल्लाह अलैह और शैख़ तक़ी सुबकी रहमतुल्लाह अलैह के बाज़ मशाइख़ व असातज़ा से भी यह करामत साबित है।

दरया का फट जाना (उस में रास्ता बन जाना) और दरया का ख़ुश्क हो जाना और पानी पर चलना इस तरह की करामतें सय्यदुल मुतअख़्ख़ेरीन तक़ीउद्दीन बिन दक़ीक़ुल अब्द रहमतुल्लाह अलैह से और बकसरत औलियाये केराम रहमतुल्लाह अलैहिम से साबित है।

माद्दये तारीख़ वेलादत व वफात और उम्र

अइम्मये अरबये केरमा रहमतुल्लाह अलैहिम:

किफायतुल अत्क़िया में है कि चारों अइम्मये केराम की तारीख़े पैदाइश और तारीख़े वफात और उन की उम्रों की वज़ाहत अशआर ज़ेल में ज़ब्त की गई हैं।

इमाम अबू हनीफा रहमतुल्लाह अलैह:

تاریخ نعمان	یکن	سیف	سطا
	वेलादत ८०	१५० हि.	उम्र७० साल

इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह :

ومالک	فی	قطع	جوف	ضبطا
वेलादत ९०	१७९	वफात	उम्र८९ साल	शब बेदारी में

इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह:

والشافعي صين	بر	ند
वेलादत १५०	वफात २०४	उम्र ५४

इमाम अहमद रहमतुल्लाह अलैह :

واحمد بسبق	امر	جعد
वेलादत १६४	वफात २४१ हि.	उम्र ७७ साल

और इमाम अहमद की कतआ तारीख़ बसबक़ अमर जाद है। (एक पेचीदा मसअला में सबक़त ले जाने की वजह है)

उसकी तफसील जर्द ज़ेल है:

१. हज़रत इमाम अबू हनीफा रहमतुल्लाह अलैह की वेलादत बा सआदत ८० हि. लफ्ज़े यकुन में है और आप की वफात १५० हि. लफ्ज़े सैफ में है और आप की उम्र ७० साल लफ्ज़े सता में है।

२. हज़रत इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह की वेलादत बा सआदत ९० हि. लफ्ज़े फी है और आप की वफात १७९ हि. लफ्ज़े क़ता है और आप की उम्र ८९ साल है और यह लफ्ज़ जौफ है।

३. हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह की वेलादत १५० हि. लफ्ज़े सीन में है। जिस दिन इमाम अबू हनीफा रहमतुल्लाह अलैह की वफात हुई उसी दिन आप की वेलादत हुई और आप की वफात २०४ हि. लफ्ज़े बबर में है और आप की उम्र ५४ साल लफ्ज़ नद में है।

४. हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाह अलैह की वेलादत बासआदत १६४ हि. लफ्ज़े बिसबक़ में है और आप की वफात २४१ हि. लफ्ज़े जअद में है और आप की उम्र ७७ साल लफ्ज़े जअद में है।

शैख़ हरीफेश रहमतुल्लाह अलैह ने अपनी किताबुर्रौज़ुल

फाइक़ में आइम्मये अरबा की तारीफ करते हुये फरमाया कि उन में से हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह हैं आप का नसब मुबारक अदनान तक पहुंचता है और हज़रत इमाम बिन अनस असजी रहमतुल्लाह अलैह हैं जो बलंद मर्तबा और अज़मत व शान वाले हैं और हज़रत इमाम बिन हंबल रहमतुल्लाह अलैह हैं जो ज़ाहिर व बातिन में अपने इल्म से बेहतरीन रास्ता इख़्तेयार किये और उन ही में हज़रत इमाम अबू हनीफा नोमान कोफी रहमतुल्लाह अलैह है।

यह चार जलीलुल क़द्र बुज़ुर्ग हैं अल्लाह तआला ने उन की ज़ात बाबरकत और उन के उलूम से लोगों को फायदा पहुंचाया और लोगों से तकलीफ जेहालत गुमराही और सर कशी को दूर किया। फिर आप ने यह अशआर फरमाये।

فالشافعي به علوم تشرق   بين الورىٰ وله ثناء يعبق

इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के उलूम लोगों में ताबाँ हैं और आप की तारीफ महक रही है।

ولمالک تشرق علوم مالها   حد کبحرزاخر یتدفق

और इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह के उलूम मोजज़न बहरे ज़ख़्ख़ार की तरह इस क़द्र चमक रहे हैं कि जिस की कोई हद नहीं।

ولا حمد تعز العلوم لانه   يروى الحديث وصدقه محقق

और इमाम अहमद रहमतुल्लाह अलैह की तरफ सारे उलूम मंसूब हैं क्योंकि आप हदीसे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रावी हैं और आप की सदाक़त मुतहक़्क़क़ है।

وابو حنيفه سابق فلاجل ذا   آثاره وعلومه لاسبق

और इमाम अबू हनीफा रहमतुल्लाह अलैह को सब पर सबक़त है और इसी लिये आप के आसार और आप के उलूम पर कोई सबक़त नहीं ले जा सकता।

فهم الائمة خصهم رب العلا بالفضل منه فشاؤهم لايلحق

पस यह आइम्मये (अरबा) हैं कि रब तबारक तआला ने उन को अपने फज़्ल से मख़्सूस फरमाया है। और उन की रफ्तार को कोई नहीं पा सकता।

وصلی اللّٰہ علی سیدنا محمد وعلیٰ اٰله وصحبه اجمعین.

मैंने इस मुख़्तसर किताब में इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह के हालात को जमा किया है इंशा अल्लाहुल मुस्तआन बशर्ते फुरसत व ज़िंदगी अगर मशीअते यज़दी इजाज़त दे तो सिर्फ यही नहीं बल्कि बाद नज़रे सानी एक मबसूत सीरत और बहुत कुछ कौम की ख़िदमत में पेश किया जायेगा। इस किताब को पढ़ने वालों से इल्तेमास है कि मुअल्लिफ को दुआये ख़ैर से फरामूश न फरमायें अगर कोई गलती हो तो अज़ राहे करम उस पर दामने सतर व अफू डाल दें। किसी ने क्या ख़ूब कहा है।

ان تجد عيبافسدالخللا جل من لاعيب فيه وعلا

अगर कुछ गलती नज़र आये तो उसको दुरुस्त कर लीजिये। बेऐब तो सिर्फ वही ख़ुदा ज़ुल जलाल है।

ان اريد الا الاصلاح مااستطعت وماتوفيقى الابالله الفقير الى

رحمة ربه الوهاب

الشيخ صالح بن سالم باحطاب كان الله له يوم الماب

ज़मीमा

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह की ज़िंदगी पर एक बड़ी प्यारी और मुहब्बत भरी गुफतगू पढ़ी। जिसे हज़रत मौलाना मुफ्ती अश्शैख़ सालेह बिन सालिम बाहत्ताब रहमतुल्लाह अलैह ने अरबी में तहरीर किया था और जिस का उर्दू तर्जमा हज़रत मौलाना अल हाज मुहम्मद ख़्वाजा शरीफ साहब ने किया था। लिहाज़ा दिल में यह ख़्याल आया क्यों न अब फिक़्ह, तक़्लीद, और दीगर तीनों अइम्मा के मुतअल्लिक़ कुछ जानकारी हासिल की जाये। लिहाज़ा हम ने "तज़किरये अइम्मये अरबा" नामी किताब जिसे मौलाना अख़्तर हुसैन फैज़ी मिस्बाही साहब ने तहरीर किया था। और जो "अल मजमउल इस्लामी" मुबारक पुर से शाये हुई थी, को सामने रख कर तक़्लीद की अहमियत, ज़रूरत और इमामे आज़म, इमाम मालिक और इमाम अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाह अलैहिम की मुख़्तसर सीरत बयान करने की कोशिश की है।

(इदारा इमाम शाफई फउन्डेशन मुम्बई)

तक़लीदे आइम्मये अरबा:

अहले इस्लाम को अहकामे शरई से रुशनास कराने वाले उलमाये रासेख़ीन और सोलहाये कामेलीन हैं, जिन्हें दो क़िस्मों पर तक़्सीम किया जा सकता है उन में से एक जमात मुहद्देसीन की और दूसरी जमात मुजतहदीन की है।

उलमाये मुहद्देसीन हदीसे रसूल को तन्क़ीदी ज़ावियये नज़र से देखते हैं और सहते रिवायत का भर पूर ख़्याल रखते हैं। और उलमाये मुजतहदीन का काम आयाते क़ुरआनी और अहादीसे नबी से मसाइल व अहकाम का इस्तिंबात करना, और यह दोनों जमातें अपने अपने मैदान में कामियाबियों से हमकिनार रहीं।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माना से दूरी नासिख़ व मनसूख़, मोहकम मुअव्वल मुक़द्दम व मुअख़्ख़र और मुतज़ाद नुसूस के तताबुक़ की अदमे मारफ़त की वजह से अहले हक़ को इस ज़माने में किसी ऐसी पेशवा की पैरवी करनी ज़रूरी है जो ज़मानये रसूल की क़ुरबत, वफ़ूरे इल्म, कसरते रिवायात, कमाले तक़्वा, और मल्कये इस्तिंबात का हामिल हो, अब देखना यह है कि उन जमातों में मज़्कूरा सिफात किस जमात के अंदर हैं तो लीजिये दर्ज ज़ेल इबारात मुलाहिज़ा कीजिये।

हज़रत सुफयान बिन अैनिया फरमाते हैं:

الاحاديث مضلة الالفقها

हदीसें फुक़्हा को गुमराह नहीं करतीं।

इब्ने अल हाज मुहम्मद अलफासी अल मालिकी ने मुदख़ल में लिखा है:

وهم اعلم بمعانى الاحاديث

फुक़्हा मानिये अहादीस की ज़्यादा जानकार होते हैं।

इमाम तिर्मिज़ी ने जामे तिर्मिज़ी अबवाबुल जनाइज़ में इब्ने जहर ने क़लाइद में और गैर मुक़ल्लिदों के रईस इब्ने क़य्यम ने आलामुल मुअक़्क़ेईन में लिखा:

لايجوز لاحدان ياخذمن الكتاب والسنة مالم يجتمع فيه شروط الاجتهاد.

जिस के अंदर इजतिहाद के शर्त मौजूद न हों उसे बज़ाते ख़ुद किताबुल्लाह और सुन्नते रसूलुल्लाह से मसअला तख़्रीज करना जायज़ नहीं और किफाया में है।

العامى اذا سمع حديثاً ليس له ان ياخذ بظاهره لجواز ان يكون مصرفا عن ظاهره اومنسرخا بخلاف الفتوئ.

आम आदमी जब कोई हदीस सुने तो उसे जायज़ नहीं कि ज़ाहिर हदीस से मसअला निकाल ले, हो सकता है कि वह अपने ज़ाहिर से फिरी हुई हो या फतवा उसके ख़िलाफ हो और वह मंसूख़ हो।

तक़्रीर शरह तहरीर में भी ऐसे ही मज़्कूर है और लफ्ज़े मन्सूख़न के बाद:

بل عليه الرجوع الى الفقها

का इज़ाफा है यानी आम आदमी को फुक़्हा की तरफ रुजू करना चाहिये। फुक़्हा की तरफ रुजू करने का मतलब यह है कि क़ानूने इस्लाम के जानने वालों से मसअला दरयाफ्त कर के उस पर अमल किया जाये। यही तक़लीद है।

तक़लीद का माना:

तक़लीद का माद्दा क़लादा है क़लादा पट्टे के हैं, बाबे तफ़ईल में जा कर उसका माना गले में पट्टा डालने के हो गये, इस्तेलाहे

शरअ में तक़्लीद का माना उलमा ने यह लिखा है:

تسليم قول الغير بلا دليل

दूसरे की बात बिला दलील मान लेना इसी को अल्लामा मसहूदी ने अक़्दुल फरीद में यूँ बयान फरमाया है:

التقليد قبول القول بان يعتقد من غير معرفة دليل.

किसी की बात दलील जाने बग़ैर इस तरह मान लेना कि उस पर ऐतेक़ाद जम जाये।

अगर दलील के ज़रिया किसी बात के हक़ का ऐतेक़ाद हो तो यह तक़्लीद नहीं, बिला दलील महज़ क़ायल के साथ हुस्ने ज़न की बिना पर उसकी कही हुई बात पर ऐतेक़ाद जम जाये कि यह शख़्स आला दर्जा का दीनदार, सादिक़ अमीन और उलूम व फुनून का माहिर है, इस लिये जो बात कहता है वह हक़ है यही तक़्लीद है।

पैगम्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरामया:

من فارق الجماعة شبراً فقدخلع ربقة الاسلام من عنقه (عن ابی ذر رضی الله عنه)

जो शख़्स जमात से एक बालिश्त भी बाहर हुआ तो उस ने अपनी गर्दन से इस्लाम का पट्टा निकाल दिया।

अक़्सामे तक़्लीद: (१) तक़्लीदे नारवा (२) तक़्लीदे जायज़ बल्कि वाजिब।

तक़्लीदे नारवा: कुफ्फार को अपने आबा और गुमराह पेशवाओं की तक़्लीद करना, जैसा कि ख़ुदावंदे कुद्दुस का इर्शाद है:

وَاِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا مَاأَنزَلَ اللّٰهُ قَالُوابَلْ نَتَّبِعُ مَاأَلْفَيْنَا عَلَيْهِ اٰبَائَنَا اَوَلَوكَانَ اٰبَاءُ هُمْ لَا يَعْقِلُونَ شَيْئاً وَلَا يَهْتَدُونَ (پ٢ع٥)

और जब उन से कहा जाये अल्लाह के उतारे पर चलो तो कहें बल्कि हम तो उस पर चलेंगे जिस पर अपने बाप दादा को पाया, क्या अगरचे उन के बाप दादा न कुछ अक़्ल रखते हों न हिदायत। (कंज़ुल ईमान)

यूँ ही जाहिल आवाम का ख़िलाफे शरअ रुसूम की पाबंदी में अपने जाहिल आबा या गुमराह लोगों की तक़्लीद करना। यह तक़्लीद ईमानियात से मुतल्लिक़ है तो कुफ्र वरना हराम व नारवा ज़रूरी है।

तक़्लीद जायज़ बल्कि वाजिब:

मशहूर व मुस्तनद मुफस्सिरे कुरआन हज़रत क़ाज़ी बैज़ावी रहमतुल्लाह अलैह ने इस तक़्लीद की तरफ ईशारा किया है:

كاتخاذ الا نداد و تحليل امحرمات وتحريم الطيبات و فيه دليل على المنع من اتباع الظن راساً ، وماتباع المجتهد لماارىٰ اليه ظن مستند الى مدرك شرعى فوجوبه قطعى.

जैसे (अल्लाह) का शरीक बनाना मुहरमात का जायज़ और तय्यबात को हराम समझना, यह क़ौल इस बात की दलील है कि ज़न और गुमान के इत्तिबा से यक्सर परहेज़ किया जाये, और जब यक़ीन मुजतहिद की मारफत कर ले कि वह शरई इदराक का हामिल है तो उसका इत्तिबा ज़रूरी है।

नीज़ क़ाज़ी साहब ने :

اَو لَوكَانَ ......اِلیٰ......لَايَهْتَدُونَ

की तफसीर में बताया :

هو دليل على المنع من التقليد لمن قدر على النظر والاجتهاد

واما اتباع الغير فى الدين اذا علم بدليل ما انه محق كانبياء ولا مجتهدين فى الاحكام فهو فى الحقيقة ليس بتقليد بل اتباع لما انزل الله تعالیٰ۔

यह आयत इस बात की दलील है कि जो शख़्स ग़ौर व फ़िक्र और इजतेहाद पर कुदरत रखता हो वह तक़लीद न करे, लेकिन दीन के मामला में किसी शख़्स का इत्तिबा जब कि दलाइल से जान लिया जाये कि वह हक़ है, जैसे अंबिया और अहकाम में इजतेहाद करने वाले तो हक़ीक़त में यह तक़लीद नहीं बल्कि ख़ुदा के उतारे हुये अहकाम की पैरवी है।

इन ऐबारात से मालूम हुआ कि जिन के अंदर इजतेहाद की कुव्वत मौजूद हो उन्हीं की पैरवी की जाये गैर मुजतहिद की नहीं, अब रहा आइम्मये अरबा की तक़्लीद करना तो उनकी तक़्लीद मज़कूरा बाला इबारात ही से वाज़ेह हो जाती है, क्योंकि उलमा का उन हज़रात के मुजतहिद होने के बारे में इजमा है, तो अहकाम में उन हज़रात की तक़लीद करना 'मा अंज़ल्लाह' की मुताबिअेत है, इमामों की तक़ीलद करने का मतलब यह है कि चारों मज़ाहिब के इमामों में से किसी एक की पैरवी की जाये। हर इमाम फ़क़ीह और मुजतहिद कामिल थे, इमामों से मुराद दर्ज ज़ेल हज़रात हैं।

(१) इमामे आज़म अबू हनीफा (२) इमाम मालिक (३) इमाम शाफई (४) इमाम अहमद बिन हंबल रहमहुमुल्लाह अलैहिम

मज़कूरा इमामों में से किसी एक की तक़्लीद की जाये उन के अलावा दूसरे अइम्मा की तक़्लीद ममनू है इस लिए कि उन के अक़्वाल न तो इस्नादे सही के साथ मरवी हैं ने कुतुबे मशहूरा में जामियत के साथ मुदव्विन हैं कि उन पर ऐतेमादे सही हो और न

मुनक़्क़ह हैं, और न इतनी ऐहतियात के साथ मौजूद हैं कि उन का इत्तिबा किया जा सके, रह गई एक यह सूरत कि अइम्मये अरबा में से किसी मुअय्यन की तक़्लीद न की जाये, बल्कि बाज़ मसाइल में एक की, बाज़ में दूसरे की इस में क्या हर्ज है।

पहला हर्ज:

यह कि ख़रक़े इजमा है। इजमा इस पर है कि जिस इमाम का मुक़ल्लिद हो जुमला उमूर में उसकी तक़लीद करे। बाज़ मसाइल में एक की बाज़ मसाइल में दूसरे की, यह ना जायज़ और गुनाह है।

दूसरा हर्ज:

यह कि हक़ीक़त में इमाम की तक़लीद नहीं हुई, अपने नफ्स की तक़लीद हुई। इस लिए कि दूसरे इमाम की तक़लीद एक इमाम से उदूल कर के दूसरे इमाम की तरफ रुजू की बुनियाद क्या होगी? अपनी पसंद के कुछ मसाइल में इमाम अबू हनीफा रहमतुल्लाह अलैह का इजतेहाद पसंद आया तो उसे इख़्तेयार कर लिया और बाज़ दूसरे मसाइल में दूसरे इमाम का इज़्तेहाद पसंद आया तो उसे इख़्तेयार कर लिया। यही तो हवाये नफ्स की पैरवी हैं अगर यह ऐतेराज़ व रुजू दलील की कुव्वत व ज़ईफ की बिना पर है तो यह तसलीम क़ौल बिला दलील न हुआ बा दलील हुआ, फिर तक़्लीद न रही और कलाम में है।

तीसरा हर्ज:

यह है कि नस्से क़ुरआनी से हराम है कि कभी एक तरीक़ा इख़्तेयार किया जाये कभी उसके बरअक्स दूसरा हम को मिला है कि एक ही रास्ते को इख़्तेयार करें और उसी की पैरवी करें, चंद रास्ते का इत्तिबा न करें, फरमाया गया।

لَاتَتَّبِعُو السُبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمۡ عَنۡ سَبِيۡلِهٖ۔

चंद रास्तों पर मत चलो वरना उसके रास्ते से हट जाओगे।

जो शख़्स बाज़ मसाइल में एक इमाम और बाज़ में दूसरे इमाम की पैरवी का क़ायल है तो वह मज़हबे इस्लाम का हामी नहीं बल्कि दीन के मामला में खेलवाड़ कर रहा है और यह फेले हराम व मम्नु है, उस शख़्स की मिसाल ऐसी ही है जैसे कि हदीस शरीफ में मुनाफिक़ के मुतल्लिक़ वारिद है, सरकार फरमाते हैं'

مثل المنافق كمثل الشاة العائرة بين الغنمين تعير الىٰ هذه مرة و الى هذه مرة۔

मुनाफिक़ की मिसाल उस आवारा बकरी की है जो दो बकरों में से किसी एक के पास जाती है और कभी दूसरे के पास।

नीज़ एक दूसरी हदीस में इर्शाद फरमाया:

ان شرالناس ذو الوجهين الذى ياتى هٰولاء بوجه وهٰولاء بوجه ۔

लोगों में सब से बुरा शख़्स दोहरी पॉलीसी वाला है जो एक मर्तबा यहाँ आता है और एक मर्तबा वहाँ से उस शख़्स पर अल्लाह तआला का यह इर्शाद सादिक़ आता है:

اِنَّمَا النَّسِئُ زِيَادَةٌ فِى الكُفۡرِ يُضَلُّ بِهِ الَّذينَ كَفَرُوا يُحِلُّونَهٗ عَاماً وَّ يُحَرِّمُونَهٗ عَاماً۔

लोगों में सब से बुरा उन का महीने पीछे हटाना नहीं मगर कुफ्र में बढ़ना उस से काफिर बहकाये जाते हैं एक वर्ष उसे हलाल और ठहराते हैं और दूसरे वर्ष उसे हराम मानते हैं।

इर्शादे ख़ुदावंदी है:

يٰـاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡ اَطِيۡعُوااللّٰهَ وَاَطِيۡعُوا الرَّسُولَ وَاُولِى الۡاَ مۡرِ مِنۡكُمۡ فَاِنۡ تَنَارَعۡتُمۡ فِى شَىۡءٍ فَرُدُّوه اِلَى اللّٰهِ وَالرَّسُولِ۔

ऐ ईमान वालो हुक्म मानो अल्लाह का और हुक्म मानो रसूल का और उन का जो तुम में हुकूमत वाले हैं फिर अगर तुम में किसी बात का झगड़ा उठे तो उसे अल्लाह और रसूल के हुज़ूर रुजू करो।

आयते मज़कूरा शरीअत के चार दलाइल की एक क़वी दलील है, यानी किताबुल्लाह, सुन्नते रसूलिल्लाह, इजमाये उम्मत और क़यास, कि यही चार अदिल्लये शरय अइम्मये अरबा के मामूल हैं इस आयते करीमा से उन की तक़लीद वाज़ह तौर पर साबित होती है।

एक जगह और क़ुरआन इर्शाद फरमाता है:

وَلَوۡ رَدُّ وهُ اِلَى الرَّسُولِ وَاِلىٰٓ اُولِى الۡاَمۡرِ مِنۡهُمۡ لَعَلِمَهُ الَّذِيۡنَ يَسۡتَنۡبِطُونَهٗ مِنۡهُمۡ (پ ۵، ع ۸ سوره النساء)

और अगर उस में रसूल और अपने ज़ी इख़्तेयार लोगों की तरफ रुजू लाते तो ज़रूर उन से उसकी हक़ीक़त जान लेते यह जो बात मैं काविश करते हैं। (कंज़ुल ईमान)

आयते मज़कूरह में 'ऊलिल अम्र' से मुराद उलमा और फुक़हा हैं जो नुसूस से इस्तिंबादे अहकाम की सलाहियत रखते हैं न हुक्कामे वक़्त जैसा कि बाज़ लोगों का ख़्याल है। बिल फर्ज़ अगर आयत का मिस्दाक़ हाकिमे वक़्त ही है तो उसका ज़ी इल्म, देयानतदार और सहिबे इस्तिंबात होना शर्त है, जैसे ख़ुलफाये राशेदीन और उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाह अलैहिम तो साबित हो गया कि इस्तिंबात की सलाहियत और देयानतदारी शर्त है न कि हुकूमत व इमारत, जाहिल, फासिक़ या काफिर हो, और अहकामे ख़ुदावंदी के ख़िलाफ हुक्म नाफिज़ करे तो उसकी इताअत वाजिब नहीं हदीस शरीफ में है:

لَاطَاعَةَ لِمَخْلُوقٍ فِي مَعْصِيَةِ الخَالِقِ۔

“ऊलिल अमर” की वज़ाहत में चंद हदीसें पेश हैं, सुनने दार्मी में है:

اخبرنايعلى حدثنا عبدالملك عن عطاء قال أُولى الامر اى اولى العلم والفقه۔

ऊलिल से मुराद उलमा और फक़हा हैं।

तफसीरे इत्क़ान में हज़रत इमाम सिवती ने लिखा है:

عن ابی طلحة من ابن عباس قال اولى الامراهل الفقه والدين۔

ऊलिल अमर से मुराद उलमा फुक़हाये दीन हैं।

اخرج ابن جرير والمندر وابن ابی حاتم والحاكم عن ابن عباس و عن مجاهد هم اهل الفقة والدين۔

उन (ऊलिल अमर) से मुराद अहले फिक़्ह व दीन हैं।

तफसीरे कबीर जिल्द सालिस स. ३७५ शरह मुस्लिम अज़ इमाम नौवी जिल्द सानी स. १२४ तफसीरे मआलिजुत्तंज़ील व तफसीर नीशापूरी में मज़कूरा बाला रिवायात की ताईद मिलती है।

अब हम दूसरे मक़्सद की तरफ चलते हैं, वह यह कि इजमा और क़यास भी अदिल्लये शरइय्या ही से है लिहाज़ा उन के सुबूत में आयात व आहादीस और सल्फे सालिहीन के चंद अक़्वाल पेश हैं।

इर्शादे ख़ुदा वंदी है।

وَيَتَّبِعُ غَيْرَ سَبِيْلِ الْمُوْمِنِيْنَ نُوَلِّهِ مَا تَولّٰى وَنُصلِهِ جَهَنَّمَ وَسَاءَ تْ مَصِيْراً۔(پ ٥،ع ١٤)

और (जो) मुसलमानों की राह से जुदा राह चले हम उसे उसके हाल पर छोड़ देंगे और उसे दोज़ख़ में दाख़िल करेंगे, और

क्या ही बुरी जगह पलटने की है।(कंज़ुल ईमान)

इस आयत के तहत हज़रत इमाम राज़ी तफसीर कबीर जिल्द सालिस स. ४७२ में तहरीर फरमाते हैं:

ان الشافعی سئل من اٰية فی كتاب الله تدل على ان الاجماع حجة فقرأ القراٰن ثلاث مأة مرة حتى وجد هذه الاية،وتقرير الاستدلال ان اتباع غير سبيل المؤمنين حرام فوجب ان يكون اتباع سبيل المومنين واجباً۔

इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह से पूछा गया कि कुरआन की कोई आयत तिलावत फरमायें जो इस बात पर दलालत करे कि इजमा हुज्जत है, आप ने तीन सौ मर्तबा कुरआन की तिलावत की यहाँ तक कि यह आयत पाली, इस्तिदलाल यूँ किया जायेगा कि जब गैर मुस्लिमों के रास्ते की पैरवी हराम है तो मुसलमानों के रास्ते की पैरवी ज़रूरी है।

तफसीरे मदारिक शरीफ में इसी आयत से मुतअल्लिक़ दर्ज़ है, फरमाते है:

هودليل على ان الاجماع حجة لايجوز مخالفتهاكما لايجوز مخالفة الكتاب والسنة۔

वह इस बात पर दलील है कि इजमा हुज्जत है, जिस तरह किताब और सुन्नत की मुख़ालिफत जायज़ नहीं इसी तरह इजमा की भी मुख़ालिफत जायज़ नहीं।

और तफसीरे बैज़ावी में है:

والأية تدل على حرمة مخالفة الاجماع...... واذاكان اتباع غير سبيل المؤمنين محرماكان اتباع سبيلهم واجباً۔

आयत मुख़ालिफ इजमा की हुरमत पर दलालत करती है। और जब गैर मुसलिमीन का इजमा हराम है तो मुसलमानों की पैरवी वाजिब होगी।

इस से साबित हो गया कि उलमा ने तक़्लीद को वाजिब क़रार दिया है और ला मज़हबियत को सख़्त गुनाह लिखा है तो उलमा की मुख़ालिफत करना गोया इस आयते करीमा की मुख़ालिफत है क्योंकि हक़ जल्ला मजदहू ने इस उम्मत का वस्फ यूँ बयान किया है:

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَامُرُونَ بِا المَعْرُوفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ المُنْكَر۔(پ ٤،ع٣،آل عمران)

तुम बेहतर हो उन सब उम्मतों में जो लोगों में ज़ाहिर हुईं भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से मना करते हो।

इर्शाद नबवी है:

العلم ثلاثة،اٰية محكمة اوسنة قائمة اوفريضة عادلة.

इल्म और मालूमात शरीअत तीन चीज़ें हैं, एक आयते मुहकम ज़ाहिरुल माना गैर मंसूख़ दोयम पैगम्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत जो कि सही और दुरुस्त है, सोयम इजमा व क़ियास जो आयात व अहादीस से मुसतंबत है।

शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह शरह मिश्कात में इस हदीस के तहत फरमाते है:

فریضۂ عادلہ آں است کہ مثل و عدیل کتاب و سنت است،اشارت است باجماع وقیاس کہ مستند و مستنبط اندازاں وبایں اعتبار آں رامساوی ومعاول کتاب و سنت فرمود و تعبیر ازاں بفریضۂ عادلہ ازاں

وجہ کہ تنبیہ باشدبرآں کہ عمل بآنہا واجب است، چنانچہ بکتاب وسنت پس حاصل حدیث آں شد کہ اصول دین چہار اندکتاب وسنت واجماع وقیاس۔

फरीज़ये आदिला किताब व सुन्नत के मुसावी है, इस से इजमा और क़यास की तरफ इशारा है कि वह किताब व सुन्नत ही से मुस्तंबत हैं इसी वजह से उन को किताब व सुन्नत के मुसावी और बराबर क़रार दिया गया है। उसकी ताबीर फरीज़ये आदिला से इस वजह से है कि इस बात पर तंबीह हो कि उन पर अमल करना वाजिब है इस हदीस का हासिल यह है कि उसूले दीन चार हैं किताब व सुन्नत, इजमा और क़यास।

दारमी में है:

كان ابو بكر رضى الله عنه اذا اوردعليه الخصم نظر فى كتاب الله فان وجد مافيه يقضى بينهم قضىٰ به و ان لم يكن فى الكتاب وعلم من رسول الله ﷺ فى ذلك الامر سنة قضىٰ به فان اعياه خرج فسأل المسلمين الى ان اذا اجتمع رايهم علىٰ امر قضىٰ به رواه الدارمى۔

हज़रत अबू बक्र सीद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हू की बारगाह में जब कोई मुक़द्दमा पेश होता तो पहले किताबुल्लाह में तलाश फरमाते और उसके मुताबिक़ फैसला फरमाते, अगर किताब में न पाते तो हदीसे रसूल के पेशे नज़र फैसला करते, और इस सिलसिला में आप को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कोई सुन्नत मालूम होती तो उसके मुताबिक़ होती तो उसके मुताबिक़ फैसला करते, और अगर सुन्नते नबवी में भी न पाते तो आम मुसलमानों से पूछते अगर उन की राये किसी एक सूरत पर मुत्तफिक़ हो जाती तो उसके मुताबिक़ फैसला कर देते:

كان عبدالله بن عباس اذا سئل عن الامر فكان فى القراٰن اخرج به فان لم يكن فى القراٰن وكان عن رسول الله ﷺ اخرج به فان لم يكن فعَنْ ابى بكر و عمر فان لم يكن فيه أمربرايه،وفى رواية نظر ما اجتمع عليه الناس اخذ به۔(رواه الدارمى)

अब्दुल्लाह बिन अब्बास से जब कोई मस्अला पूछा जाता तो उसका हुक्म अगर कुरआन में पाते तो उसके मुताबिक़ हुक्म देते अगर कुरआन में न पाते तो सुन्नते रसूलुल्लाह से हुक्म सादिर फरमाते और अगर उस में भी न पाते तो अबू बकर व उमर रज़ि अल्लाहु अन्हुमा के फैसलों के मुताबिक़ देते, अगर उन का कोई फैसला न मिलता तो अपनी राये से फतवा देते और एक रिवायत में यह भी है कि लोगों के इजमा शुदा मस्अला को इख़्तेयार करते।

मज़कूरा बाला दलीलों से बख़ूबी वाज़ेह हो गया कि मुमिनीन कामिलीन का इजमा एक क़तई दलील है जो अदिल्लये शरइय्या ही की एक शिक़ है। लिहाज़ा उसका मुन्किर दीने हक़ का मुन्किर है।

हुज्जियते क़यास:

عن معاذ بن جبل ان رسول الله ﷺ لمابعثه الى اليمن قال كيف اذ عرض لك قضاء قال اقضى بكتاب الله، قال وان لم تجد فى كتاب الله ،قال اقضى بسنة رسول الله قال فان لم تجد فى سنة رسول ﷺ قال اجتهد رائى ولاآلو ،قال فضرب رسول الله علىٰ صدره وقال الحمد لله الذى وفق رسول الله لمايرضى به رسول الله ۔

माज़ बिन जबल से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब उन्हें यमन का क़ाज़ी बना कर भेजा तो फरमाया कि जब कोई मुक़द्दमा दर पेश हो तो कैसे फैसला करोगे, अर्ज़ किया

किताबुल्लाह से फरमाया अगर उस में न मिले तो अर्ज़ किया सुन्नते रसूलिल्लाह से, फरमाया अगर उस में भी न मिले तो, अर्ज़ किया बिला झीझक अपनी राये से इजतेहाद करुंगा, माज़ बिन जबल ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरे सीने पर हाथ रखा और दुआ फरमाई कि सारी ख़ूबियाँ अल्लाह के लिये हैं जिस ने रसूलुल्लाह के क़ासिद को इस बात की तौफीक़ दी जिस से अल्लाह का रसूल राज़ी हो।

इस से वाज़ेह हुआ कि इजतिहाद सिर्फ और सिर्फ उन्हीं उमूर में किया जायेगा जिनका का वाज़ेह हुक्म किताब व सुन्नत से न मिले, अइम्मये दीन व मुजतहेदीने उज़्ज़ाम का क़यास महज़ उन की ज़ाती राय न होती थी, बल्कि किताब व सुन्नत, इजमाये उम्मत, खुलफाये राशेदीन की हिदायात , तआमुले सहाबा को मेआर बना कर किसी मस्अला का हुक्म ज़ाहिर करना होता था, और उस क़यास या राये का महमूद मतलूब होना किताब मजीद की आयत:

لِيَتَفَقَّهوافِى الدّيْن

से साबित है जो लोग अइम्मये मुजतहदीन पर क़यास व इजतिहाद की बिना पर तान करते हैं। उन्हें इस क़यास मफर नहीं है, गौर कीजिये जिन मसाइल पेश आमदा के मुतअल्लिक़ कुरआन व हदीस और इजमाये उम्मत ख़ामूश हों। उन का हुक्मे शरई मालूम करने का तरीक़ा सिवाये इजतिहाद व क़यास के और क्या है? और क़यास व इजतिहाद की मुख़ालिफत में जो आयात व अक़वाल पेश किये जाते हैं, दर अस्ल उन में इस क़यास व इजतिहाद की मज़म्मत है, और उसे फासिद व बातिल क़रार दिया गया है जो महज़ अपनी ख़्वाहिशाते नफ्सानी की बिना पर क्या जाये, लेकिन वह क़यास व इजतिहाद जो किताब व सुन्नत को

मेआर बना कर किया जाये वह तो फिक्हे इस्लामी का एक अहम माख़ज़ है.....हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत बिन उसऊद से फरमाया कि कुरआन व सुन्नत के मुताबिक् फतवा दो और जब कुरआन व सुन्नत में कोई हुक्म न पाव तो अपनी राये से इजतेहाद करो।

मुतज़क्केरा बाला से वाज़ेह हो गया कि मुजतहिद की राये और क़यास अदिल्लये शरइय्या ही से है, इस लिए उसका मुनकार यक़ीनन गुमराह होगा। इस जगह क़यास से मुराद वह क़यास है कि मक़ीस अलैह एक ऐसी इल्लत हो जो किताबुल्लाह और सुन्नते रसूलिल्लाह में मौजूद हो जो इल्लत मक़ीस में है वही इल्लत नस में भी हो तो उसे उलमाये इल्लत मुशतरका कहते हैं। इस के सिवा हर कस व नाकस का क़यास क़ाबिले कुबूल नहीं, ऐलले नुसूस को मुजतहिद और फक़ीह के अलावा दूसरा नहीं जानता।

मुजतहिद के शराइत: मुजतहिद के लिये मख़्सूस सलाहियतों और शर्तों का होना लाज़िमी और ज़रूरी है मस्लन वह मुत्तक़ी, परहेज़गार, साहिबुर्राये, साहबे फिरासत, इंसाफ पसंद, पाकीज़ा अख़्लाक़ का मालिक हो, ज़बान अरब, लुगत, सर्फ व नौह मानी, कुरआन व सुन्नत तफसीर, अस्बाब नुज़ूल, रावियों के हालात जरह व तादील के तरीक़ों से नासिख़ व मनसूख़ की हक़ीक़त से मज़ाहिबे सल्फ से वाक़फियत रखता हो और दलाइले शरइय्या से मसाइल का इस्तिंबात करने (निकलने) पर क़ादिर हो, क़यास के उसूल व क़वाइद को जानता हो या यूँ कहिये कि दर्जये इजतिहाद सिर्फ उस शख़्स को हासिल होता है जो पूरी शरीअत के मक़ासिद को समझता हो और दलाइले शरइय्या से मसाइल के इस्तिख़राज की कुदरत रखता हो।

नीज़ यह बाता भी मलहूज़ ख़ातिर रहे कि मुजतहिद को भी क़यास व इजतिहाद सिर्फ उन मसाइल में जायज़ है जिन के मुतअल्लिक़ कुरआन व सुन्नत और इजमाये उम्मत ने वाज़ेह अहकाम दे दिये हैं तो फिर क़यास व इजतिहाद ना जायज़ व मम्नू है। चुनान्चे मुजतहिद मुतलक़ सय्यदना इमामे आज़म अबू हनीफा रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि किसी बात का हुक्म मालूम करने के लिए मैं सब से पहले कुरआन मजीद की तरफ रुजू करता हूँ अगर कुरआन व सुन्नत दोनों से हुक्मे शरई मालूम न हो तो फिर ख़ुलफाये राशेदीन और साहाबये केराम के अक़्वाल और फैसलों की तरफ रुजू करता हूँ, और किसी मसअला में सहाबये केराम के अक़्वाल मुख़्तलिफ हों तो उन में से उसको इख़्तेयार करता हूँ, जो कुरआन व सुन्नत को ज़्यादा क़रीब हो, और किसी मसअला में सहाबये केराम का क़ौल व अमल न मिले तो फिर ताबेईने केराम फैसलों पर गौर व फिक्र कर के अपनी अलग राये क़ायम कर के उस पर अमल करता हूँ।

क्या इजतिहाद का दरवाज़ा बंद हो गया?

यह कहना तो गलत है कि इस ज़माने में मुजतहदाना शान का आलिम पैदा नहीं हो सका, हाँ यह कहा जा सकता है कि अइम्मये मुजतहेदीन मस्लन इमाम अबू हनीफा, इमाम मालिक, इमाम शाफई और इमाम अहमद बिन हंबल अलैहिमुर्रहमह के बाद आज तक कोई भी उन लोगों के पाये का पैदा नहीं हुआ, और यह मुसल्लम है वह लोग इजतिहाद के दर्जा पर फायज़ थे, न जाने कितने ही औलिया, सुलहा, मुहद्दिस व मुफस्सिर उस रुये ज़मीन पर पैदा हुये, और उन के अंदर दीनी मालूमात का संमुद्र भी मोजज़न

था इस के बावजूद भी उन्हों ने अइम्मये अरबा ही की इक़्तिदा और तक़्लीद में अपनी आफियत समझी और आज तक उन्हीं मज़्कूरा बाला अइम्मा के मुक़ल्लिद पूरी दुनिया में पाये जा रहे हैं वह अफराद चंद ही होंगे जिन के यहाँ तक़्लीदे अइम्मा कोई चीज़ नहीं, उन्हें उगलियों पर गिना जा सकता है।

तक़्लीदे अइम्माये अरबा लाज़िम है

एक जमात बड़े तम्तराक़ से कह देती है कि जब कुरआन व हदीस और अफआल सहाबा हमारे दरमियान मौजूद हैं तो उन्हें छोड़ कर मुजतहदीन उलमा की पैरवी क्यों की जाये। तो उन मोतरज़ीन को ख़ूब अच्छी तरह से जान लेना चाहिये कि सहाबये केराम रज़िवानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन को उमूले जिहाद और तरक़्क़ीये इस्लाम की मशग़ूलियत ने कुतुबे तफ़ासीर और कुतुबे अहादीस की तदवीन को मौक़ा ही नहीं दिया, नीज़ उन के क़ुलूब पर अनवारे रिसालत इस तरह जलवा गर थे कि उन लोगों ने तनवीने किताब की ज़रूरत ही नहीं महसूस की और इसी नूर की रोशनी की वजह से वह राहे रास्त पर थे। और जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ज़ाहिरी दौर ख़त्म हो गया और इख़्तेलाफात ने सर उठाना शुरू कर दिया, हर शख़्स एक दूसरे के ख़िलाफ सहाबये केराम के अक़्वाल से दलीलें पेश करने लगा, उसकी वजह से तालिबाने हक़ को मज़हबे इस्लाम के समझने में परेशानियाँ लाहिक़ होने लगीं, तो रब्बुल इज़्ज़त ने अपने फज़्ल व करम से उम्मते मरहूमा के लिए चार मुत्तक़ी उलमा व सोलहा का इन्तिख़ाब किया और उन्हें बकमाले ऐहतियात इस्तिंबात व इजतिहाद की ताक़त अता फरमाई जिन की तक़्लीद ने मख़्लूक़ को गुमारही के मैदान से निकल कर शाहराहे हिदायत पर ला खड़ी कर दिया:

ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُوتِيهِ مَنْ يَّشَاءُ۔

अल्लामा सय्यद अली समहूवी शाफई (मुतवफ्फा ९११ हि. १५०५ ई०) फरमाते हैं:

قال المحقق الحنفيه الكمال ابن الهمام رحمة الله عليه نقل الامام الرازی اجمع المحققون علی منع العوام من تقليد اعيان الصحابة بل يقلدون من بعد هم الذين يسرو و ضعوا و دونوا۔

मुहक़्क़िक़ हनफिया कमाल इब्ने हमाम रहमतुल्लाह अलैह ने इमाम राज़ी से नक़ल किया कि मुहक़्क़ेक़ीन का इस बात पर इजमा है कि वह सहाबा रज़ि अल्लाहु अन्हुम की तक़्लीद न करें, बल्कि उन के बाद वालों की तक़्लीद करें जिन्हों ने मसाइल में आसानियाँ पैदा फरमाईं और उनकी वज़ा व तदवीन की।

इबारते बाला इस बात की तरफ मुशीर है कि जो हज़रात दर्जये इजतिहाद को नहीं पहुंचे हैं वह मुजतहदीन की बनिस्बत अवाम के ज़ुमरे में दाख़िल हैं, वह अइम्मये अरबा की तक़्लीद छोड़ कर मंज़िले मक़्सूद (उक़्बा की कामियाबी) नहीं हासिल कर सकते, क्योंकि अइम्मये अरबा के मज़हब की बुनियाद किताबुल्लाह और सुन्नते रसूलिल्लाह पर है, जैसा कि उन की मरवियात से वाज़ेह है।

उम्मत का इस बात का इजमा है कि मुजतहदीन से मुराद यही चार हस्तियाँ हैं जिन की पैरवी लाज़िम है, उम्मत के इस इजमा के सुबूत में रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद पेशे ख़िदमत है, फरमाते हैं:

ان اللّٰه لايجمع امتی اوقال امة محمد علی الضلالة ويداللّٰه علی الجماعة من شذشذ فی النار۔

बेशक अल्लाह मेरी उम्मत को या कहा कि मुहम्मद की उम्मत को गुमाराही पर जमा नहीं फरमायेगा। और अल्लाह की मदद (जमात अहले सुन्नत) के साथ है, जो उस से अलग रहा वह दोज़ख़ी है।

इर्शादे ख़ुदा वंदी है:

يَومَ نَدْعُوَ كُلَّ اُنَاسٍ بِاِمَا مِهَمْ۔(پ ١٥،ع ٨ س بنى اسرائيل)

जिस दिन हम हर जमात को इस के इमाम के साथ बुलायेंगे (कंज़ुल ईमान)

आयत में इमाम से मुराद वह इमाम और पेशवा हैं, जिन्हों ने आपने पैरूकारों को हिदायत या गुमराही की दावत दी, क़यामत के रोज़ हर शख़्स अपने इमाम और पेशवा के नाम के साथ पुकारा जायेगा, चाहे वह पेशवा किसी भी क़िस्म के हों, उस से साबित हुआ कि हर शख़्स को अपने लिए एक पेशवा का इन्तेख़ाब करना चाहिये और वह पेशवा ऐसा हो जो भलाई की तरफ रहनुमाई करे और बुराई के रास्तों से रोके।

वजूबे तक़लीद के सिलसिला में कुरआन मुक़द्दस का एक और इर्शाद पेशे ख़िदमत है रब्ब तआला फरमाता है:

فَاسْئَلُو اَهْلَ الذِكْرِ اِنْ كُنْتُم لَاتَعْلَمُونَ(پ ١٤،ع ١٢،سوره نحل)

तो ऐ लोगों इल्म वालों से पूछो अगर तुम्हें इल्म नहीं (कंज़ुल ईमान)

इस आयत में तीन उमूर गौरे तलब हैं, अव्वल सवाल करना, दोयम अहले ज़िक्र से सवाल करना न कि हर कस व नाकस से, सोयम सिवा किसी चीज़ से नावाक़्फी की वजह से होता है, तो जो शख़्स कुरआन व हदीस से मस्अला न निकाल सके उस पर लाज़िम

है कि अपने मज़हब के मुजतहिद से पूछ कर उस पर अमल करे और यही तक़्लीद है, अगर सवाल नहीं किया और मुजतहिद के क़ौल पर अमल नहीं किया बल्कि इंकार किया तो यह गौर मुक़ल्लिदियत है। अब सवाल यह रह जाता है कि अहले ज़िक्र कौन लोग हैं आया अइम्मये मज़ाहिब या हर नीम ख़्वान्दा, इस आयत की वज़ाहत दर्ज ज़ेल हदीस की रोशनी में समझें।

اخرج ابن مردويه عن انس قال سمعت النبى ﷺ يقول ان الرجل يصلى ويصوم ويحج و يغزوانه المنافق قالوا يارسول الله بما ذا دخل عليه النفاق قال بطعنه على امامه من قال الله فى كتابه فاسئلوا اهلَ الذكرِ ان كنتم لاتعلمون۔

इब्ने मरदविया ने हज़रत अनस से रिवायत की फरमाते हैं मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फरमाते हुये सुना कि आदमी नमाज़ पढ़ेगा, रोज़ा रखेगा, गज़वा करेगा, हालांकि वह मुनाफिक़ होगा, अर्ज़ कि या रसूलल्लाह उन के अंदर निफाक़ कैसे सरायत कर जायेगा? फरमाया अपने इमाम को बुरा भला कहने की वजह से। और इमाम कौन है फरमाया कि रब्बुल इज़्ज़त ने इर्शाद फरमाया :

فاسئلو ا اهل الذكر الخ

अहले ज़िक्र इमाम हैं।

इस हदीस से यह वाज़ेह हो गया कि ऊलुल अम्र ही को अहलुज़्ज़िक्र भी कहा जाता है। गुज़िश्ता औराक़ में यह बात साबित की जा चुकी है कि ऊलुल अम्र उलमाये रासेख़ीन और अइम्मये मज़ाहिबे अरबा हैं, उन्हीं हज़रात की शान में कुरआन मुक़द्दस इर्शाद फरमाता है।

وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّا اُولُواالَالبَابِ(پ٣،ع١٠البقره)

और नसीहत नहीं मानते मगर अक्ल वाले (कंज़ुल ईमान)

وَاِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُواالَالبَابِ(پ١٣،ع٩ سوره رعد)

नसीहत वही मानते हैं जिन्हें अक्ल है।(कंज़ुल ईमान)

فَاعْتَبِرُوْا يَا اُوْلِىَ الاَبْصَارِ(پ٢٨ع٤سوره الحشر)

तो इबरत लो ऐ निगाह वालो। (कंज़ुल ईमान)

साथ ही साथ उन सुतूर से यह भी वाज़ेह हो गया कि अहले ज़िक्र से वह हज़रात मुराद नहीं हैं जिन्हों ने फारसी और उर्दू की चंद सतरें पढ़ ली हों, ज़ोहद व तक्वा की अलिफ बा से भी वाक़फियत न हो उलमाये रब्बानीन के कूचे में कभी भूले से भी क़दम न रखा हो, कुरआन की तफ़सीर और अहादीस की तौज़ीह में अपनी राये को क़ौले फैसल तसव्वुर करते हों ऐसे ही लोगों के मुतअल्लिक़ रसूलुल्लाह सल्लाहुअ अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया :

من قال فى القراٰن بغير علم فليتبوأ مقعدهٗ فى النار-

जिस ने कुरआन की तफसीर में बेग़ैर इल्म के कुछ कहा तो उसका ठिकाना जहन्नम है।

मुजतहदीन की पैरवी करना और उस से मस्अला दरयाफ्त कर के उस पर अमल करना किस क़द्र ज़रूरी है, उस से मुतअल्लिक़ एक हदीस पेश है जिस से मुजतहिद की अहमियत और उन के मुक़ाम बख़ूबी समझ में आ जायेगा:

عن جابر رضى الله عنه قال خرجنا فى سفر فاصاب مناحجر فشجه فى راسه قال لاصحابه هل تجدون لى رخصة فى التيمم قالو ا

مانجد لك و انت تقدر على الماء فاغتسل فما ت فلما تد منا الى النبى ﷺ اخبرناه بذلك قال قتلوه قتلهم الله الا سالو ا اذا لم يعلموا فانما شفاء العى السوال -

हज़रत जाबिर रज़ि अल्लाहु अन्हू से मरवी है उन्हों ने फरमाया कि हम लोग सफर मे थे हम में से एक शख़्स को पत्थर से सर में चोट आ गई, उन्हों ने अपने हमराहियों से पूछा कि आप लोग मुझे तयम्मुम की रुख़्सत देते हैं? लोगों ने कहा कि हम आप को तयम्मुम की रुख़्सत नहीं देते, आप तो पानी इस्तेमाल कर सकते हैं, उन्हों ने गुस्ल किया और मौत लाहिक हो गई, जब हम नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुये, वाक़या की ख़बर दी गई। आप ने फरमाया, उन लोगों ने उसे क़त्ल कर दिया, अल्लाह तआला उन्हें क़त्ल करे, जब वह नहीं जानते थे तो पूछ लेते, बेशक सवाल करना बीमारी(ला इल्मी) के लिए शिफा है।

मज़कूरा बाला हदीस से वाज़ेह हुआ कि जब सहाबये केराम रिज़वानुल्ला अन्हुम अपने मुजतहदीन सहाबा से फतावा न लेने की वजह से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ऐताब के ऐसे मुर्तकिब हुये कि रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैह व सल्लम ने उन के हक़ में:

قتلهم الله

फरमाया, तो उन नीम ख़्वान्दा लोगों का क्या हाल होगा जो उलमा रासेख़ीन के अक़वाल से गुरेज़ कर के तफ़सीर बिर्राये और अहादीस के मन मानी मतालिब बयान करते हैं, और भोले भाले अवाम को ईमान गारत करते हैं, अल्लाह तआला उस बुरी क़ौम से तमाम मुसलमानों को बचाये।

अख़ीर में गैर मुक़ल्लेदीन के मोतमद आला शाह वलीउल्लाह मुहद्दीस देवली की किताब 'अक़दुल जय्यद' के एक इक़तेबास का उर्दू तर्जमा पेशे ख़िदमत है जो दुनियाये गैर मुक़ल्लेदीन में ज़लज़ला पैदा करने के लिए काफी है। फरमाते हैं।

मज़ाबिहे अरबा के इख़्तेयार करने में अज़ीम मसलहत है और उन से ऐराज़ करने में भारी फसाद है हम उन को चंद तरीक़े से बयान करते हैं।

अव्वल यह कि उम्मत ने इजमा कर लिया है कि शरीअत की मारफत में सल्फ पर ऐतेमाद किय जाये, ताबेईन ने इस मामला में सहाबा पर ऐतेमाद किया, और तबये ताबेईन ने ताबेईन पर, इसी तरह हर तबक़ा में उलमा ने आपने पहले पर ऐतेमाद किया, उसकी अच्छाई पर अक़ल दलालत करती है, इस लिए कि शरीअत नक़ल और इस्तिम्बात के बगैर नहीं पहचानी जा सकती, और नक़ल नहीं दुरुस्त होगी मगर इस तरह हर तबक़ा अपने पहले वालों से मुत्तसेलन हासिल करे, और इस्तिम्बात के लिए यह ज़रूरी है कि मुतक़द्देमीन के मज़ाहिब को जाना जाये। ताकि उन के अक़वाल से बाहर न जायें कि ख़रक़े इजमा (इजमा के ख़िलाफ) हो जाये और ताकि उन्हीं अक़वाल को बुनियाद बनाया जाये। और अगलूं से इस में मदद ली जाये। इस कि तमाम सनअतें मस्लन सुनारी और तिब और शेअर और लोहारी और तेजारत और रंगरेज़ी किसी को भी मयस्सर नहीं होती, मगर उस के माहिरीन के साथ काम करने से, और बगैर उसके बहुत नादिर गैर वाक़े है। अगरचे अक़्लन जायज़ है, और जब यह मुतय्यन हो गया कि शरीअत की मारफत में सल्फ के अक़वाल ही पर ऐतेमाद है तो ज़रूरी है कि उन के वह अक़वाल जिन पर ऐतेमाद हो इस्नादे सही के साथ मरवी हो या मशहूर किताबों में मुदून हों, और यह कि मुनक़्ह हों कि उन मुतहम्मेलात

में राजेह, मरजू से ज़ाहिर हो, और आम की तख़्सीस मज़कूर हो। मुतज़ाद अक़वाल में ततबीक़ हो अहकाम की इल्लतें बयान की गई हों, वरना उन पर ऐतेमाद सही हनीं। और उस पिछले ज़माने में कोई मज़हब उस सिफत के साथ मौसूफ नहीं। सिवाये उन चार मज़ाहिब के (इमाम अबू हनीफा, इमाम मालिक, इमाम शाफई, इमाम अहदम बिन हंबल रहमतुल्लाह अलैहिम)

मज़कूरह बाला इक़्तेबास से दर्ज ज़ेल नताइज बरआदम हुये।

(१) इस पर इजमा है कि तक़लीदे शख़्सी वाजिब है। (२) तक़्लीद में अज़ीम मसलहत है और इस के तर्क में फसाद कबीर है। (३) शरीअत की मारफत नक़्ल और इस्तिम्बात पर मौक़ूफ है और यह दोनों सल्फ के अक़वाल जानने पर मौक़ूफ है। (४) सल्फ में सिर्फ अइम्मये अरबा के अक़वाल इस्नादे सही के साथ मरवी हैं और सिर्फ उन्हीं के मज़ाहिब मुनक़्ह हैं। (५) सल्फ में से अइम्मये अरबा के अलावा दूसरे मुजतहदीन के अक़वाल न इस्नादे सहीह के साथ मरवी हैं, न कुतुबे मशहूरा में जामेईयत के साथ मुदून हैं कि उन पर ऐतेमाद सही हो, और न मुनक़्ह हैं।

इन अबहास से अच्छी तरह वाज़ह हो गया कि मुजतहदीन में से सिर्फ अइम्मये अरबा ही के मज़ाहिब लायक़े ऐतेमाद और क़ाबिले अमल हैं। जो शख़्स तक़लीदे शख़्सी का मुन्किर और अइम्मये अरबा की तक़लीद को लाज़िम न जोने वह राहे रास्त से भटका हुआ है।

(अख़्तर हुसैन फैज़ी मिस्बाही)

इमाम अबू हनीफा
नोमान बिन साबित रहमतुल्लाह अलैह

इमाम अबू हनीफा नुमान बिन साबित रहमतुल्लाह अलैह की ज़ात सुतूदा सिफात किसी तअर्रुफ की मुहताज नहीं, आप का ज़िक्रे जमील रक़्म करना मुझ हर कस के बस की बात नहीं, और इस उम्मीद के साथ कि यह तहरीर दुनिया में ज़रियये कामियाबी और आख़िरत में निजात का सबब बने, दर्ज सुतूर में मुख़्तसरन आप की हयाते तय्यबा पर रोशनी डाली गई है।

नाम व नसब: कुन्नियत अबू हनीफा, लक़ब इमामे आज़म, नाम नुमान बिन साबित बिन ज़ौता बिन माह फक़ीह कूफी।

आबाई वतन: वतन से मुतअल्लिक मुतअद्दिद रवायतें मन्कूल हैं, आप के दादा ज़ौता बइख़्तेलाफे रिवायत काबुल या बाबुल, या अंबार या निसा या तिर्मीज़ के रहने वाले थे।

वेलादत: वेलादत से मुतअल्लिक़ ख़ुद इमामे आज़म रहमतुल्लाह अलैह इर्शाद फरमाते हैं कि मैं ८० हि. में पैदा हुआ और ९४ हि. में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उनैस कूफा में आये तो मैंने उन्हें देखा, और उन से हदीस सुनी, उस वक़्त मैं चौदह साल का था उन्हें फरमाते हुये सुना:

سمعت رسول الله ﷺ يقول حبك الشى يعمى ويصم۔

मनाक़िबे मुवफ्फिक़ और मनाक़िबे करोरी में भी मज़ूर है कि हज़रत इमाम साहब रहमतुल्लाह अलैह ८० हि. में पैदा हुये। और यही सही है।

इसमाईल बिन हम्माद बिन अबी हनीफा (अलैहुमुर्रहमह) फरमाते हैं कि साबित सिग्र सिनी में हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हू

की ख़िदमत में हाज़िर हुये, हज़रत अमीरुल मुमिनीन ने साबित और उन ज़ुर्रियत के लिए दुआये बरकत फरमाई, मालूम होता है कि अल्लाह तआला ने हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हू की दुआ हमारे हक़ में कुबूल कर ली।

तालीम व तरबीयत : आप इब्तिदाअन इल्मे कलाम की तरफ मायल थे, और उस फन में महारते ताम्मा हासिल की, चुनान्चे आप ख़ुद फरमाते हैं कि मैं इब्तिदाई उम्र में बहस व मुनाज़रा में मशगूल रहता था। उस वक़्त बसरा बहसव मुबाहेसा का गहवारा था, बहस व मुनाज़रा के सिलसिला में मुझे बीस से ज़ायद मर्तबा बसरा आना जाना पड़ा था। ख़्वारिज और हश्विया से बहस व मुनाज़रा करता था, उस वक़्त इल्मे कलाम मेरे नज़दीक सब से आला और अफज़ल था, और समझता था कि यह इल्मे उसूले दीन में से है और उस से दीन की बड़ी ख़िदमत अंजाम पाती है, इसी ख़्याल से मैं एक मुद्दत तक उसी को इल्मे दीन समझ कर दुश्मनाने इस्लाम से मुक़ाबला करता रहा, फिर सोचा कि सहाबये केराम और ताबेईने उज़्ज़ाम दीन में हम से ज़ादा इल्म व बसीरत रखते थे और वह लोग कभी बहस व मुबाहेसा में नहीं पड़े, बल्कि शरई उमूर में गौर व फिक्र किया और फिक्ही अबवाब व मसाइल को अपनी ज़ेहनी व फिक्र काविशों का मेहवर बनाया।

कुछ दिनों बाद आप की रिसाई हज़रत इमाम हम्माद बिन सुलेमान तक हुई, उन के हलक़ये दर्स में शामिल हुये और ख़िदमत में रह कर फिक़्ह की तालीम हासिल की, इमाम हम्माद बिन सुलेमान की वफात १२० हि. में हुई। और इमाम साहब उन के इंतेक़ाल तक उन के साथ रह कर हुसूले तालीम में मसरूफ रहे, जिस की मुद्दत अठारह साल है। उसताज़ के इंतेक़ाल के बाद उन

की जगह पर जलवा अफरोज़ हुये और फिक़्ही तदरीस में मशग़ूल हो गये और निहायत कामियाब और लायक़ शागिर्दों की जमात तैयार की जिन्हों ने मज़हबे हनफी को बहुत फरोग दिया। जिन में इमाम अबू यूसुफ, इमाम ज़ुफर बिन हुज़ैल, इमाम मुहम्मद बिन हसन और इमाम हसन बिन ज़ेयाद बहुत मशहूर हैं। यूँ तो आप के तलामेज़ा की तादाद कई हज़ार बताई जाती है, जिन में बहुत से असमा की एक फिरिस्त भी मनकूल है, जिन का यहाँ दर्ज करना तवालत से ख़ाली नहीं।

फुक़ाहत:

قـال الشـافـعى من اراد ان يتجر فى الفقه فهوعيال ابى حنيفه انه ممن وفق له الفقه هذه رواية حرملة۔

इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया कि जो शख़्स फिक़्ह में उबूर हासिल करना चाहे वह अबू हनीफा का मुहताज है क्योंकि वह उन में से हैं जिन्हें फिक़्ह का इल्म दिया गया।

हमवी ने शरह इशबाह में इमाम अबू हनीफा रहमतुल्लाह अलैह का यूँ तज़करा फरमाया है:

عبـدالـلّـه بن المبارك (رحمه الله) يقول ان الاثر قد عرف وان احتـج الـى الـراى فـراى مـالك (رحمه الله) وسفيان (رحمه الله) وابو حـنـيـفـه (رحمة الله) احسنهم راياً وارقهم فطنة واغوصهم على الفقه وهو افقه الثلاثة۔

अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया कि इमाम अबू हनीफा रहमतुल्लाह अलैह हदीस शनास थे, अगर राये और क़यास की ज़रूरत हो तो मालिक, सुफयान और अबू हनीफा

की राये मोतबर है, और अबू हनीफा उन में ज़ेहानत के ऐतेबार से अहसन अदक़ और फिक़्ह के गोता ज़न हैं। और उन तीनों में अफक़ह(यानी फिक़्ह के ज़्यादा जानने वाले) हैं।

इमाम इब्ने हजर शाफई ने अपनी किताब में तहरीर फरमाया:

قـال (عبـدالـلّـه) بن المبارك رأيت مسعرا فى حلقة ابى حنيفة يسأله ويستفيد منه وقال مارايت افقه منه۔

अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक ने फरमाया कि मैं ने मुसइर को इमाम आज़म अबू हनीफा के हल्क़ये दर्स में सवालात करते और इस्तेफादा करते देखा है, और उन्हों ने फरमाया कि मैं ने उन से बड़ा कोई फक़ीह नहीं देखा।

अबू मुती फरमाते हैं कि मैं एक शब इमाम आज़म रहमतुल्लाह अलैह की बारगाह में कूफा की जामा मस्जिद में था कि सुफियान सौरी, मुक़ाबिल बिन हब्बान, हम्माद बिन सलमा, जाफर सादिक़ और दीगर फुक़्हाये केराम तशरीफ लाये और हज़रत इमाम रहमतुल्लाह अलैह के साथ गुफतगू में मशग़ूल हो गये, दौराने गुफतगू लोगों ने कहा कि हम ने सुना है कि आप अकसर मसाइल में क़यास से काम लेते हैं। सुबह से दो पहर तक उसी मौज़ू पर बहस होती रही इमाम आज़म रहमतुल्लाह अलैह ने अपना मज़हब उन लोगों के सामने पेश फरमाया कि पहले किताबुल्लाह पर अमल करता हूँ, उस के बाद सुन्नते रसूलिल्लाह पर, फिर सहाबा के उन फैसलों पर जिन पर सब का इत्तेफाक़ हो, उसके बाद क़यास करता हूँ इतनी गुफतगू सुनने के बाद लोगों ने इमाम साहब के हाथ और पावँ का बोसा दिया। और फरमाया आप सय्यदुल उलमा हैं हमारी

ख़ता माफ फरमायें, आप के तबौह्हरे इल्मी से हम गाफिल थे, इमाम साहब रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया:

غَفَرَ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ اَجْمَعِيْنَ

अल्लाह हमारी और आप हज़रात की मगफिरत फरमाये।

इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह से मन्कूल है कि एक रोज़ इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह से दरयाफ्त किया गया कि आप ने इमामे आज़म रहमतुल्लाह अलैह को देखा है? आप ने फरमाया कि ज़रूर देखा है वह ऐसे ज़बरदस्त आलिम थे कि अगर वह तुम से सुतून के बारे में बहस करें तो दलाइल से सुर्ख़ सोना साबित कर दें।

इमाम बुख़ारी और इमाम मुस्लिम रहमतुल्लाह अलैहुमा ने हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हू की एक रिवायत नक़ल की कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि बिल्फर्ज़ अगर इल्म आसमान में सुरय्या सितारे के पास हो तो उसको फारस के कुछ लोग हासिल करते।

इब्ने हजर रहमतुल्लाह अलैह लिखते हैं:

انه عليه الصلوة والسلام قال ترفع زينة الدنيا سنة خمسين ومأة-

नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि १५० हि. में दुनिया की ज़ीनत ख़त्म हो जायेगी।

रिवायात में मज़कूर है कि जब १५० हि. में हज़रत इमाम अबू हनीफा रहमतुल्लाह अलैह की वफात हुई तो यह वाज़ेह हो गया कि नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हदीस मज़कूर में आप के सन वफात की तरफ ईशारा फरमाते हैं, क्योंकि बाद वफात

वह हुस्न व ज़ेबाई जो उन के दौर में थी दुनिया से रुख़्सत हो गई।

आप की ताबइय्यत: ताबई वह ख़ुश बख़्त इंसान है जिस ने बहालते ईमान किसी सहाबी से मुलाक़ात की हो और ईमान ही की हालत में विसाल भी हुआ हो, पहले ज़िक्र किया जा चुका कि हज़रत इमाम अबू हनीफा रहमतुल्लाह अलैह ने ९४ हि. में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अनीस रज़ि अल्लाहु अन्हू सबाहीये रसूल से मुलाक़ात की और उन से एक हदीस भी समाअत फरमाई। सुबूते ताबइय्यत के लिए इतना काफी है। रिवायात से साबित है कि आप ने हज़रत अनस बिन औफा और दीगर सहाबये केरम से मुलाक़ात की। आप के ज़मानये मुबारक में बहुत से सहाबये केराम रज़ि अल्लाहु अन्हुम अजमईन बक़ैदे हयात थे, और उन में से अक्सर की मुलाक़ात साबित है। तफसीलात के लिए बड़ी किताबों की तरफ रुजू करें।

तक़्वा: हज़रत उसैद बिन अमर ने फरमाया कि आप ने चालिस साल तक इशा के वज़ू से नमाज़े फज्र अदा की और रात भर में एक रकअत में पूरा कुरआन पढ़ते, ख़शियते इलाही से जो रोने की आवाज़ पैदा होती आप के पड़ोसी सुनते और रहम खाते। जिस जगह आप की रूहे मुबारक क़फ्से उन्सुरी से परवाज़ की वहाँ आप ने सत्तर हज़ार मर्तबा कुरआन मजीद ख़त्म फरमाया। हज़रत हसन बिन अमारा ने आप को गुस्ल देते वक़्त फरमाया कि अल्लाह तआला आप को बख़्श दे और आप पर रहम फरमाये कि आप तीस साल रोज़े से थे, और चालिस साल तिहाई रात तक बगर्ज़े इस्तेराहत तकिया नहीं इस्तेमाल किया।

आप बहुत हुकूक़ शनास और सख़ी थे, मरवी है कि जिस

वक़्त अपने अहल व अयाल के लिए अख़राजात निकालते, उसी अंदाज़ से उलमा व मशाइख़ के लिए उसी वक़्त अख़राजात अलाहिदा कर कर के उन के दरमियान तक़्सीम कराते।

हज़रत शफी बिन इबराहीम इलख़ी रिवायत करते हैं कि एक रोज़ इमामे आज़म के साथ मैं कहीं जा रहा था इत्तेफाक़त एक शख़्स सामने आता दिखाई दिया वह हम से छुपना चाहा हम लोग उसकी तरफ से गुज़रे अभी वह सामने ही हुआ था कि इमाम साहब ने उसे आवाज़ दी और कहा कि हमें देख कर रास्ता क्यों काट रहे हो। क्यों शर्मिन्दा हो रहे हो, क्या वजह है। उस शख़्स ने अर्ज़ किया कि मैंने आप से दस हज़ार रुपये क़र्ज़ लिये थे और अभी तक उसकी अदायेगी नहीं कर सका हूँ, और उस वक़्त जब मैंने आप को देखा तो शर्मिन्दा हो कर छुपने लगा कि आप मुझे न देख सकें, हज़रत इमाम ने कहा कि मैं ने वह क़र्ज़ा माफ कर दिया अब कोई शर्मिन्दगी नहीं होनी चाहिये। हज़रत शफीक़ बल्ख़ी कहते हैं कि मैं ने दिल में कहा कि हक़ीक़त में यही शख़्स ज़ाहिद और बा मुराद इंसान है।

एक मारका आरा फैसला :

कूफा में एक शख़्स ने बड़ी धूम धाम से एक साथ ही अपनी दो बेटियों की शादी की, वलीमा की दावत में शहर के तमाम आयान व अकाबिर को मदऊ किया, मुइर बिन कुदाम, हसन बिन सालेह, सुफयान सौरी इमाम अबू हनीफा शरीके दावत थे, लोग बैठे खा रहे थे, कि दफअतन साहबे ख़ाना बदहवास घर से निकला और कहा कि गज़ब हो गया, लोगों ने कहा ख़ैर है। बोला कि ज़ुफाफ की रात औरतों की गलती से शौहर और बीवीयाँ बदल गईं, जो लड़की जिस के पास रही वह उस का शौहर न था, अब क्या किया

जाये सुफयान ने कहा अमीरे माविया के ज़माने में भी ऐसा ही इत्तेफाक़ हुआ था, उस से निकाह में कुछ नहीं आता, अलबत्ता दोनों को महर देना लाज़िम होगा मिस्अर बिन कुदाम, इमाम अबू हनीफा की तरफ मुख़ातब हुये कि आप की क्या राये है? इमाम साहब ने कहा कि शौहर ख़ुद मेरे सामने आयें। तो जवाब दूँ। लोग जा कर बुला लाये। इमाम साहब ने दोनों से अलग अलग पूछा कि रात को जो औरत तुम्हारे साथ रही वही तुम्हारे निकाह में रहे तो तुम को पसंद है। दोनों ने कहा 'हाँ' इमाम साहब ने कहा कि तुम अपनी बीवियों को जिन से तुम्हारा निकाह बंधा था तलाक़ दे दो और हर शख़्स उसी औरत से निकाह पढ़ा ले जो उसके साथ हम बिस्तर रह चुकी। सुफियान ने जवाब दिया, अगरचे फिक़्ह की रो से यह भी सही था क्योंकि यह सूरत वती बिश्शुबहा की है, जिस से निकाह नहीं टूटता लेकिन इमाम साहब ने मसलहत को पेशे नज़र रखा, वह जानते थे कि मौजूदा सूरत में निकाह का क़ायम रहना गैरत व हम्मियत के ख़िलाफ होगा।किसी मजबूरी से ज़ौजैन ने भी तसलीम कर लिया तो दोनों में वह ख़ुलूस व इत्तेहाद पैदा न होगा, जो तज़वीज का मक़सूदे असली है, उसके साथ महर की भी तख़्फीफ है। क्योंकि ख़ल्वते सहीहा से पहले तलाक़ दी जाये तो सिर्फ आधा महर लाज़िम आता है।

इमाम साहब की रहमदिली :

एक दिन और एक शख़्स ने आ कर कहा कि "मैं ने कुछ असबाब घर के किसी कोने में गाड़ दिया था। अब याद नहीं आता कि कहाँ गाड़ा था। क्या करूँ। इमाम साहब ने कहा तुम को याद नहीं तो मुझ को और भी याद न होना चाहिये। वह रोने लगा,

इमाम साहब को रहम आया चंद शागिर्द साथ लिये और उसके घर पर गये शागिर्दों से कहा। अगर यह तुम्हारा घर होता और तुम हिफाज़त के लिए कोई चीज़ छुपा रखते तो कहाँ रखते, सब ने अपने अपने क़यास से मुख़्तलिफ मौक़े बतलाये, इमाम साहब ने फरमाया "उन्हें चार जगहों में से कहीं न कहीं गाड़ा होगा'' उन के खोदवाने का हुक्म दिया। ख़ुदा की शान तीसरी जगह खोदी तो असबाब बेजिन्सेही मदफून मिला।

कूफा में एक गाली शीआ था। जो हज़रत उसमान रज़ि अल्लाहु अन्हू की निस्बत कहा करता था। कि यहूदी थे।इमाम साहब एक दिन उसके पास गये और कहा कि तुम अपनी बेटी की निस्बत ढूँढते थे। एक शख़्स मौजूद है, जो शरीफ भी है, और दौलत मंद भी है। उसके साथ परहेज़गार, क़ायमुल्लैल हाफिज़े कुरआन है, उस ने कहा तो उस से बढ़ कर कौन मिलेगा। ज़रूर आप शादी ठहरा दीजिये। इमाम साहब ने कहा सिर्फ इतनी बात है कि मज़हबन "यहूदी'' है वह निहायत बरहम हुआ। और कहा सुबहानल्लाह आप यहूदी से रिश्ता दारी करने की राये देते हैं। इमाम साहब ने फरमाया क्या हुआ। जो पैगम्बरे ख़ुदा ने यहूदी को (तुम्हारे ऐतिक़ाद के मवाफिक़) दामाद बनाया तो तुम को क्या उज़्र है'' ख़ुदा की कुदरत इतनी सी बात से उसको तंबीह हो गई, और अपने अक़ीदे से तौबा की।

वेसाल:

आप के सन वेसाल में इख़्तिलाफ है। एक रिवायत में है कि शाबान १५० हि. में विसाल हुआ दूसरी रिवायत रजब १५० हि. की है और तीसरी १५३ हि. की भी मिलती है कि आप बगदाद के

क़ैदख़ना में जाँबहक़ हुये और कहा जाता है कि जेल ख़ाना में वफात नहीं हुई। बल्कि आप को ज़हर का प्याला दिया गया, और आप ने पीने से ऐराज़ किया और फरमाया कि मुझे क़त्ल पर आमादा न करो। उसके बाद आप के मुँह में जबरन प्याला उंडेल दिया गया। और यह भी कहा जाता है कि मंसूर की बारगाह में थे, और वहीं वफात हुई, हसन बिन अमारा ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई, पचास हज़ार अफराद ने नमाज़ मे शिरकत की। मंसूर ने आप की क़ब्र पर जा कर नमाज़ पढ़ी।

आप की क़ब्र बगदाद में है, लोग क़ब्र की ज़ियारत करते और बरकत हासिल करते हैं।

मज़हबे हनफी की मक़बूलियत:

हनफी मज़हब कूफा में पैदा हुआ, इमाम आज़म अबू हनीफा रहमतुल्लाह अलैह की वफात के बाद उलमा ने उसे बगदाद में पढ़ा पढ़ाया, और वहीं से उसकी आम इशाअत हुई, इब्तिदाअन इराक़ के मुख़्तलिफ शहरों में फैला, फिर दुनिया के दूर दराज़ शहरों और मुलकों में उसकी इशाअत हुई। और थोड़े ही अरसा में बगदाद, मिस्र, शाम, बल्ख़, बुख़ारा, फरगाना, फारस, हिंदुस्तान, सिध और यमन के अतराफ व जवानिब में फैल गया।

मुख़्तलिफ ममालिक के औलियाये केरमा ने जो मुजाहिदा के ऐतेबार से साबित क़दम और मैदाने मुशाहिदा के शहसवार थे मज़हबे हनफी की पैरवी की, जैसे इबराहीम बिन अदहम, शफीक़ बल्ख़ी, मारूफ करख़ी, बायज़ीद बुस्तामी, फुज़ैल बिन अयाज़, दाऊद ताई, अबू हामिद लफाफ, ख़ल्फ बिन अय्यूब, अब्दुल्लाह बिन मुबारक, वकी बिन जर्राह, अबू बकर वराकद्व, हकीम तिर्मिज़ी,

हकीम अबुल क़ासिम समरक़न्दी, अबू सलमान दार्मी, यहिया इब्ने माज़ राज़ी।

सलासिले तरीक़त का एक जम्मे गफीर मज़हबे हनफी का पैरूकार है, अहले तरीक़त के चंद अस्माये गेरामी पेशे ख़िदमत हैं, मौलाना रूम, शैख़ फरीदुद्दीन अत्तार, हकीम सुनाई गज़नवी शैख़ अली हजवेरी मारूफ बह दाता गंज, शैख़ ज़ैनुद्दीन अबी तायबादी, अमीरे क़ौम सजिस्तानी, अमीर हुसैनी, ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती, मख़्दूम अशरफ जहांगीर समनानी।

अज़ीमुल मर्तबत मुहद्देसीन ने भी आप के मज़हब की तक़लीद की है जैसे वकी बिन जर्राह और यहिया बिन माज़।

जमहूर फुक़्हा और मुतकल्लेमीन जो आफताबे हिदायत और माहताबे वरायत शुमार किये जाते थे उन्हों ने भी इमाम साहब रहमतुल्लाह अलैह के मज़हब को इख़्तेयार किया। जिन का तज़किरा तवालत के ख़ौफ से छोड़ दिया जाता है।

क़दीम व जदीद मोतमद फुक़्हा भी आप के मज़हब की तरफ गये हैं, और शोयूख़ मोतज़ला जो कुव्वते जद्ल व इस्तिदलाल में माहिर थे, उन्हों ने भी फुरूआत दीन में आप की तक़लीद को पसंद किया, और ख़ाकसारी के साथ आप से इस्तिफादा किया, चुनान्चे हाफिज़ वक़ारुल्लाह और मुतरज़ी वगैरह की तालीफात उस पर बतौरे सोबूत पेश की जा सकती हैं। उरफा फुक़्हा, रोउसा, और आम्मये मुस्लिमीन का तबक़ा आप का मुत्तबे है, जिन के अफराद अक्सर ममालिक में बिखरे हुये हैं। और तमाम लोग आप की नेक नामी के मोतरिफ हैं।

इमाम मालिक बिन अनस रहमतुल्लाह अलैह:

नाम व नसब : मालिक बिन अनस बिन मालिक बिन अबी आमिर बिन अमर बिन आरिस बिन गैमान या उसमान बिन जसील बिन अमर बिन ज़ी अस्बह अस्जी मदनी।

विलादत:

आप के सन विलादत में इख़्तिलाफ है, शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह ने लिखा है कि इमाम मालिक ९३ हि. में पैदा हुये, चुनान्चे यहिया बिन बकर ने जो इमाम मालिक के बड़े शागिर्दों में से हैं। यही बयान किया है, इमाम मालिक शिकमे मादर में मामूल से ज़ादा रहे, इस मुद्दत को बाज़ दो साल बयान यिा है, और बाज़ ने तीन साल कहा है। आप की विलादत और वफात दोनों मदीना मुनव्वरा में हुई।

हुलिया:

दराज़ क़द, सफेद रंग मायल बज़र्दी, कुशादा चश्म, ख़ूबसूरत बलंद बीनी, उन की पेशानी में सर के बाल कमी के साथ थे, ऐसे शख़्स को अरबी में अस्ला कहते हैं, हज़रत उमर और हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हुमा भी अस्ला थे, दाढ़ी गंजान और इस क़द्र लम्बी थी कि सीना तक पहुंचती थी और मोंछ के उन बालों के जो लबों के किनारे पर होते थे, कतरवाते थे, और मुंडवाने को मकरूह समझते थे फरमाते मोंछ का मुंढवाना मुस्ला में दाख़िल है, और मोंडवाना भी आप की वाफिर, और उस में जनाब अमीरुल मुमिनीन अमर रज़ि अल्लाहु अन्हू की पैरवी करते थे, चुनान्चे मनकूल है कि :

انه رضی اللّٰه عنه كَانَ يَفْتِلُ سَبَلَتَهٗ اَذَا اَهَمَّهٗ أَمْرٌ

यानी हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु अन्हू को जब कोई अमरे अज़ीम पेश आता था तो अपनी मोंछ पर पेच दिया करते थे, और आप अद्न के बने हुये कपड़े पहेनते थे, अद्न मुल्के शाम का एक शहर है।

इमाम अबू हनीफा रहमतुल्लाह अलैह ने आप को उन के बचपन के ज़माने में देखा था, एक मर्तबा इमाम अबू हनीफा से लोगों ने पूछा कि मदीना के नौख़ेज़ लड़कों को आप ने कैसा पाया? तो इर्शाद फरमाया कि अगर उन में से कोई बलंदी हासिल करेगा तो मालिक।

नीज़ फरमाया कि मैंने मदीना में इल्म बिखरा हुआ देखा है, अगर कोई उसको जमा करेगा तो यही लड़का (मालिक बिन अनस)

इब्ने गानम कहते हैं कि बाद में मैंने इमाम अबू हनीफा की यह बात इमाम मालिक को सुनाई तो उन्हों ने कहा कि अबू हनीफा ने सच कहा कि मैंने उन को देखा है, वह बड़ी समझ बूझ के आदमी थे।

तालीम व तर्बियत:

इमाम साहब दीनी और इल्मी घराने में परवान चढ़े, अहादीस की रिवायत मदीना में आम थी, इमाम साहब ने बचपन ही में तलबे हदीस की इब्तिदा की ख़ुद बयान करते हैं कि मैंने अपनी वालिदा से कहा कि मै। भी इल्म हासिल करने जाउंगा। उन्हों ने कहा क आओ मैं तुम को इल्मे दीन का लिबास पहना दूँ, चुनान्चे उन्हों ने मुझे (सयाबे मुशमरा) और उटंगे कपड़े पहनाये और सर पर सियाह लम्बी टोपी रख कर ऊपर से अमामा बाँधा और कहा:

اذهب الی ربیعة فتعلم من ادبه قبل علمه۔

रबीया के पास जाओ और इल्म से पहले उन से अदब सीखों और एक रिवायत में हैं कि वालिदा ने कहा:

اذهب الآن فاكتب

अब जाओ (हदीस) लिखो।

रबीआ बिन अबू अब्दुर्रहमान जलीलुल क़द्र ताबई और मदीना मुनव्वरा के मोसल्लमा फक़्हा में से हैं हज़रत अनस बिन मालिक और हज़रत सायब बिन यज़ीद से अहादीस सुना करते थे, और उन से सुफियान सौरी, और इमाम मालिक बिन अनस ने रिवायत की है, और १३६ हि. में वफात पाई।

और उन के अलावा बहुत से शोयूख़ व असातज़ा हैं जिन से आप ने इल्मे दीन हासिल किया, उन की तादाद बहुत ज़्यादा है, जिन में से चंद के अस्माये ग्रामी पेशे ख़िदमत है:

नाफे मौला बिन उमर, मुहम्मद बिन मुस्लिम बिन शहाब ज़ोहरी, आमिर बिन अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर, नईम बिन अब्दुल्लाह अल महमर, ज़ैद बिन असलम, हमीदुत्तवील, सईद मक़बरी, अबू हाज़िम सलमा बिन दीनार, शरीक बिन अब्दुल्लाह बिन अबू नुमैर, सालेह बिन कैसान, सफवान बिन सलीम, अबुज़्ज़म्माद, मुहम्मद बिन मुन्कदिर, अब्द बिन दीनार वगैरह।

हज़रत इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह को इल्म तलब करने की ख़्वहिश बल्कि हिर्स बहुत ज़्यादा थी, हालाँकि तालिब इल्मी में मुफ्लिसी का यह आलम था कि मकान की छत तोड़ कर उस की कड़ियों को बेच कर किताबें वगैरह ख़रीदते थे, मगर उसके बाद आप पर दौलत का दरवाज़ा खुल गया, और कसरत से बड़ी बड़ी फोतूहात शुरु हो गईं।

मसनदे दर्स व इफ्ता:

इमाम साहब ने अपने ज़ौक़ व शौक़ और मेहनत व ज़ेहानत की बिना पर १७ साल की उम्र में ही दीनी उलूम व फुनून में दर्जये कमाल हासिल कर लिया था, और उसी उम्र में आप ने अपने

असातज़ा और शोयूख़ की इजाज़त पर मसनदे दर्स व इफ्ता संभाली, फरमाते हैं:

وما افتيتُ حتى شهدلى سبعون انى اهل لذٰلك ۔

जब तक १७ उमला ने मेरे बारे में शहादत नहीं दी कि इफ्ता का अहल हूँ मैंने फतवा नहीं दिया।

उस वक़्त उनके कई शोयूख़ ज़िंदा थे, और उन की हयात में इमाम मालिक फतवा दिया करते थे, अय्यूब सख़्तयानी कहते हैं कि मैं हज़रत नाफे की ज़िंदगी में मदीना गया, उस वक़्त इमाम मालिक का हल्क़ये दर्स व इफ्ता क़ायम था, इब्ने मुंज़र का बयान है कि नाफे और ज़ैद बिन असलम की ज़िंदगी ही में इमाम मालिक फतवा देने लगे थे, बक़ौल मुसइब इमाम मालिक का हल्क़ये दर्स नाफे की ज़िंदगी ही में उन के हल्क़ये दर्स से बड़ा था, शोबा का भी यही क़ौल है।

इमाम साहब की मजलिस दर्स व इफ्ता दो जगह मुनअक़िद होती थी। एक मदीना मुनव्वरा मस्जिद नबवी में, और दूसरा मजलिस वादी अक़ीक़ के मुक़ामे जुर्फ में जहाँ आप का ज़ाती मकान था।

तलामेज़ा: हज़रत इमाम की दर्सगाह इल्म से फैज़याफ्ता तलामेज़ा की तादाद बहुत ज़्यादा है, क़ाज़ी अयाज़ रहमतुल्लाह अलैह ने तर्तीबुल मदारिक में उन का नाम हुरूफे तहज्जी के ऐतेबार से जमा किये हैं, जिन की तादाद तेरा सौ से ज़ायद है।

साहबे अकमाल तहरीर फरमाते हैं कि इमाम मालिक के फख़्र के लिए यही काफी है कि इमाम शाफई जैसी हस्ती का शुमार उन के शागिर्दों में होता है, अलावा बरीं मुहम्मद बिन इबराहीम, इब्ने दीनार, अबू हाशिम और अब्दुल अज़ीज़ बिन अबू हाज़िम भी उन के शागिर्दों में हैं।

उनके अलावा उनके शागिर्दों में इब्ने मुईन बन ईसा, यहिया बिन यहिया, अब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा, क़ालीनी और अब्दुल्लाह बिन वहब जैसे हज़रात भी जो इमाम बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, अहमद बिन हंबल, और यहिया बिन मुईन जैसे आइम्मये मुहद्देसीन के उसताज़ हैं।

हज़रत इमाम से इतने हज़रात ने रिवायत की जिन का शुमार बहुत मुश्किल है, उन के शागिर्द जिस मुल्क में जा कर ऐक़ामत पज़ीर हुये वह पूरे मुल्क के इमाम और यगानये रोज़गार साबित हुये।

इल्मियत: सुफियान इब्ने अैनिया और अब्दुर्रज़्ज़ाक़ सनआनी का क़ौल है कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हू ने रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह हदीस रिवायत की:

يـوشك الـنـاس ان يضربوا اكباد الا بل فلا يجدون عالما اعلم من عالم المدينة۔

अन्क़रीब लोग (तलबे इल्म के लिए) सफर करेंगे तो मदीना के आलिम से बड़ा आलिम नहीं पायेंगे।

सुफियान बिन अैनिया फरमाते हैं कि उस आलिमे मदीना से मुराद हज़रत इमाम मालिक (रहमतुल्लाह अलैह) हैं।

हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया:

لولا مالك وابن عيينة لذهب علم الحجاز۔

अगर इमाम मालिक और इब्ने अैनिया न होते तो हेजाज़ का इल्म ख़त्म हो जाता।

नीज़ इमाम शाफई से मनक़ूल है:

اذا ذكر العلماء فمالك النجم۔

जब उलमा का तज़केरा होता तो इमाम मालिक (नज्म) सितारों की तरह होते(यानी जब उलमा का तज़्केरा होता तो हज़रत इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह का नाम सरे फिरिस्त होता)

इमाम शाफई का यह क़ौल हज़रत इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह के बारे में इस बात की तरफ मुशीर है कि आप अहले इल्म व फिक्ह में अव्वल दर्जा के हामिल हैं:

عبدالرحمن بن مهدی یقول سفیان الثوری امام فی الحدیث

ولیس بامام فی السنة والا وزاعی امام فی السنة ولیس بامام فی

الحدیث ومالك امام فیهما جمعیاً۔

अब्दुर्रहमान इब्ने मेहदी फरमाते हैं सुफियान सौरी इमामे हदीस हैं, इमामे फिक्ह नहीं और औज़ाई इमाम फिक्ह हैं, इमाम हदीस नहीं और हज़रत इमाम मालिक बिन अनस दोनों फन के इमाम हैं।

यहिया बिन सईद ने कहा कि हदीस का सब से ज़्यादा सही जानकार इमाम मालिक से बढ़ कर कोई नहीं।

یقول (الشافعی)اذا جاء الحدیث عن مالك فاشد دیدیك به ۔

इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलै फरमाते हैं कि जब तुम्हें इमाम मालिक से कोई रिवायत मिले तो उसे मज़बूती से पकड़ लो (कुबूल कर लो)

محمد بن ادریس الشافعی یقول قالت لی عمتی ونحن بمکة

رأیت فی هذه اللیلة عجبافقلت لهاماهوا قالت رأیت کان قائلا یقول

مات اللیلة اعلم اهل الارض ،قال الشافعی فحسبنا ذلك فاذا هویوم

مات مالك بن انس (رضی الله عنه)۔

इमाम मुहम्मद बिन इदरीस शाफई कहते हैं कि हम मक्का में थे कि मेरी फूफी ने कहा कि मैं ने आज रात एक तअज्जुब ख़ेज़ वाक़ेआ ख़्वाब में देखा, मैंने कहा वह क्या, उन्हों ने फरमाया कि कोई कह रहा है कि आज रात दुनिया का सब से बड़ा आलिम फौत हो गया। इमाम शाफई ने फरमाया कि हम ने उसका हिसाब व तुख़्मीना लगाया तो वह इमाम मालिक बिन अनस की वफात का दिन था।

وقال ابو عبداللّٰه رأیت کان النبی ﷺ فی المسجد قاعدا

والناس حوله ومالك قائم بین یدیه وبین یدی رسول الله ﷺ مسك

فهو یأخذ منه قبضة قبضة وید فعهاالی مالك ومالك ید رهاعلی الناس

قال مطرف فاولت ذلك العلم واتباع السنة۔

अबू अब्दुल्लाह फरमाते हैं कि मैंने ख़्वाब में देखा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मस्जिद में तशरीफ फरमा हैं। आप के इर्द गिर्द बहुत सारे लोग मौजूद हैं, और इमाम मालिक आप के सामने खड़े हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने मुश्क रखा हुआ है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस से मुट्ठियाँ भर भर कर इमाम मालिक को दे रहे हैं, और इमाम मालिक लोगों पर डाल रहे हैं। मुत्तरिफ ने कहा कि मैंने इस ख़्वाब की ताबीर इल्म और इत्तिबाये सुन्नत से ली है।

ऐहतेराम हीदस रसूल :मुहद्दिसे कबीर हज़रत ज़हब बिन ख़ालिद ने फरमाया कि मश्रिक़ व मग्रिब में हज़रत इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह से ज़ादा हदीसे रसूल का अमानतदार कोई नहीं।

इमाम शाफई ने फरमाया कि मेरे नज़दीक इमाम मालिक से ज़्यादा अमानत दार कोई नहीं। आप हदीसे रसूल की ताज़ीम और

उसके ऐहतेराम की गायत दर्जा कोशिश करते थे।

इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह जब हदीस बयान करना चाहते तो पहले वज़ू करते, दाढ़ी में कंघा लगाते और वक़ार व हैबत के साथ मसनद नशीं होते फिर हदीस बयान करते, लोगों ने जब आप से इस क़द्र ऐहतेयात और ऐहतेमाम का सबब दरयाफ्त किया तो आप ने इर्शाद फरमाया:

احب ان اعظم حديث رسول الله ﷺ ولا احدث به الاعلى طهارة متمكنا۔

मैं हदीसे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ताज़ीम को महबूब रखता हूँ और बा तहारत बैठ कर हदीस बयान करता हूँ।

रास्ते में खड़े हो कर या जल्दी बाज़ी में हदीसे रसूल बयान करना पसंद करते और फरमाते:

احب ان اتفهم ماحدث به عن رسول الله ﷺ ۔

मुझे यह ज़्यादा पसंद है कि जो हदीसे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बयान करूँ तो समझ कर बयान करूँ।

एम मर्तबा का वाक़या है कि हज़रत अबू हाज़िम हदीस बयान कर रहे थे, इमाम मालिक उन के पास से गुज़रे और उन की मजलिस में शरीक नहीं हुये और आगे बढ़ गये, वजह दरयाफ्त करने पर इर्शाद फरमाया कि बैठने की जगह नहीं थी, और खड़े हो कर हदीस सुनना मैंने ख़िलाफे अदब समझा इस लिए आगे बैठ गया।

इमामे मालिक तिल्मीज़े रशीद हज़रत इब्ने हबीब से मनकूल है कि रिवायते हदीस के वक़्त एक ही नशिस्त में जलसयें तदरीस को तमाम फरमाते और अज़ राहे ज़ानो न बदला करते, इस

सिलसिले में कमाले ऐहतियात मलहूज़ रखते हैं।

अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक से रिवायत है कि एक रोज़ हज़रत इमाम मालिक की ख़िदमत में हाज़िर था, और आप हदीस की रिवायत फरमा रहे थे, कि इसी नशिस्त में बिच्छू ने आप को दस या ग्यारह मर्तबा डंक मारा लेकिन आप इसी तरह रिवायते हदीस में मशगूल रहे शिद्दते तकलीफ से बार बार चेहरे का रंग मुतगय्यर होता और बदन ज़र्द होता, जब लोग हदीस सुन कर अलाहिदा हुये, मैं ने अर्ज़ किया, हज़ूर ! आज आप को क्या हो गया था कि चेहरये मुबारक का रंग मुतगय्यर होता दिखाई दे रहा था? आप ने फरमाया कि यह अमर इज़हारे जुरअत या अपनी आज़माइश पर सब्र की वजह से नहीं था बल्कि यह महज़ हदीसे रसूल की ताज़ीम व अदब की वजह से थ।

ख़लीफा हारून रशीद अपने दौरे हुकूमत में रौज़ये नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत की गर्ज़ से हाज़िर हुआ, हज़रत इमामे मालिक उसकी मुलाक़ात की लिए तशरीफ ले गये, जब मुलाक़ात और गुफ्त व शुनीद के बाद इमाम साहब ने वापसी का इरादा फरमाया और बाहर निकलना चाहा तो हारून रशीद ने कहा कि ऐ मुसलमानों के पेशवा बराये करम रोज़ाना हमारे पास तशरीफ लायें ताकि हमारे फरज़ंद मामून और अमीन आप से समाअते हदीस करें। हज़रत ने कराहत से उसके चेहरे की तरफ देखा और इर्शाद फरमाया:

مه ياامير المومنين لاتضع فى عزة شئى رفعه اللّٰه العلم يوتى ولا يوتىٰ۔

ठहरिये ! ऐ अमीरुल मुमिनीन आप ने उस चीज़ की इज़्ज़त

बाक़ी नहीं रखी जिसे अल्लाह ने बलंदी दी, इल्म एक ऐसी चीज़ है कि लोग उसकी तरफ जाते न कि इल्म लोगों की तरफ जाता है।

हारून रशीद ने इंसाफ से कहा:

صدقت ایها الشیخ کان هذا هفوة منی فاسترهاعلی۔

ऐ शैख़ आप ने सच कहा यह मेरी लगज़िश थी माफ कर दिया जाये।

उसके बाद अमीन व मामून को हज़रत इमाम के दौलत ख़ाने पर भेजा, आप ने उन दोनों को भी दीगर तलबा के साथ बैठा कर दर्स देते और इमाम साहब ख़ुद बा हैबत और पुर जलाल रहते ताकि सलातीन और उमरा ख़ौफ खायें।

जिस तरह आप हदीसे रसूल का निहायत ही अदब व ऐहतेराम करते इसी तरह शहरे रसूल का भी ऐहतेराम मलहूज़ रखते, मज़कूर है कि आप पीरी की वजह से निहायत ही ज़ईफ हो गये थे उसके बावजूद भी मदीना मुनव्वरा में कभी सवारी पर सवार नहीं होते, और फरमाते:

لاارکب فی مدینة فیها جثة رسول ﷺ مدفونة۔

मैं उस मदीना में सवारी नहीं करुंगा जिस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जिस्मे अक़्दस मदफून है।

हज़रत इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि हज़रत इमाम मालिक के दौलत कदे पर चंद ख़ुरासानी घोड़े और मिस्री ख़च्चर बंधे हुये थे। जिन से बेहतर मैंने कभी नहीं देखा, तअज्जुब ख़ेज़ लेहजे में मैंने आप से दरयाफ्त किया कि यह घोड़े और ख़च्चर क्या भलाई पहुंचा सकते हैं। फरमाया ऐ अबू अब्दुल्लाह यह सब मेरी तरफ से हदीयतन कुबूल कीजिये, मैंने अर्ज़ किया उन में से एक अपनी सवारी के लिए महफूज़ कर लें, आप ने फरमाया

ख़ुदा वंदे कुद्दूस से शर्म करता हूँ कि जिस सर ज़मीन पर तुर्बते रसूले मुअज़्ज़म हो वहाँ मैं सवार हूँ।

आप शहरे रसूल की मुहब्बत और ताज़ीम में हद दर्जा कोशाँ रहते और हरगिज़ मदीना मुनव्वरा से बाहर तशरीफ ना लेजाते, हाँ एक मर्तबा हज बैतुल्लाह के लिए तशरीफ ले गये, और बस।

आप मदीना मुनव्वरा में उस मकान में रहते थे, जहाँ अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद सुकूनत फरमाते, और मस्जिद में उस जगह बैठते जहाँ हज़रत उमर फारूक़ तशरीफ फरमाते रज़ि अल्लाहु अन्हुमा।

वफात: यहिया बिन यहिया बयान करते हैं कि इमाम मालिक की वफात के वक़्त आख़िरी मुलाक़ात के लिए एक सौ तीस फुक़हा व मुहद्देसीन हाज़िर थे और सब इसी इंतेज़ार में खड़े थे कि शायद इस आख़िरी वक़्त में इमाम की कोई नज़रे करम मुझ पर पड़ जाये और मेरी दुनिया व आख़िरत सुधर जाये इस हालत में इमाम मालिक ने आँखें खोलीं और यहिया बिन यहिया को मुख़ातब कर के फरमाया:

الحمد للّٰہ الذی اضحک و ابکیٰ وامات واحییٰ

उस ख़ुदाये अज़्ज़ व जल के लिए हम्द है जिस ने हमें कभी ख़ुशी दे कर हंसाया और कभी गम दे कर रुलाया। हम उसी के हुक्म से ज़िंदा रहे। और उसी के हुक्म पर जान कुरबान करते हैं। उसके बाद फरमाया अब मौत सर पर खड़ी है। और ख़ुदावंदा से मुलाक़ात का वक़्त क़रीब है, तो लोगों ने अर्ज़ किया। ऐ इमाम इस वक़्त आप का क्या हाल है ? इर्शाद फरमाया अल हम्दु लिल्लाह मैं अवलिया अल्लाह की सोहबत की वजह से बहुत ख़ुश हूँ, और मैं अहले इल्म ही को औलिया समझता हूँ, याद रखो हज़राते अंबियाये

केराम अलैहिमुस्सलाम के बाद अल्लाह तअला को उलमा से ज़्यादा अज़ीज़ कोई मख़्लूक़ नहीं है। उलमा अंबिया अलैहिमुस्सलाम के वारिस हैं और मैं बेहद मसरूर और ख़ुश दिल हूँ कि मेरी तमाम तर उमर दीन की तहसील और तालीम में बसर हुई। सुन लो! मैं किसी मुसलमान को शरीअत का एक मसअला बता कर उसके आमाल की इस्लाह कर देना किसी आलिम से एक मसअला पूछ कर अपने आमाल की इस्लाह कर लेना एक सौ हज नफ्ल और एक सौ जेहाद से बेहतर समझता हूँ उसके बाद आप की आवाज़ धीमी पड़ गई। और चंद मिनट के बाद विसाल होगया।

انا لله وانا اليه راجعون

१४ रबीउल अव्वल १७९ हि. तारीख़े विसाल है, और आख़िरी आरामगाह मदीना मुनव्वरा के क़ब्रस्तान जन्नतुल बक़ी में है।

इमाम अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाह अलैह

नाम व नस्ब : अहमद बिन मुहम्मद बिन हंबल बिन हिलाल बिन असद बिन इदरीस बिन अब्दुल्लाह बिन हय्यान बिन अब्दुल्लाह बिन अनस बिन औफ बिन क़ासित माज़िन बिन शैबान बिन ज़ोहल बिन सालबा बिन अकातिया बिन सअब बिन अकातिया बिन सअब बिन अल बिन बक्र बिन वायल बिन क़ासित बिन हनब बिन अफसा बिन वअमा बिन जदीला बिन असद बिन रबीआ बिन नज़ार बिन माद बिन अदनान बिन उद बिन औदा बिन अल हमीसअ बिन हमल इब्न अन्नबत बिन क़ैज़ार बिन इसमाईल इब्न अल ख़लील अलैहिस्सलाम।

कुन्नियत: अबू अब्दुल्ला

अल्क़ाब: शैख़ुल इस्लाम, इमामुस्सुन्नह।

निस्बत: शीबानी, ज़ोहली बसरी, मरवज़ी, बगदादी, निस्बतें हैं।

आप ख़ालिस अरबियुन्नस्ल थे, ख़ानदानी ताअल्लुक़ क़बीलये बनी शीबान से है जो क़बीलये इबनी अदनान की शाख़ से मिलता है, यह ख़ानदान अपनी शुजाअत, दिलेरी और गैरत व हम्मियत के सिलसिला में हमेशा से मशहूर था, आप के दादा "हंबल" ओमयुयों के अहद में सरख़स के गवरनर और वालिद माजिद "मुहम्मद" एक बहादुर सिपाही थे, जिन का तीस साल की उम्र में इंतेक़ाल हो गया, जबकि उस वक़्त हज़रत इमाम अहमद सिर्फ तीन साल के थे, परवरिश का पूरा बार वालिदा माजिदा के सर रहा। दुनियवी शान व शौकत के साथ इल्मी ऐतेबार से भी यह ख़ानदान मुम्ताज़ था। और उस में मुतअद्दिद उलमा, फोज़ला, मुक़र्रेरीन, शोअरा, और माहिरीने अंसाब गुज़रे हैं।

विलादत : इमाम अहमद १६४ हि. में पैदा हुये, एक रिवायत में है कि रबीउल अव्वल का महीना था, और एक रिवायत रबीउल आख़िर की भी मिलती है।

इमाम साहब शिक्मे मादर ही में थे कि उन की वालिदा माजिदा मरु से बगदाद तशरीफ ले आईं। यहीं इमाम साहब की विलादत हुई, एक रिवायत यह भी है कि वह मरु में पैदा हुये और शीर ख़्वारगी के ज़माने में बगदाद आये।

तहसीले इल्म: इमाम साहब की तालीम का सिलसिला बचपन ही में शुरू हो गया था, चार साल की उमर में कुरआन मजीद हिफ्ज़ कर लिया था, सात साल के हुये तो हदीस पढ़ना शुरू कर दिया। और पंद्रह सोला साल की उमर में बाक़ायदा तलबे इल्म में मशगूल हो गये।

इमाम साहब अरसा तक बगदाद में रह कर वहाँ के मशाइख़ से समा करते रहे, उसके बाद उन्हों ने दूसरे मशहूर मराकिज़े हदीस, कूफा, बसरा, मक्का, मदीना, यमन, शाम और जज़ीरा वगैरह का रुख़ किया।

अपनी तालीमी असफार के बारे में इमाम साहब ख़ुद इर्शाद फरमाते हैं कि मैंने १७९ हि. में अली इब्ने हाशिम बिन बुरीद सी हदीस का समा किया। यह मेरी हदीस की तालीम का पहला साल था, और इसी साल हशीम बिन बशीर से पहले समा किया। इसी साल अब्दुल्लाह बिन मुबारक आख़िरी बार बगदाद आये थे मैं उन की मजलिसे दर्स में गया तो मालूम हुआ कि वह तरसूस चले गये हैं, उन का इंतेक़ाल १८१ हि. में हुआ। उस वक़्त मेरी उम्र सोलाह साल की थी, और हशीम बिन बशीर के इंतेक़ाल के वक़्त मैं बीस साल का था, उसी साल हम्माद बिन ज़ाहिद बिन ज़ैद और मालिक बिन अनस का इंतेक़ाल हुआ, हशीम की मजलिसे दर्स में १८३ हि. तक रहा, इसी साल उन का इंतेक़ाल हुआ, मैंने उन से किताबुल हज लिखी जो एक हज़ार अहादीस पर मुश्तमिल थी, नीज़ किताबुल क़ज़ा, बाज़ तफासीर, और मुख़्तसर किताबें लिखीं, इसी तरह तक़्रीबन तीन हज़ार अहादीस जमा कीं, हशीम मुझ को किताबुल जनाइज़ का इमला करा रहे थे, इसी दरमियान हम्माद बिन ज़ैद के इंतेक़ाल की ख़बर पहुंची, हशीम के इंतेक़ाल से पहले मैंने अब्दुल मोमिन इबन अब्दुल्लाह बिन ख़ालिद ईसा से हदीस का समा किया, १८२ हि. में रे के अलिम अबू मुजाहिद अली बिन मुजाहिद काबुली से हदीस की रिवायत की, इसी साल मुल्क रे का सफर किया १८६, में बसरा का पहला सफर किया, और १८७ हि. में मक्का मुकर्रमा सुफियान बिन अैनिया की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, हमारे मक्का

पहुंचने से कुछ पहले फुज़ैल इब्ने अयाज़ का इंतेक़ाल हो चुका था, इसी साल मैंने पहला हज किया, इबराहीम बिन सअद से भी हदीसें लिखी, और उन के पीछे कई बार नमाज़ अदा की। १८६ के आख़िरी अशरा में इबादान गया, उसी साल मोतमर इब्ने सुलेमान के यहाँ गया, १९८ हि. में अब्दुर्रज़्ज़ाक़ के पास था कि वहीं सुफियान बिन अैनिया, अब्दुर्रहमान बिन मेहदी और यहिया बिन सईद क़तान की वफात की ख़बर मिली, १९४ में बसरा जा कर सुलेमान बिन हर्ब, अबुन्नोमान आज़िम, और अबू उमर हौज़ी से हदीस का समा किया, अगर मेरे पास पचास दिरहम होते तो मैं जरीर बिन अब्दुल मजीद के यहाँ रे जाता, मेरे बाज़ साथी गये, मगर मैं नहीं जा सका, कूफा गया तो ऐसे मकान में क़याम पज़ीर हुआ जिस में ईंट का तकिया था, वहाँ मुझे बुख़ार आ गया तो वालिदा के पास वापस चला आया, कूफा का यह सफर वालिदा की इजाज़त के बिगैर हुआ था, पाँच बार बसरा गया, पहली बार जब १८६ हि. में गया और मोतमर बिन सुलेमान से समा किया, दूसरी बार १९० हि. में गया, तीसरी बार १९४ हि. में गया, उस वक़्त गुन्दर का इन्तेक़ाल हो चुका था, तो यहिया बिन साद के यहाँ छ: माह क़याम किया, उन के यहाँ से वासित में यज़ीद बिन हारून की ख़िदमत में पहुंचा, जब उनको मालूम हुआ कि मैं यज़ीद बिन हारून के यहाँ गया हूँ तो कहा कि वासित में यज़ीद बिन हारून के यहाँ क्या करेंगे। जिस का मतलब यह है कि हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल इल्म में यज़ीद बिन हारून से बढ़े हुये हैं।

इल्मी वारफ्तगी : जिस वक़्त हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल का इल्मी शोहरा हो चुका था हर ख़ास व आम के दरमियान इमाम की हैसियत से मारूफ थे, उस वक़्त भी तहसीले इल्म में कोशाँ

रहते, जिस का अंदाज़ा दर्ज ज़ेल सुतूर से किया जा सकता है।

एक मर्तबा एक शख़्स ने देखा कि हज़रत इमाम हाथ में दवात लिये किसी मुहद्दिस की दरसगाह में जा रहे हैं, उस ने कहा कि अबू अब्दुल्लाह! आप इल्म के उस बलंद मक़ाम पर फायज़ हैं, और इमामुल मुस्लिमीन हैं, फिर भी पढ़ने जा रहे हैं? इमाम साहब ने जवाब दिया:

مع المحبرة الى مقبرة

यानी दवात व क़लम के साथ मेरा तअल्लुक़ क़ब्रस्तान तक रहेगा।

मुहम्मद बिन इस्माईल साओ का बयान है कि दोनों जूते हाथ में थे, और दौड़ते हुये जा रहे थे, मेरे वालिद ने बढ़ कर उन के कपड़े पकड़ लिए, और पूछा कि अबू अब्दुल्लाह कब तक तालिब इल्मी करोगे? आप को उन बच्चों के साथ दौड़ते हुये शर्म भी मालूम नहीं होती? इमाम साहब ने सिर्फ इतना जवाब दिया और चलते बने :

الى الموت

मरते दम तक।

इमाम शाफई से तअल्लुक़ :

इमाम अहमद बिन हंबल के असातज़ा में सब से ज़्यादा मुम्ताज़ और बा कमाल शख़्सियत इमाम शाफई की है, आप ने उन से फिक़्ह के अलावा हदीस और अंसाब का इल्म भी सीखा इमाम शाफई जब तक बगदाद में रहे इमाम अहमद बिन हंबल उनके दर्स से वाबस्ता रहे।

इब्ने ख़ल्क़ान ने लिखा है :

अहमद बिन हंबल इमाम शाफई के तलामेज़ा और ख़्वास मे

से थे, वह उन के साथ बराबर रहे, यहाँ तक कि इमाम शाफई मिस्र चले गये, और अहमद बिन हंबल के बारे में इमाम शाफई ने कहा कि मैं बगदाद से इस हाल में निकला कि अहमद बिन हंबल से ज़्यादा मुत्तक़ी और उन से बड़ा फक़ीह नहीं छोड़ा।

इमाम अबू यूसुफ से तलम्मुज़ :

बगदाद के मुहद्दिसीन में हज़रत इमाम यूसुफ का एक बलंद मक़ाम है, इमाम अहमद बिन हंबल को आप से भी शर्फे तलम्मुज़ हासिल है। सब से पहले आप ने इमाम अबू यूसुफ की ख़िदमत में हाज़िर हो कर उन से हदीसें लिखीं।

जैसा कि आप खुद फरमाते हैं:

اول من كتبت عنه الحديث ابو يوسف.

सब से पहले मैं ने जिस से हदीस लिखी वह अबू यूसुफ हैं।

मजलिसे दर्स :

हज़रत इमाम ने उलूम व फुनून की तहसील के बाद दर्स देना शुरू कर दिया। २०४ में आप ने चालिस साल की उम्र पूरी कर के मंसबे तदरीस व इफ्ता पर फायज़ हो गये और पूरे हिज़्म व ऐहतेयात के साथ ख़िदमत में मसरूफ हो गये।

आप की मजलिसे दर्स बड़ी बावक़ार, संजीदा और शइस्ता होती थी, लोग तन गोश रहते, और मज़ाक़ व मज़ाह का कोई कलेमा ज़बान पर न लाते, अबू उबैदा बयान करते हैं कि मैं इमाम अबू यूसुफ मुहम्मद बिन हसन शैबानी, यहिया बिन सईद और अब्दुर्रहमान बिन मेहदी वगैरह बाकमाल मुहद्दिसीन व फुक़्हा के दर्स में शरीक रहा हूँ, लेकिन इमाम अहमद की तरह मुझ पर किसी की हैबत व दहशत तारी नहीं हुई उन की मजलिस निहायत बारोब और पुर वक़ार होती थी, दर्स में हाज़िरीन और शेरका का जम्मे

गफीर होता था, उलमाये सेयर का बयान है कि पाँच पाँच हज़ार की तादाद में लोग शरीक होते थे।

ज़ोहद व तक़्वा :

ज़ोहद व तक़्वा और दुनिया से बे तअल्लुक़ी इमाम साहब का शआर था, ख़ुर्द व नोश और मामलाते ज़िंदगी में सादगी और किफायत शआरी मद्दे नज़र रखते, ओमरा और हुक्काम से नज़रें मिलाते और न उन के तवाइफ कुबूल करते।

मुहम्मद बिन मूसा फरमाते हैं कि हसन बिन हब्दुल अज़ीज़ के पास एक लाख दीनार मीरास में पहुंचे, उन्हों ने एक एक हज़ार की तीन थैलियाँ इमाम अहमद बिन हंबल की ख़िदमत में भेज दीं, और इल्तेजा की कि उन्हें कुबूल फरमा कर अपने अहल व अयाल पर ख़र्च कीजिये क्योंकि यह हलाल मीरास से पेश कर राह हूँ। इमाम साहब ने वह दीनार कुबूल न फरमाये। और यह कह कर वापस कर दिया कि मुझे उन की ज़रूरत नहीं, मेरे पास बक़द्रे ज़रूरत ख़ुदा का दिया हुआ माल मौजूद है।

इमाम शाफई फरमाते हैं कि मैं बगदाद से रवाना हुआ तो मैंने अपने पीछे किसी को अहमद बिन हंबल से बढ़ कर मुत्तक़ी ज़ोहद व वरा वाला फक़ीह और आलिम नहीं छोड़ा।

तसानीफ :

इमाम साहब रहमतुल्लाह अलैह की तसानीफ कई एक हैं, जिन में से चंद के अलावा सब ना पैद हैं, यह तसानीफ अहादीस व आसार पर मुश्तमिल हैं, ज़ेल में चंद किताबें लिखी जाती हैं।

किताबुल मुसनद, किताबुत्तफ्सीर, किताबुन्नासिख़ वल मन्सूख़, किताबुत्तारीख़, किताब हदीस शोबा, किताबुल मुकद्दम, वल मुअख़्ख़र फिल कुरआन, किताब जवाबुल कुरआन, किताबुल मनासिकुल कबीर

किताबुल मनासिकुस्सगीर वगैरह।

इन मुस्तक़िल तसानीफ के अलावा आप के फतावा और मसाइल भी किताबी सूरत में मौजूद हैं।

फिक़्ह व इजतिहाद :

इमाम अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाह अलैह चार मशहूर अइम्मये इस्लाम में से चौथे इमाम की हैसियत से मारूफ हैं। और फिक़्ह व इजतेहाद में आला क़ाबिलियत के हामिल भी। आप के इजतिहादी मसाइल पर चौथी सदी जिहरी से अब तक मुसलमानों की एक जमात अमल पैरा है जो हंबली कहलाती है।

फिक़्ह व फतावा में आप ने पाँच उसूल इख़्तयार फराये, अव्वल नुसूसे क़तइय्या, नस की मौजूदगी में किसी के क़ौल को कुबूल नहीं करते, सानी सहाबा रज़ि अल्लाहु अन्हुम के फतावा जब सहाबा का क़ौल मिल जाता है और उसके मुक़ाबिल दूसरे सहाबा का क़ौल नहीं है तो उस पर अमल करते, और दूसरे के अमल, राये और क़यास की तरफ नज़र न करते, सालिस जब सहाबा के अक़्वाल मुख़्तलिफ होते हैं तो उन में जो क़ौल किताब व सुन्नत से ज़्यादा क़रीब होता है तो उसे कुबूल करते हैं, और अगर मुख़्तालिफ अक़्वाल में तरजीही सूरत नज़र आती तो इख़्तिलाफ बयान कर देते हैं और किसी क़ौल को तरजीह नहीं देते। राबे जब तीनों मज़कूरह उसूल में कोई सराहत नहीं मिलती तो हदीसे मुर्सल और हदीसे ज़ईफ को लेते और क़यास को तर्क कर देते हैं। ख़ामिस जब किसी मस्अले में नस, क़ौले सहाबी, और मुर्सल व ज़ईफ हदीस नहीं मिलती तो ऐसी सूरत में क़यास पर अमल करते।

तदवीने फतावा हंबली :

इमाम साहब की हयाते मुबारका में उन के फतावा के जमा व

तर्तीब का कोई काम अमल में नहीं आया। बल्कि उन के बाद उन के तलामेज़ा ने जमा व तदवीन का काम शुरू किया, जिन में ख़ास तौर से अबू बकर ख़लाल का नाम आत है, उन्हों ने अपनी किताब 'अल जामिउल कबीर' में तक़रीबन बीस जिल्दों में हज़रत इमाम मौसूफ के मसाइल व फतावा मदून किये, और जैश बिन संदी ने दो जिल्दों में आप के नादिर मसाइल जमा किये।

इमाम साहब के तलामेज़ा में हफिज़ असरम अस्कानी (मुतवफ्फा २२६ हि.) ने:

"كتاب السنن فى الفقه على مذهب احمد و شواهد ه من الحديث"

के नाम से एक किताब तर्तीब दी।

अबू बकर बिन मुहम्मद फक़ीह मरोज़ी बगदादी (मुतफ्फा २७५ हि.) जिन का शुमार अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाह अलैह के अजल असहाब में है, एक मुद्दत तक इमाम साहब के ख़िदमत में रह कर उन से इल्म व अमल के बेश बहा ख़ज़ाइन हासिल करते रहे, किताबुस्सुनन बिशवाहिदल हदीस के नाम से एक किताब रक़म फरमाई।

फित्नये ख़ल्क़े क़ुरआन:

अब्बासी दौरे हुकूमत में फलसफा व कलाम ने ज़ोर पकड़ा और दानिशवर तबक़ा गैर ज़रूरी मबाहिस में उलझ कर मुख़्तलिफ जमातों में मुनक़सिम हो गया। जिस की वजह से अरबों के मज़ाक़ तबा में तबदीली वाक़े हो गई और वह भी दीने हनीफ पर अक़ीदा रखने के बजाये लायानी मोशगाफियों की बदौलत उस फिर्क़ा ने इस्लाम के अंदर नये नये और बेबुनियाद मसाइल पैदा किये। और बातिल अफकार व ख़्यालात की तरवीज व इशाअत में हमा तन मसरूफ हो गये, उन्हीं मसाइल में से एक मस्अला 'ख़ल्क़े क़ुरआन' का भी था, जो एक फितनये अज़ीम बन कर मुहद्दिसीन, उलमा

और दीगर सादा लौह मुसलमानों पर बर्क़ तपाँ की तरह गिर पड़ा।

हारून रशीद के दौर में इस अक़ीदे के पैरू कार बहुत कम थे, ओर जो थे वह भी अपने अक़ाइद का इज़हार नहीं करते, एक शख़्स के बारे में जब ख़लीफा को मालूम हुआ कि वह इस अक़ीदे का हामी है तो ख़लीफा ने क़सम खाली कि वह मुझे मिल गया तो उसे ज़रूर क़त्ल कर दुंगा। लेकिन हारून रशीद के बाद जब मामून, मोतसिम और वासिक़ का दौर आया तो उस दौर में 'ख़ल्क़े कुरआन' का मस्अला उभर के सामने आ गया। और बाज़ाब्ता उस की तरवीज में सरकारी तआउन हासिल हुआ। मामून ने दीगर ममालिक से फलसफा और मंतिक़ की किताबें जमा कीं और उन का तर्जमा करा कर इशाअत कराया। जिस की वजह से तरह तरह के शुबहात रुनुमा होने लगे, और मुहद्दिसीन उलमा उन का दिफा करते रहे 'फित्नये ख़ल्क़े कुरआन' का अस्ल हीरो क़ाज़ी अहमद बिन अबी दाऊद थ जो अपने क़बिलियत और लियाक़त की वजह से मामून के दिल व दिमाग पर छा गया था और उस मस्अला में गोया मामून, क़ाज़ी अहमद बिन अबी दाऊ का गुलाम था, मामून उसी के इशारे पर चलता और दूसरे उलमा की गुफ्तगू सुनने को रवादार नहीं होता, जिस की पादाश में ख़लीफा मामून ने उस मुस्तक़िल तहरीर की सूरत में जारी किया।

अल्लामा जलालुद्दीन सियूती रहमतुल्लाह अलैह तारीख़ुल ख़ुलफा में तहरीर फरमाते हैं:

२१२ हि. में मामून ने ऐलान किया कि क़ुरआन मजीद मख़्लूक है (और जो शख़्स कुरआन को मख़्लूक़ नहीं तसलीम करेगा उसे सख़्त सज़ा दी जायेगी) और उसी के साथ यह भी ऐलान शामिल था कि हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहुल करीम, हज़रत अबू बकर और हज़रत उमर फारूक़ से अफज़ल हैं।(रज़ि अल्लाहु अन्हुम)

उन अक़ाइद की इशाअत की वजह से लोगों में नफरत की लहर दौड़ गई, और क़रीब था कि शहर में एक फित्ना बरपा हो जाये, उस माहौल के पेशे नज़र मामून अपने फासिद इरादे में कामियाब नहीं हुआ, आख़िर उसे अपने उन अक़ाइद की अदमे कुबूलियत पर सब्र करना पड़ा।

२१५ हि. में मामून ने जंग के इरादे से रूम का सफर किया, और सलतनते रूम के दो क़िलों 'कुरव अन्वाह' और 'माजिदह' को फतह कर लिया, वहाँ से दमिश्क की तरफ रवाना हुआ, और २१६ हि. में रूम पर हमला आवर हुआ और मुतअद्दिद क़िलाजात फतह करने के बाद दमिश्क़ वापस हो कर मिस्र रवाना हो गया, अब्बासी हुक्मरानों में यह पहला शख़्स था जो मिस्र में दाख़िल हुआ, मिस्र से २१७ हि. में फिर दमिश्क़ आया और वहाँ से रूम की तरफ आज़िमे सफर हुआ।

२१८ हि. में मामून ने 'अक़ीदये ख़ल्के कुरआन' के सिलसिले में लोगों की आज़माइश करनी चाही कि लोगों ने कुरआन का मख़्लूक़ होना तसलीम किया या नहीं, इस सिलसिले में बगदाद में अपने नायब इसहाक़बिन इबराहीम ख़ुज़ाई के पास उलमाये बगदाद के बारे में लिखा कि ख़ल्के कुरआन से मुतअल्लिक़ उलमाये बगदाद की रायें तलब की जायें और मुझे उन की इत्तिला दी जाये।

इसहाक़ ने उलमा और मुहद्दिसीन की एक जमात के दरमियान मामून का ख़त पढ़ा, जिस में यह हज़रात हाज़िर थे, अहमद बिन हंबल, बशीर बिन अबू वलीद कुंदी, अबू हस्सान अज़्ज़ेयादी, अली बिन अबी मक़ातिल, फज़ल आलम, उबैदुल्लाह बिन उमर अल क़वारीरी, अली बिन अल जअद, सज्जादा, ज़याल बिन अल हैसम, कुतैबा बिन सईद, सअदविया अल वास्ता, इसहाक़ बिन अबी इसराई, इब्ने अलैह अल अकबर, मुहम्मद बिन नूह अल अजली, यहिया बिन अब्दुर्रहमान अल उमरी, अूब नस्र अल तमार,

अबू मुअम्मर अल क़तई, मुहम्मद बिन हातिम बिन मैमून वग़ैरह।

ख़त सुन कर हाज़िरीन ने जवाबात दिये, लेकिन उन जवाबात से इक़रार व इनकार का पता नहीं चलता, यह रंग देख कर इसहाक़ ने फरदन फरदन पूछना शुरू किया, पहले बश्र बिन वलीद से दरयाफ्त किया कि इस मस्अले में आप की क्या राये हैं? जवाब दिया कि अमीरुल मुमिनीन के बारे में मैं तो बहुत दिनों से जानता हूँ कि वह उस अक़ीदा का हामिल है। इसहाक़ ने कहा कि तुम इस बारे में क्या राये क़ायम करते हो? उन्हों ने कहा कि कुरआन अल्लाह का अलाम है, इसहाक़ ने कहा मैं यह नहीं पूछ रहा हूँ यह बताओ कि कुरआन मख़्लूक़ है या गैर मख़्लूक़? उन्हों ने कहा कि जो मैंने तुम से कह दिया उस से बेहतर नहीं कह सकता, मेरे और मेरे अमीरुल मुमिनीन के दरमियान यह मुआहिदा हो चुका है कि मैं अब उस मस्अले पर गुफ्तगू नहीं करूंगा।

उस के बाद वह अली बिन अबी मक़ातिल की तरफ मुतवज्जह हुआ और दरयाफ्त किया कि आप उस सिलसिला में क्या कहते हैं? उन्हों ने जवाब दिया कि कुरआन अल्लाह का कलाम है। और अमीरुल मुमिनीन इस सिलसिला में भी हुक्म नाफिज़ करें हम उसे मानने के लिए तैयार हैं। अबू हस्सान अज़्ज़यादी ने भी कुछ इस तरह का जवाब दिया। फिर अहमद बिन हंबल की तरफ मुतवज्जह और दरयाफ्त किया आप की क्या राये है? फरमाया "कलामुल्लाह" अल्लाह का कलाम है। फिर इसहाक़ ने दरयाफ्त किया कि मख़्लूक़ है या गैर मख़्लूक़? आप ने जवाबन इर्शाद फरमाया 'वह अल्लाह का कलाम है' और उस से ज़्यादा कुछ नहीं कहता। इसी तरह बाक़ी हज़रत का जायज़ा लिया और जवाबात क़लमबंद कर लिए।

इब्नुल बुका अल अकबर ने कहा कि मैं कहता हूँ कि कुरआन मजऊल और मुहद्दिस है उसके बारे में नस वारिद है,

इसहाक़ बिन इबराहीम ने कहा जो चीज़ मजऊल है वह हादिस है, इब्नुल बुका ने कहा हाँ इसहाक़ ने कहा तो कुरआन मख़्लूक़ है? इब्नुल बुका ने कहा कि मैं उसे मख़्लूक़ नहीं कहता।

इसहाक़ ने उन के जवाबात लिख कर मामून के पास भेज दिये, मामून ने इसहाक़ को लिखा कि तुम्हारा इरसाल कर्दा नविश्ता दस्तयाब हुआ जिस के ज़रिये यह मालूम हुआ कि जो लोग ख़ुद को अहले क़िब्ला जानते हैं और सरवरी के ख़्वाहिश्मंद हैं। वह लोग न अहले क़िब्ला हैं और न साहबे शर्फ हैं, तो जो लोग ख़ल्क़े कुरआन के क़ायल नहीं तुम उन्हें फत्वा देने और रिवायत करने से रोक दो, और यह भी लिखा कि बशर ने जो बात तुम से कही वह किज़्ब और झूठ है, अमीरुल मुमिनीन और उसके दरमियान किसी क़िस्म का मुआहिदा नहीं हुआ है, और यह सब को मालूम है कि अमीरुल मुमिनीन का ऐतेक़ाद कलमये इख़्लास है, और वह अक़ीदये ख़ल्क़े कुरआन के हामी हैं। लिहाज़ा तुम उन्हें बुलाओ अगर वह अपने अक़ीदा से तौबा कर रहे हैं तो ऐलान करें, अगर शिर्क पर मुसिर हैं, और अपने कुफ्र व इल्हाद की वजह से कुरआन को मख़्लूक़ नहीं तसलीम कर रहे हैं तो उन की गर्दन उड़ा दो और सर मेरे पास भेज दो। और इबराहीम बिन मेहदी के मुतअल्लिक़ यह करो कि पहले उन का इम्तिहान लो अगर वह कुबूल कर लेते हैं तो ठीक है वरना उन की भी गर्दन उड़ा दो उसके अलावा मामून ने दीगर उलमा के बारे में बहुत कुछ सख़्त व सुस्त लिखा और हिक़ारत आमेज़ तनक़ीदें भी की, नीज़ इमाम अहमद बिन हंबल के बारे में लिखा कि अहमद से कह दो कि अमीरुल मुमिनीन उसके जाहिलाना अक़ीदे से वाक़िफ हैं और वह जान ले कि उस से उसका ख़म्याज़ा ज़रूर भुगतना पड़ेगा।

मामून ने इसहाक़ को यह भी लिखा कि जिन लोगों के नाम मैं ने लिखा है, अगर वह लोग अपने शिर्क से बाज़ न आयें तो

बशर बिन वलीद और इब्ने मेहदी के अलावा सब का सर क़लम कर दो, हुक्म नामा सुन कर सिवाये अहमद बिन हंबल, सज्जादा, मुहम्मद बिन नूह, और क़वारीरी के सारे उलमा ने कुरआन का मख़्लूक़ होना तसलीम कर लिया, इसहाक़ ने उन चारों हज़रात को क़ैद में डलवा दिया। फिर दूसरे दिन उस ने क़ैद ख़ाना में जा कर क़ैद की हालत में सवालात किये, सज्जादा ने फौरन इक़रार कर लिया, ज़्यादा इसरार करने पर क़वारीरी भी ख़ल्क़े कुरआन के क़ायल हो गये, अब दो हज़रात अहमद बिन हंबल और मुहम्मद बिन नूह बच रहे उन लोगों को इसहाक़ ने मामून के पास रूम रवाना कर दिया।

फिर मामून को यह ख़बर मिली कि जिन लोगों ने अक़ीदयें ख़ल्क़े कुरआन का इक़रार किया है, जबरन किया है, उस पर मामून को गुस्सा आया और यह इसहाक़ को लिखा कि जिन लोगों ने जबरन अक़ीदा कुबूल किया है अहमद बिन हंबल और मुहम्मद बिन नूह के साथ उन्हें भी रवाना किया जाये। इसहाक़ ने सब को रवाना कर दिया, मगर अभी यह लोग रास्ते ही में थे कि मामून का इंतेक़ाल हो गया, अल्लाह ने उन पर लुत्फ व मेहरबानी फरमाई और उन्हें एक बड़ी मुसीबत से निजात बख़्शी।

मामून मरते मरते यह वसीयत कर गया कि मेरे बाद आने वाला ख़लीफा लोगों से अक़ीदये ख़ल्क़े कुरआन का इक़रार कराये, और क़ाज़ी अहमद बिन अबी दाऊद को अपने दरबार से वाबस्ता रखे, मामून के बाद ज़ुमामे हुकूमत रजब २१८ हि. में मुतसिम बिल्लाह ने संभाली, और उस ने मामून की भर पूर तक़्लीद की और अपनी पूरी उम्र उस्अला ख़ल्क़े कुरआन के सिलसिला में लोगों के इम्तिहान व आज़माइश में गुज़ार दी, उस ने अपने मक़बूज़ा ममालिक में यह हुक्मनामा भेजवा दिया कि लोग कुरआन को मख़्लूक़ होने का इक़रार करें और मोअल मैन को यह हुक्म सादिर

हुआ कि बच्चों के ज़हन में यह जागुज़ी कर दीं कि कुरआन मख़्लूक़ है, इस मस्अले को ले कर लोगों ने मोतसिम के हाथों बड़ी बड़ी मशक़्क़तें झेलीं और बहुत से उलमा उसके हाथों तहे तेग किये गये, और २२० हि. में हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल को उसी सिलसिला में दुर्रे भी खाने पड़े जिस का तज़केरा मुख़्तसरन दर्जे ज़ेल है।

मोतसिम ने हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल को बगदाद तलब किया, और मस्अला ख़ल्क़े कुरआन पर बहस व मुबाहिसा की एक मजलिस मुनाज़रा मुनअक़िद की, हज़रत इमाम के मुक़ाबले में अब्दुर्रहमान बिन इसहाक़ क़ाज़ी अहमद बिन दाऊद और दूसरे उलमा को खड़ा किया मुनाज़रा तीन दिन तक मुसलसल चलता रहा, (हज़रत इमाम के दलाइल व बराहीन के सामने सब को आजिज़ और ख़ामूश होना पड़ा) चौथे दिन भी मुनाज़ेरा की महफिल गर्म थी कि इसी दौरान मोतसिम ने दुर्रह ज़नी का हुक्म दिया, हुक्म पाते ही जल्लादों ने कोड़े लगाना शुरू कर दिया, शिद्दत तकलीफ से गश खा कर ज़मीन पर गिर पड़े, उस के बावजूद भी आप ने हक़ से रुगरदानी न की, और अख़ीर दम तक अज़ीमत व सेबात क़दमी पर कार बंद रहे, रिहाई के बाद अपने घर तशरीफ ले गये, क़ैद के मुद्दत कुल २८ माह थी, सहत याबी के बाद जुमा और जमात में हाज़िरी देते, साथ ही साथ फतवा देना और दर्से हदीस का शुग्ल भी जारी रखा।

मैमून बिन असबा का बयान है कि मैं बगदाद में मौजूद था कि शोर व गुल की आवाज़ सुनाई दी, लोगों से पूछने पर पता चला कि इमाम अहमद बिन हंबल का इम्तिहान हो रहा है, चुनान्चे मैं भी वहाँ जा पहुंचा, जब इमाम साहब को पहला कोड़ा मारा गया तो आप ने कहा :

بسم اللّٰہ

जब दूसरा कोड़ा मारा गया तो कहा:

لاحول ولاقوۃ الّا باللّٰہ

तीसरे कोड़े पर कहा:

القرآن کلام اللّٰہ غیر مخلوق

कुरआन अल्लाह का कलाम है मख़्लूक़ नहीं, चौथे कोड़े पर कहा:

لایُصیبُنا الّا ماکتب اللّٰہ لنا

अल्लाह ने जितनी मुसीबत हमारे लिए लिख दी है उतनी ही मिलेगी, बिल आख़िर इमाम साहब को २९ कोड़े लगाये गये, आप ने कपड़े का ऐज़ार बंद डाल रखा था, जो कोड़े की ज़र्ब से कट गया और पायजामा नाफ के नीचे आ गया, आप ने आसमान की तरफ नज़र उठाई और होंटों को हरकत दी पायजामा नीचे सरकने के बजाये नाफ के ऊपर गया। एक हफ्ते के बाद मैंने ख़िदमते इमाम में हाज़िरी दी और अर्ज़ किया कि आज़माइश के वक़्त आप ने आसमान की तरफ देख कर होंटों को हरकत दी थी तो उस वक़्त क्या पढ़ा था? फरमाया कि बारगाहे रब्बे करीम में अर्ज़ किया कि :

اللھم انی اسئلك باسمك الذی ملأت به العرش ان کنت تعلم انی علی الصواب فلاتھتك لی ستراـ

ऐ मौला मैं तेरे नाम के वसीले से दुआ करता हूँ जिस से तूने अर्श को पुर कर रखा है, अगर तेरे नज़दीक मैं राहे रास्त पर हूँ तो मेरा परदा फाश न होने पाये।

१९ रबीउल अव्वल बरोज़ दो शंबा २२७हि. में मोतसिम का इन्तेक़ाल हुआ, उसके बाद हुकूमत की बाग दोर उसके बेटे वासिक़ बिल्लाह के हाथ में आई, वह भी अपने पेशरौ हुक्मरानों के नक़्शे क़दम पर चलता रहा। और मस्अला ख़ल्क़े कुरआन में काफी सख़्ती

बरती, बहुत से मुहद्दिसीन और उलमाये हक़ को क़ैद व बंद और क़त्ल की सज़ायें दीं, मशहूर साहबे अज़ीमत बुज़ुर्ग अहमद बिन नसर ख़ुज़ाई को तख़्ताये दार पर चढ़ाया लेकिन इमाम साहब के साथ कोई सख़्ती नहीं की, अलबत्ता उन को जला वतन कर दिया, इमाम साहब उसके ज़मानये ख़िलाफत भर रुपोश रहे, जुमा और जमात के लिए भी बाहर नहीं निकलते थे।

माहे ज़िल हिज्जा २३२ हि. में वासिक़ बिल्लाह के इन्तेक़ाल के बाद मुतवक्किल ख़लीफा हुआ उस ने उन बातिल ख़्यालात व ऐतेक़ादात की जो किताब सुन्नत के ख़िलाफ थे रोक दिया और हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल को इब्तिला व आज़माइश से निजात दिलवाई, और ऐज़ाज़ व इकराम का फरमान भी जारी किया, और साथ ही साथ यह भी ऐलान कर दिया कि क़ुरआन मजीद नहीं, उसके ख़िलाफत से मोतज़ला का उरूज ज़वाल में तबदील हो गया, और उस फित्ने का असर बिल्कुल ख़त्म हो गया।

उस अज़ीम आज़माइश में हज़रत इमाम मौसूफ ने जिस हिम्मत व जवाँमर्दी का सुबूत पेश किया कि उनकी शोहरत व मक़्बूलियत में और इज़ाफा हो गया, और दीने हक़ का परचम सर बलंद रहा, दूसरे कारहाये ख़ैर में इमाम साहब के और दूसरे लोग भी शरीक मिलते हैं। लेकिन उस मैदान में आप यक्का व तन्हा नज़र आते हैं। आप के दीगर साथियों ने तक़िया का सहारा ले कर अपनी जान बख़्शी कर वाली, लेकिन आप ने तक़िया का सहारा लेना मुनासिब नहीं समझा, बल्कि अज़ीमत को फौक़ियत दी, आप के चचा इसहाक जो आप की रिहाई के लिए कोशाँ थे, उन्हों ने आप से कहा कि तुम्हारे साथी छोड़ गये। और तुम क़ैद व बंद की मशक़्क़त झेल रहे हो, आप ने फरमाया चचा जान! जाहिल लोग तो ख़ैर नावाक़िफ ही हैं, लेकिन जब उलमा तक़िया का सहारा लें तो आख़िर हक़ कैसे वाज़ेह होगा, इस जवाब पर आप के चचा इसहाक़

को ला जवाब होना पड़ा। तीन जाबिर व ज़ालिम हुक्मरानों के ज़ुल्म व तशद्दुद और गैर मामूली मुश्किलात के बावजूद अज़ीमत व पामर्दी में कोई फर्क़ नहीं आया और न कोई चीज़ आप को हक़ गोई व बेबाकी से रोक सकी।

मशहूर मुहद्दिस और हज़रत इमाम बुख़ारी के उसताज़ अली बिन मदीनी इर्शाद फरमाते है:

ان اللّٰه اعز هذا الدين برجلين ليس لهما ثالث ابو بكر الصديق يوم الردة واحمد بن حنبل يوم المحنة۔

अल्लाह ने इस दीन को दो आदमियों के ज़रिया ऐज़ाज़ बख़्शा, उन दो के अलावा तीसरे को यह मंसब हासिल नहीं, इरतिदाद के मौक़े से हज़रत अबू बकर के ज़रिया और फित्नये ख़ल्क़े क़ुरआन के सिलसिले में आज़माइश के मौक़े पर हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल के ज़रिया।

वफात:

आप के साहबज़ादे अब्दुल्लाह का बयान है कि १२ रबीउल अव्वल २४१ हि. बरोज़ जुमा चाश्त के वक़्त या रात में आप की रूह क़फ्से उनसुरी से परवाज़ कर गई, उस वक़्त उम्र शरीफ ७७ साल की थी। इन्ना लिल्लाहि व इल्ला इलैहि राजिऊन।

१७ रबीउल अव्वल, माहे रजब रबीउल आख़िर भी विसाल की तारीख़ और महीने बताये जाते हैं। अमीर बगदाद मुहम्मद बिन ताहिर ने नमाज़ के बाद शुरका का अंदाज़ा लगाया तो तक़रीबन आठ लाख मर्द और साठ हज़ार औरतें थीं। बाबे हर्ब के मक़्बरा में दफन किया गया। मज़ार मुबार अब तक ज़ियारत गाहे ख़लाइक़ है।

☆☆☆